झंकार

[दूसरे महायुद्ध (१९३९) से १९५० तक की
प्रसिद्ध उर्दू कविताओं का संकलन]

सम्पादक

रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी

इलाहाबाद.

सेक्रेटरी
हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

पहली बार, 1951
क़ीमत तीन रुपया

नया हिन्द प्रेस,
१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

नई शायरी

हिन्दी पढ़े लिखे लोगों में जितनी बेचैनी और जितना शौक़ उर्दू कविता और उर्दू साहित्य पढ़ने के लिये आज पैदा हो गया है उतना शायद पहले कभी नहीं हुआ था. हिन्दी वालों पर यह बात खुलती जा रही है कि जिस खड़ी बोली की बुनियाद पर वह हिन्दी का महल खड़ा करना चाहते हैं उस खड़ी बोली का सब से जगमगाता हुआ रूप उर्दू वालों ही की रचनाओं में नज़र आता है. संस्कृत शब्दों के सवाल को अगर हम थोड़ी देर के लिये भुलादें तो लगभग पचास हज़ार शुद्ध हिन्दी (तद्भव और देशज) शब्द और अनगिनत हिन्दी मुहावरे और कहावतें या टक्साली हिन्दी की जैसी मिसालें और जितना ज़्यादा प्रयोग हम उर्दू में पाते हैं उतना हिन्दी में भी नहीं पाते. लोग यह समझने लगे हैं कि हिन्दी जानने के लिये उर्दू जानना ज़रूरी हो गया है. आज अगर सलीक़े से उर्दू कविता और उर्दू गद्य के वह हिस्से चुने जायँ जो सहल और टक्साली हैं तो चार पाँच सौ किताबें नागरी हर्फ़ों में छपी जा सकती हैं. इसके अलावा उर्दू शायरी और नस्र में जो अरबी फ़ारसी शब्द आ जाते हैं उनमें भी आधे ऐसे हैं बल्कि आधे से बहुत ज़्यादा जो अनपढ़ आदमी भी समझते और बोलते हैं. उर्दू के ज़रिये हिन्दी किस आसानी से आ जाती है इसकी मिसाल पंजाब के वह दस लाख शरनार्थी हैं जिनकी अपनी भाशा पंजाबी है लेकिन जिन्होंने उर्दू सीख ली थी. यह दस लाख मर्द, औरत, बूढ़े, बच्चे और हर हैसियत और पेशे वाले पंजाबी हमारे सूबे में आते, ही, जहाँ तक बोली का सवाल है, हम लोगों में घुल मिल गए. हमारे सूबे के अनपढ़ आदमी और ख़ाली हिन्दी जानने वाले सब के सब उनकी पूरी बात चीत समझने लगे और यह लोग भी हमारी पूरी बात चीत

समझने लगे. अगर यह लोग हिन्दी सीखते, पन्त, निराला, प्रसाद और महादेवी वर्मा की हिन्दी से या हिन्दी के मशहूर गद्य लेखकों से, तो यह किसी तरह किताबी हिन्दी बोलकर अपना काम हमारे सूबे में चला नहीं सकते थे. हिन्दी वह नहीं है जो हिन्दी के बड़े साहित्यकार लिखते हैं और जो किताबों में दफ़्न है. असली हिन्दी साहित्य वह है जो किसी लिपि में लिखा जाय लेकिन जिसे पढ़कर वह लोग जिनकी मातृ भाशा हिन्दी नहीं है, उन करोड़ों आदमियों से बेखटके हर तरह की बात चीत कर सकें जिनकी मातृ भाशा हिन्दी है.

इसमें शक नहीं कि उर्दू साहित्य में ठेठ हिन्दी का ठाठ नज़र आते हुए भी कई अवसर पर कठिन अरबी फ़ारसी शब्द आ जाते हैं और कहीं कहीं ख़याल और बयान का साँचा भी फ़ारसी का सा होता है. लेकिन इसके ख़िलाफ़ उर्दू साहित्यकारों में शुरू से एक बग़ावत का भाव भी काम करता रहा है. इधर एक और बात हो गई है जिसने उर्दू को बोल चाल की भाशा से बहुत क़रीब कर दिया है. वह बात यह थी की उर्दू साहित्य-कारों ने मुट्ठी भर उर्दू पढ़े लिखे लोगों से ही अपना नाता रिशता बनाए रखना नहीं चाहा बल्कि उन करोड़ों किसानों, मज़दूरों और दूसरे श्रम जीवियों तक भी अपनी आवाज़ को पहुँचा देना चाहा जो शीन क़ाफ़ और ऐन ग़ैन वाली उर्दू न बोलते हैं न समझते हैं. भाशा, भाव, विचार और विशय उर्दू साहित्य में बदलने लगे. आए दिन की ज़िन्दगी उर्दू साहित्य में उजागर होने लगी. यहाँ भी उर्दू हिन्दी से बाज़ी मार ले गई. हिन्दी में सादा और टक्साली बोली बहुत अटक अटक कर आई और आ रही है. उर्दू में देखते देखते काया पलट हो गई. उर्दू के जन्म दिन ही से सादगी के लिये एक हुमक उर्दू साहित्यकारों में थी ही और अगरचे कई अवसरों पर अरबी फ़ारसी उर्दू का दामन पकड़ लेती थीं लेकिन उर्दू साहित्यकार रह रह कर किताबी उर्दू फ़ारसी से अपना दामन छुड़ाने की भी कोशिश करते रहे. बोल चाल की अरबी फ़ारसी की तो बिलकुल वही हैसियत है जो शुद्ध हिन्दी शब्दों और मुहावरों की है.

तीन

हाँ तो पिछले दस बारह बरसों से हिन्दुस्तान के जीवन में क्रान्तिकारी शक्तियाँ काम करने लगीं और साथ ही उर्दू शायरी ने भी करवट बदली. सन् २० से लगभग चौथाई सदी तक के ज़माने को गांधी युग कहा जा सकता है. इस पचीस बरस में जहाँ तक साहित्य की उपज का सवाल है गांधी युग और गांधीवाद लगभग बंजर साबित हुए. इस युग में बहुत जानदार साहित्य पैदा हुआ लेकिन गांधी युग गांधीवाद के सहारे नहीं पैदा हुआ. सन् ३० से दस बारह बरस तक हमारे साहित्य में गांधीवाद सुधारवाद के रूप में कुछ कुछ काम करता हुआ नज़र आता है. लेकिन इसके बाद से जो सबसे अधिक शक्ति और प्रेरना भारतीय साहित्य में ज़ोर मारती हुई दिखाई देती है वह साम्यवाद और रूस की क्रान्ति है. अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ इसके बाद ही देश भर में स्थापित हो गया जिसका पहला इजलास लखनऊ में अब से १५ सोलह बरस पहले हुआ प्रेमचन्द के नेतृत्व और सभापतित्व में, दूसरा इजलास कलकत्ते में हुआ जिसके सभापति संसार के महान साहित्यकार श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर थे.

यह बात विचारनीय है कि लगभग इसी ज़माने में कांग्रेस के सभापति के आसन से श्री जवाहर लाल नेहरू और उनके बाद नेता जी सुभाश चन्द्र बोस जो भाशन देते हैं उसमें रूस की क्रान्ति और साम्यवाद के आदर्श आद्योपान्त सराहे जाते हैं. गांधी जी अन्तिम समय तक देश के एक मात्र नेता ज़रूर रहे लेकिन गांधीवाद का एक मात्र सहारा हमारे दिल और दिमाग़ नहीं ले सकते थे. सन'३६ में जब दूसरा महायुद्ध छिड़ा, उसके पहले ही से एक क्रान्तिकारी यथार्थवाद और आदर्शवाद हमारे साहित्य में नई तड़प और नया उभार पैदा करने लगा था. वर्गों का संघर्श और महाजनी प्रथा या जागीरदारी प्रथा के विरोध में जनता की प्रतिक्रिया हमारे साहित्य में प्रकट होने लगी थी. किसानों का व्यवसायिक जीवन, उनका घरेलू जीवन, उनकी ज़िन्दगी की वीरानी, उनके बच्चों औरतों की दारुन दशा, मज़दूरों के कारख़ानों, चालों और कुटुम्बों का विवरनपूर्न चित्रन,

मध्यवर्ग के जीवन की नाज़ुक हालतें, उच्चवर्ग के जीवन की ऐसी तस्वीरें जिनसे दूसरे वर्ग वालों पर जो ज़ुल्म हो रहे हैं वह उजागर हो जायँ या उनकी तरफ़ तीव्र संकेत होते रहें, यह सब बातें एक बाढ़ की तरह भारतीय साहित्य में आने लगीं. जब दूसरा महायुद्ध सन् ३६ में शुरू हो गया तो हमारे साहित्य का मैदान और भी फैल गया और उसमें एक विश्व चेतना आने लगी. अब हमारे साहित्यकार संसार भर की प्रगतिशील शक्तियों से अपना सम्बन्ध समझने लगे और संसार की हानिकारक और घातक शक्तियों से अपना विरोध समझने लगे. साथ ही साथ भारत के जनसाधारन का जीवन और उसका ऐतिहासिक महत्व और गहरे रूप से हमारे साहित्य में प्रकट होने लगा. कितनी कविताएँ और कहानियाँ रूस, मार्क्स, लेनिन, चीन, कोरिया, नाज़ीवाद, साम्राज्यवाद और समाजवाद ऐसे विशयों पर रची जाने लगीं. किसी विशेश सीमित और साधारन विशय पर भी अगर कोई रचना इस ज़माने में की गई तो उसमें विश्व शक्तियों के संघर्श की अनेक झलकियाँ नज़र आ जाती थीं.

एक भारी नतीजा इस सब का यह हुआ कि हिन्दी और उर्दू की शब्दावली बहुत तेज़ी से सादगी की तरफ़ और जनता की बोल चाल की तरफ़ (जहाँ उर्दू हिन्दी का झगड़ा कभी नहीं रहा है) बढ़ने लगी. उर्दू शायरों की रचनाएँ हिन्दी पत्र पत्रिकाओं में छपने लगीं और हिन्दी वालों ने उन्हें सौ फ़ीसदी हिन्दी समझा और माना. कुछ हिन्दी लेखकों की रचनाएँ उर्दू वालों में प्रचलित हो गईं. आज एक ऐसी सूरत पैदा हो गई है कि दरजनों उर्दू और हिन्दी लेखकों की रचनाओं में तमीज़ करना मुशकिल हो गया है कि इन्हें उर्दू रचना समझा जाय या हिन्दी रचना. बात यह है कि जब उर्दू या हिन्दी के साहित्यकार ऐसी रचनाएँ करेंगे जिन्हें करोड़ों अनपढ़ लोगों तक पहुँचना है और जिन्हें करोड़ों दिलों में घर करना है तो किताबी उर्दू या हिन्दी से काम चल ही नहीं सकता. यह बात भी प्रकट होने लगी कि अच्छे साहित्यकारों और अनपढ़ों की बोल चाल

में भी चकाचौंध पैदा कर देने वाली जगमगाहट पैदा की जा सकती है और उच्च साहित्यिकता या अलंकार कूट कूट कर भरा जा सकता है. भाशा गँवारों की और चमत्कार कालिदास का, दोनों का एक ही रचना में मौजूद होना मुमकिन हो गया है. यह बात भी ज़ाहिर हुई कि जिसे हम अब तक ऊँची साहित्यिक भाशा समझते थे उसमें थका देने वाला एक सुरा पन आ जाता था और जनता की भाशा में अनगिनत अद्भुत शैलियों के पैदा होने की सम्भावना रहती है. आप इस किताब की एक एक कविता को जब पढ़ेंगे तो देखेंगे कि उर्दू शायरों ने ऐसी भाशा लिखी है जो आपके लिये हिन्दी शायरों की रचनाओं से सौ गुना ज़्यादा सहज, सुगम, सुन्दर और उच्च कोटि की है. इन कविताओं में जितने शब्दों को आप न समझेंगे उनके अर्थ देदिये गए हैं. लेकिन इन से कहीं अधिक शब्द हिन्दी कविताओं में ऐसे आते हैं जिन्हें आप नहीं समझते और तब भी वह कविताएँ न इन कविताओं की तरह मुहावरेदार होती हैं न प्रभावशाली होती हैं और न इतनी सुन्दर या महान होती हैं. इन कविताओं में शैलियों की रंगा रंगी इन्द्रधनुष या बसन्त से भी बढ़कर है. स्वर और ध्वनियाँ और कला की अनेक छटाएँ संसार के ऊँचे साहित्य की याद दिलाती हैं. पिछले पन्द्रह बरस में उर्दू साहित्यकारों ने जो काव्य रचना की है उसके सुन्दर हिस्से को अगर सब का सब छापा जाय तो लगभग पाँच हज़ार पृष्ठों में वह छप सकेंगी और हिन्दी से भी बढ़कर उनकी भाशा हिन्दी होगी. हिन्दी के बहुत से साहित्यकार, शिक्षक और अध्यापक और लेखक भी यह कहने लगे हैं कि उर्दू की ऐसी रचनाएँ सरासर हिन्दी हैं और इन्हें नागरी लिपि में न छापना हिन्दी को असाधारन हानि पहुंचायगा. यह किताब इस सिलसिले की पहली कड़ी है और इसके छपने के बाद ही इस सिलसिले की दूसरी कड़ियाँ आपके सामने आयँगी. दूसरी बात जो इस किताब में आप पाएँगे वह विशयों और शीर्शकों का नया पन और उनकी भरमार है. देखिये तो, कैसे कैसे विशय सुन्दर कविता बनकर ज़िन्दगी को आईना दिखा रहे हैं. यह ख़याल हमेशा के लिये मिट जायगा कि कविता उसी जीवन की

चित्रकारी है जो फूलों की सेज पर विश्राम करता है. खून पसीने की ज़िन्दगी, धूल में अटी हुई ज़िन्दगी, भूक और दुख की ज़िन्दगी और अपमान की ज़िन्दगी, कड़ी मेहनत की ज़िन्दगी, क्रान्ति की ज़िन्दगी और उसके साथ ही प्रेम और मुहब्बत की ज़िन्दगी सब की सब इन कविताओं में अपने जलवे दिखा रही हैं. इन कविताओं में आप पिछले दस बारह बरस के ज़माने की हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी और उसकी राम कहानी और आत्म-इतिहास देखेंगे. शायद इस ज़माने का अगर कोई इतिहास लिखा जाय तो इस युग के भारत का वह इतना जीता जागता दिग्दर्शन न करा सकेगा जितना यह कविताएँ कराती हैं. यों तो यह संकलन दूसरे महायुद्ध के शुरू (सन् ३६) से १६५० तक की कविताओं का है लेकिन इससे पहले की भी कुछ कविताएँ दे दी गई हैं ताकि वर्त्तमान उर्दू साहित्य ने जो नया मोड़ लिया है उसका पता आपको लग जाय. नई शायरी फ़ारसी छन्दों और तुकान्त कविता के फ़ारसी साँचों को अक्सर छोड़ कर और तोड़ कर आगे बढ़ती है. नए छन्दों, अतुकान्त छन्दों और मुक्त छन्दों में दूसरी भारतीयता भाशाओं में जो नई शायरी हुई है बल्कि संसार भर के काव्य रूप में जो नई तब्दीलियाँ आई हैं उन सब की झलक नई उर्दू शायरी में नज़र आती है. प्रगतिशील और साम्यवादी साहित्य पर यह झूटा दोश भी लगाया जाता है कि उस पर विदेशी पन की छाप है, और उसमें भारतीयता नहीं है. यह कविताएँ इस इलज़ाम का कल्ला-तोड़ जवाब देती हैं. 'वज्द' की नज़्म "अजन्ता" और अली सरदार जाफ़री की नज़्म "एशिया जाग उठा" और ऐसी ही कई और नज़्में इस संग्रह में मिलेंगी जिनमें सच्ची भारतीयता कूट कूट कर भरी हुई है. विश्व विस्तार आजाने से हमारा साहित्य अभारतीय न होगा बल्कि और भी अधिक भारतीय हो जायगा. अब इन कविताओं को आपके हाथों में देकर मैं आपसे विदा होता हूँ

८/४ बैंक रोड, इलाहाबाद. —रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

१-१-१६५१ ई०

देश की नई चेतना के नाम

—फ़िराक़

क्या कहाँ

इन्द्रजीत शर्मा

जीवन-राग

किसने यह मीठी बीन बजाकर तान पे तान उड़ाई
अन्धकार में किरनें फूटीं कैसी जोत जगाई
जाग उठे ब्रह्मांड के कन-कन ले लेकर अंगड़ाई
हर दिल में आग लगाई
किसने ये मीठी बीन बजाकर तान पे तान उड़ाई.

धरती घूमी अंबर घूमा घूम गए सब तारे
चांद और सूरज अपने पथों पर घूमें न्यारे न्यारे
एक चक्कर में फँस कर रह गए लोक लोकान्तर सारे
हर लोक पे माया छाई
किसने ये मीठी बीन बजाकर तान पे तान उड़ाई.

रंग रूप की माया फैली प्रेम का मन्दिर साजा
सिंहासन पर क्यूपिड देवता मन्दिर बीच विराजा
सुख का सागर उमँड पड़ा आनन्द का बाजा बाजा
जीवन की कली मुस्काई
किसने ये मीठी बीन बजाकर तान पे तान सुनाई.

क्यूपिड देवता = कामदेव.

'वज्द' हैदराबाद दकन

अजन्ता

जहां ख़ूने जिगर पीते रहे अहले हुनर बरसों
जहां घुलता रहा रंगों में आहों का असर बरसों
जहां खिंचता रहा पत्थर पे अक्से ख़ैर-ओ-शर बरसों
जहां क़ायम रहेगी जन्नते क़ल्ब-ओ-नज़र बरसों

जहां नग़मे जनम लेते हैं, रंगीनी बरसती है
दकन की गोद में आबाद वो ख़्वाबों की बस्ती है

शराबे-कुहना की तासीर है ठंडी हवाओं में
बहारे-ज़िन्दगी ग़ल्तां है सब्ज़े की अदाओं में
नवाये-सरमदी आती है झरनों की सदाओं में
बयां मुमकिन नहीं वो लुत्फ़ आता है दुआओं में

यहां सदियों से रायज पुर सुकूं शीरीं मक़ाली है
यहां का ज़र्रा ज़र्रा मज़हरे-शाने जमाली है

तजल्लीज़ार-इरफ़ां, शाहकारे - इब्ने - आदम है
सरे फ़ितरत अमल की बारगाहे-हुस्न में ख़म है

ख़ैरो शर = भलाई-बुराई,सुख-दुख. कुहना = पुराना, पुरानी. ग़ल्तां है = लुढ़क रही है. नवाये सरमदी = स्वर्गीय संगीत. पुर सुकूं शीरीं मक़ाली = शांति पूर्ण मधुर बचन. मज़हरे शाने जमाली - सौन्दर्य को प्रकट करने वाला. तजल्ली ज़ारे इरफ़ां = सत्य के साक्षात दर्शन का प्रकाश स्थल. शाहकारे इब्ने आदम = मनुष्य की सर्वोत्तम कृति. सरे फ़ितरत अमल की बारगाहे हुस्न में ख़म है प्रकृति का सिर कर्म के सुन्दर स्थल में झुका हुआ है.

मगर बहार को अभी तक आरज़ूए नग़मा थी
शहीदे कैफ़े इन्तज़ार-ओ-जुस्तजूये नग़मा थी
मैं साज़ ढूंडने लगी
नवाए शोख़-ओ मस्त-ओ दिल नवाज़ ढूंडने लगी
बसद ग़ुरूर-ओ-इफ़्तख़ार-ओ-नाज़ ढूंडने लगी
मैं साज़ ढूंडती रही
बहार की फ़ज़ाओं में
जुनूं नवाज़ बदलियों की भीनी-भीनी छांव में
मैं महवे जुस्तजू रही
मगर यह मेरी भूल थी
हयात अपनी रसभरी कहानियां सुना चुकी
हवाय नौ बहार लोरियां सुना के जा चुकी
फ़िज़ाए मुर्ग़ज़ार जामे अरग़वां लुंढा चुकी
बहार की नशीली अँखड़ियों में नींद आ चुकी
मगर मैं ढूंडती रही
मुझे वह साज़े दिल नवाज़ आज तक न मिल सका
वह ऊदी-ऊदी बदलियाँ कि फ़ख़्रे सद बहार थीं

शहीदे कैफ़े इन्तज़ार व जुस्तजूए नग़मा थी = बहार को इन्तज़ार की मस्ती और संगीत की तलाश थी. नवाए शोख़ व मस्त व दिल नवाज़ ढूंडने लगी = चंचल, मस्त दिल को आनन्द देने वाला राग ढूंडने लगी. बसद ग़ुरूर व इफ़्तख़ार व नाज़ = सैकड़ों घमंडों उमंगों तरंगों के साथ. महवे जुस्तजू = ढूंडने में तल्लीन. जामे अरग़वां = लाल शराब से भरा हुआ प्याला. फ़ख़्रे सद बहार = जिन पर सौ बहारें घमंड करें.

फ़लक की चश्मे खूँफ़शां से अश्क बनके ढल गईं
दिखाई दे रही है कायनात कुछ लुटी-लुटी
धुएं की बू से है फ़ज़ा की सांस भी घुटी-घुटी
ज़मीं पे शोला बारियाँ, फ़लक पे गड़गड़ाहटें
कि सुन रहे हैं चश्म-ओ-दिल निज़ामे नौ की आहटें
बहार बीत ही चुकी ख़िज़ां भी बीत जायगी
मगर मैं एक सोच में पड़ी हुई हूं आज भी
वो मेरी आरज़ू की नाव खे सकेगा या नहीं
निज़ामे नौ भी मुझको साज़ दे सकेगा या नहीं.

चश्मे खूंफ़शां = खूँब रोने वाली आँखें. निज़ामे नौ = नया ज़माना, नई सभ्यता, नवयुग.

डूब रहे हैं सदियों लम्बी रात के फीके तारे
सुर्ख़ सितारा बनकर चमका सुबहे-नौ का निशान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

तेरी क़ूवत तेरी शक्ती कौन है वह जो रोके
चढ़ता दरिया, बहता धारा, उठता हुआ तूफ़ान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

श्रीमती 'अदा' बदायूनी

मैं साज़ ढूंढती रही !

बहार खिलखिला उठी
जुनूं नवाज़ बदलियों की छांव में
जुनूं नवाज़ बदलियों की छांव में बहार खिलखिला उठी
हर एक शाखे लाला ज़ार सजदा रेज़ हो गई
हर एक सजदा रेज़ शाख़सार पर तयूर चहचहा उठे
हवाए मुर्ग़ज़ार गुनगुना उठी
फ़िज़ाए नौ बहार लहलहा उठी
हवाए मुर्ग़ज़ार में, फ़िज़ाए नौ बहार में हयात मुस्करा उठी
जुनूं नवाज़ियाँ बढ़ीं
फ़साना साज़ियाँ बढ़ीं
अदाये नाज़ की कुछ और बेनियाज़ियाँ बढ़ीं
कुछ इस अदाए नाज़ से बहार खिलखिला उठी
जुनूं नवाज़ ऊदी-ऊदी बदलियों की छांव में

जुनूं नवाज़ = जूनूं (पागलपन) को बढ़ाने वाली. शाखे लाल ज़ार = लाला के फूलों की डाल. सजदा रेज़ = सजदा करने वाली. तयूर = चिड़ियाँ. मुर्ग़ज़ार = हरियाली, बाटिका. फ़साना साज़ियाँ = कहानियाँ बनाने की क्रियाएं. बेनियाज़ियाँ = उपेक्षाएं.

झूटे कौए, अब उड़ भी जा, यां आवनहारा कोई नहीं
अब मैं न किसी का प्यारा हूं, अब मेरा प्यारा कोई नहीं
साथी है 'सलाम' अपना ही दम, बस और सहारा कोई नहीं
गिर्दाब, समुन्दर, तारीकी, तूफ़ान··किनारा कोई नहीं

मँझधार में अब कश्ती है रवां, है कौन यहां आने वाला
पागल कौए मत बोल यहां, है कौन यहां आने वाला

गिर्दाब = भँवर.

अली सरदार जाफ़री

जाग ए हिन्दुस्तान

रूसी जागे चीनी जागे जाग ए हिन्दुस्तान
पूरब पच्छिम, उत्तर दक्खिन उट्ठा है तूफ़ान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

चौड़े चकले तेरे दरिया गहरी तेरी वादी
ऊँची तेरे कोह की चोटी, ऊँची तेरी शान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

गंगा जमुनी तेरे मैदां धानी तेरे खेत
फिर भी नंगे भूके रहकर जीते हैं दहक़ान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

तेरी सरहद पर बैठे हैं डाकू और लुटेरे
इस जन्नत में घुस आया है फ़ाशिस्ती शैतान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

सारी दुनिया देख रही है आज़ादी के ख़्वाब
ज़ंजीरों को तोड़ रहे हैं मज़दूर और किसान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

फ़ाशिस्ती = फ़ासिस्ट.

रात हँस हँस कर यह कहती है कि मैख़ाने में चल
फिर किसी शहनाज़ लाला रुख़ के काशाने में चल
यह नहीं मुमकिन तो फिर ए दोस्त वीराने में चल

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

हर तरफ़ बिखरी हुई रंगीनियाँ रानाइयाँ
हर क़दम पर इशरतें लेती हुई अंगड़ाइयाँ
बढ़ रही हैं गोद फैलाए हुए रुसवाइयाँ

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

फिर वो टूटा एक सितारा फिर वो छूटी फुलझड़ी
जाने किसकी गोद में आई ये मोती की लड़ी
हूक सी सीने में उट्ठी, चोट सी दिल पर पड़ी

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

एक महल की आड़ से निकला वो पीला माहताब
जैसे मुल्ला का अमामा, जैसे बनिये की किताब
जैसे मुफ़लिस की जवानी, जैसे बेवा का शबाब

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

मैख़ाने = शराबख़ाने. काशाने = रंग भवन. रानाइयाँ = सुन्दरताएँ इशरतें = भोग विलास. माहताब = चाँद. अमामा = पगड़ी. बेवा का शबाब = विधवा की जवानी.

रास्ते में रुक के दम लेलूं, मेरी आदत नहीं
लौट कर वापस चला जाऊँ, मेरी फ़ितरत नहीं
और कोई हम नवा मिल जाय यह क़िस्मत नहीं

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

मुंतज़िर है एक तूफ़ाने-बला मेरे लिये
अब भी जाने कितने दरवाज़े हैं वा मेरे लिये
एक मुसीबत है मेरा अहदे-वफ़ा मेरे लिये

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

जी में ठानी है कि अब अहदे-वफ़ा भी तोड़ दूं
उनको पा सकता हूँ मैं ये आसरा भी छोड़ दूं
हाँ मुनासिब है ये ज़ंजीरे-हवा भी तोड़ दूं

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

दिल में एक शोला भड़क उट्ठा है आख़िर क्या करूँ
मेरा पैमाना छलक उट्ठा है आख़िर क्या करूँ
ज़ख़्म सीने का महक उट्ठा है आख़िर क्या करूँ

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

फ़ितरत = स्वभाव, प्रकृति. हम नवा = संगी साथी, सुर में सुर मिलाने वाला. मुतज़िर = प्रतीक्षा कर रहा. वा = खुले. अहदे-वफ़ा = वफ़ा करने का वचन.

"जमादार" साये में बैठा हुआ है
किसी पर उसे कुछ अताब आ गया है
किसी की तरफ़ देख कर हँस रहा है
सड़क बन रही है !

ये बेबाक उल्फ़त ये अल्हड़ इशारा,
'बसन्ती' से 'रामू' तो 'रामू' से 'राधा'
"जमादार" भी है 'बसन्ती' का शैदा
सड़क बन रही है !

जो सर पर है पगड़ी तो हाथों में हंटर
चला है 'जमादार' किस शान से घर
'बसन्ती' भी जाती है नज़रें बचाकर
सड़क बन रही है !

समझते हैं लेकिन हैं मसरूर अब भी
इसी तरह गाते हैं 'मज़दूर' अब भी
बहर हाल वां हस्बेदस्तूर अब भी
सड़क बन रही है !

अताब = क्रोध. मसरूर = खुश. हस्बेदस्तूर = नियमानुसार.

असरारुलहक़ 'मजाज़'

आवारा

शहर की रात और मैं नाशाद-ओ-नाकारा फिरूँ
जगमगाती जागती सड़कों पे आवार फिरूँ
ग़ैर की बस्ती है कबतक दर बदर मारा फिरूँ
ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

ये रुपहली छाँव, ये आकाश पर तारों का जाल
जैसे सूफ़ी का तसौवुर, जैसे आशिक़ का ख़याल
आह ! लेकिन कौन जाने कौन समझे दिल का हाल
ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

झिलमिलाते क़ुमक़ुमों की राह में ज़ंजीर सी
रात के हाथों में दिन की मोहिनी तसवीर सी
मेरी छाती पर मगर चलती हुई शमशीर सी
ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

तसौवुर = कल्पना. क़ुमक़ुमों = बिजली के लट्टुओं.

करिश्मा है ये अरबाबे-हमम की सइय पैहम का
जिन्हें अहसास तक बाक़ी न था कुछ शादी-ओ-ग़म का
दिलों पर अक्स खिंच आया था जिनके हुस्ने-अलाम का
क़लम का नक़्श अज़बर हो गया था इस्मे आज़म का

चटानों पर शबाब-ओ-हुस्न की मौजें रवां कर दीं
फ़ुसूं कारों ने रंगों में मुक़्टयद बिजलियां कर दीं

जहां छोड़ा ख़ुशी से जाविदां पैग़ाम की ख़ातिर
ख़ुशामद अहले-दौलत की नहीं की नाम की ख़ातिर
न छानी ख़ाक दर दर की किसी इनआम की ख़ातिर
जिये भी काम की ख़ातिर मरे भी काम की ख़ातिर

ज़माने की जबां पर अक्स छोड़े हैं निगाहों के
रहेंगे नक़्श इनके, नाम मिट जाएँगे शाहों के

अरबाबे हमम = ग़म वालों. सइ = कोशिश. अज़बर = ज़बानी याद.
इस्मे आज़म = परमात्मा का नाम. मुक़्टयद = बन्द. इनआम = इनाम.

सलाम मछलीशहरी

"सड़क बन रही है—!"

मई के महीने का मानूस मन्ज़र
ग़रीबों के साथी ये कंकड़, ये पत्थर
वहां शह्र से एक ही मील हट कर
सड़क बन रही है !

ज़मीं पर कुदालों को बरसा रहे हैं
पसीने पसीने हुए जा रहे हैं
मगर इस मशक़्क़त में भी गा रहे हैं
सड़क बन रही है !

मुसीबत है, कोई मुसर्रत नहीं है
उन्हें सोचने की भी फ़ुर्सत नहीं है !
"जमादार" को कुछ शिकायत नहीं है
सड़क बन रही है !

जवां, नौजवां और ख़मीदा कमर भी
फ़सुर्दा जबीं भी बहिश्ते नज़र भी
वहां शामे ग़म भी, जमाले सहर भी
सड़क बन रही है !

मानूस = परिचित. ख़मीदा = झुकी हुई. ख़मीदा कमर = बूढ़े लोग. फ़सुर्दा जबीं = जिनके ललाट उदास हैं, निढाल. बहिश्ते नज़र = सुन्दर. वहीं शामे ग़म भी जमाले सहर भी = दुख सुख, अंधेरा उजाला, बुढ़ापा जवानी एक ही स्थान में.

तमद्दुन मुनअकस हो जिसमें ऐसा सागरे-जम है
जमाले-ज़िन्दगी रेहने-जलाले-अज़्मे. गौतम है

उमीदे-जाने-ताज़ा फिर दिले-बिस्मिल में आई थी
तलाशे-अम्न में तहज़ीब इस मंज़िल में आई थी

हरीमे-काबये फ़न मोबदे- नाज़ुक ख़यालां है
जहाने-नूर-ओ—नकहत मसकने-आशुफ़्ता हालां है
जुनूं अफ़्शां फ़ज़ा में मस्तिये-चश्मे-ग़ज़ालां है
लबे-जूए—कुहिस्तां जलवा - गाहे-ख़ुश जमालां है

मिली है बांकपन की दाद जिनको कजकुलाहों से
नज़र वालों पे शमशीरें बरसती हैं निगाहों से

कहीं पैदा है सारी कैफ़ियत सहने-गुलिस्तां की
कहीं रौनक़ नज़र आती है बाज़ार-ओ-शबिस्तां की
कहीं हैरत ज़बाने-हाल है हाले-परीशां की
लकीरें हैं कि शिरियानें दिले इन्सान-ओ-हैवां की

तमद्दुन = सभ्यता. मुनअकस = प्रतिबिम्बित. सागरे जम = जमशेद बादशाह का वह प्याला जिसमें त्रिभुवन प्रतिबिम्बित होता था. रेहने जलाले अज़्मे गौतम = महात्मा बुद्ध के उच्च आदर्शों के तेज के हाथों बिका हुआ. हरीमे काबए फ़न = कला के पूजा-स्थल का अन्तःकरण. मोबदे नाज़ुक ख़यालां = सूक्ष्म कल्पना वालों का आराधना स्थल. नकहत = सुगंध. मसकन = शान्ति देने वाली जगह. आशुफ़्ता हालां = परीशान लोगों. जुनूं अफ़्शां = जुनून बरसाने वाला. ग़ज़ालां = हिरन. लबे जूये कुहिस्ताँ = पहाड़ों की घाटी में बहने वाली नदी का किनारा. ख़ुश जमालां = रूपवानों. दाद = प्रशंसा. कज कुलाहों = टेढ़ी बांकी टोपी देने वाले हसीन. शिरियानें = रगें, नसें.

कहीं ज़ुल्मत के पीछे रोशनी महसूस होती है
कहीं तो मौत में भी ज़िन्दगी महसूस होती है

जिगर के ख़ून के खींचे गए हैं नक़्शे-लासानी
तसद्दुक़ जिनके हर ख़त पर तहैयुर ख़ानए-मानी
मुशक्कल हैं शबाब-ओ-हुस्न में तख़ईले-इन्सानी
तक़द्दुस के सहारे जी रहा है ज़ौक़े-उरियानी

गुलिस्ताने-अजन्ता पर जुनूं का राज है गोया
यहां जज़बात के इज़हार की मेराज है गोया

बहाना मिल गया अहले-जुनूं को हुस्नकारी का
असासा लूट डाला शौक़ में फ़स्ले-बहारी का
चटानों पर बनाया नक़्श दिल की बेक़रारी का
सिखाया गुर उसे जज़बात की आईनादारी का

दिले-कोहसार में महफ़ूज़ अपनी दास्तां रख दी
जिगरदारों ने बुनियादे-जहाने-जाविदां रख दी

हुनरमन्दों ने तस्वीरों में गोया जान भर दी है
तारज़ू दिल में हो जाती है वह काफ़िर नज़र दी है
अदाओं से अयां है, लज़्ज़ते-दर्दे-जिगर दी है
खुलेंगे राज़ इस डर से दहन पर मोह्र कर दी है

ये तसवीरें बज़ाहिर साकित-ओ-ख़ामोश रहती हैं
मगर अहले-नज़र पूछें तो दिल की बात कहती हैं

तसद्दुक़ = निछावर. ख़त = रेखा. तहैयुर ख़ानए-मानी = प्रसिद्ध ईरानी चित्रकार और महात्मा मानी की चित्रशाला. मुशक्कल = साकार. तख़ईल = कल्पना. तक़द्दुस = पवित्रता, सतीत्व. ज़ौक़े-उरियानी = नग्न अवस्था की मस्ती. मेराज = चरम सीमा. असासा = सर्वस्व. जहाने जमविदां = अमर सृष्टि. दहन = मुख. साकित = चुप.

झूटे कौए, अब उड़ भी जा, यां आवनहारा कोई नहीं
अब मैं न किसी का प्यारा हूं, अब मेरा प्यारा कोई नहीं
साथी है 'सलाम' अपना ही दम, बस और सहारा कोई नहीं
गिर्दाब, समुन्दर, तारीकी, तूफ़ान···किनारा कोई नहीं

मँझधार में अब कश्ती है रवां, है कौन यहां आने वाला
पागल कौए मत बोल यहां, है कौन यहां आने वाला

गिर्दाब = भँवर.

अली सरदार जाफ़री

जाग ए हिन्दुस्तान

रूसी जागे चीनी जागे जाग ए हिन्दुस्तान
पूरब पच्छिम, उत्तर दक्खिन उट्ठा है तूफ़ान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

चौड़े चकले तेरे दरिया गहरी तेरी वादी
ऊँची तेरे कोह की चोटी, ऊँची तेरी शान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

गंगा जमुनी तेरे मैदां धानी तेरे खेत
फिर भी नंगे भूके रहकर जीते हैं दहक़ान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

तेरी सरहद पर बैठे हैं डाकू और लुटेरे
इस जन्नत में घुस आया है फ़ाशिस्ती शैतान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

सारी दुनिया देख रही है आज़ादी के ख़्वाब
ज़ंजीरों को तोड़ रहे हैं मज़दूर और किसान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

फ़ाशिस्ती = फ़ासिस्ट.

डूब रहे हैं सदियों लम्बी रात के फीके तारे
सुर्ख़ सितारा बनकर चमका सुबहे-नौ का निशान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

तेरी क़ूवत तेरी शक्ती कौन है वह जो रोके
चढ़ता दरिया, बहता धारा, उठता हुआ तूफ़ान
जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

श्रीमती 'अदा' बदायूनी

मैं साज़ ढूंढती रही !

बहार खिलखिला उठी
जुनूं नवाज़ बदलियों की छांव में
जुनूं नवाज़ बदलियों की छांव में बहार खिलखिला उठी
हर एक शाखे लाला ज़ार सजदा रेज़ हो गई
हर एक सजदा रेज़ शाख़सार पर तयूर चहचहा उठे
हवाए मुर्ग़ज़ार गुनगुना उठी
फ़िज़ाए नौ बहार लहलहा उठी
हवाए मुर्ग़ज़ार में, फ़िज़ाए नौ बहार में हयात मुस्करा उठी
जुनूं नवाज़ियाँ बढ़ीं
फ़साना साज़ियाँ बढ़ीं
अदाये नाज़ की कुछ और बेनियाज़ियाँ बढ़ीं
कुछ इस अदाए नाज़ से बहार खिलखिला उठी
जुनूं नवाज़ ऊदी-ऊदी बदलियों की छांव में

जुनूं नवाज़ = जूनूं (पागलपन) को बढ़ाने वाली. शाखे लाल ज़ार = लाला के फूलों की डाल. सजदा रेज़ = सजदा करने वाली. तयूर = चिड़ियाँ. मुर्ग़ज़ार = हरियाली, बाटिका. फ़साना साज़ियाँ = कहानियाँ बनाने की क्रियाएं. बेनियाज़ियाँ = उपेक्षाएं.

मगर बहार को अभी तक आरज़ूए नग़मा थी
शहीदे कैफ़े इन्तज़ार-ओ-जुस्तजूये नग़मा थी
मैं साज़ ढूंडने लगी
नवाए शोख़-ओ मस्त-ओ-दिल नवाज़ ढूंडने लगी
बसद ग़ुरूर-ओ-इफ़्तख़ार-ओ-नाज़ ढूंडने लगी
मैं साज़ ढूंडती रही
बहार की फ़ज़ाओं में
जुनूं नवाज़ बदलियों की भीनी-भीनी छांव में
मैं महवे जुस्तजू रही
मगर यह मेरी भूल थी
हयात अपनी रसभरी कहानियां सुना चुकी
हवाय नौ बहार लोरियां सुना के जा चुकी
फ़िज़ाए मुर्ग़ज़ार जामे अरग़वां लुँढा चुकी
बहार की नशीली अँखड़ियों में नींद आ चुकी
मगर मैं ढूंडती रही
मुझे वह साज़े दिल नवाज़ आज तक न मिल सका
वह ऊदी-ऊदी बदलियाँ कि फ़ख़्रे सद बहार थीं

शहीदे कैफ़े इन्तज़ार व जुस्तजूए नग़मा थी = बहार को इन्तज़ार की मस्ती और संगीत की तलाश थी. नवाए शोख़ व मस्त व दिल नवाज़ ढूंडने लगी = चंचल, मस्त दिल को आनन्द देने वाला राग ढूंडने लगी. बसद ग़ुरूर व इफ़्तख़ार व नाज़ = सैकड़ों घमंडों उमंगों तरंगों के साथ. महवे जुस्तजू = ढूंडने में तल्लीन. जामे अरग़वां = लाल शराब से भरा हुआ प्याला. फ़ख़्रे सद बहार = जिन पर सौ बहारें घमंड करें.

फ़लक की चश्मे ख़ूँफ़शां से अश्क बनके ढल गईं
दिखाई दे रही है कायनात कुछ लुटी-लुटी
धुएं की बू से है फ़ज़ा की सांस भी घुटी-घुटी
ज़मीं पे शोला बारियाँ, फ़लक पे गड़गड़ाहटें
कि सुन रहे हैं चश्म-ओ-दिल निज़ामे नौ की आहटें
बहार बीत ही चुकी ख़िज़ां भी बीत जायगी
मगर मैं एक सोच में पड़ी हुई हूं आज भी
वो मेरी आरज़ू की नाव खे सकेगा या नहीं
निज़ामे नौ भी मुझको साज़ दे सकेगा या नहीं.

चश्मे ख़ूंफ़शां = ख़ूब रोने वाली आँखें. निज़ामे नौ = नया ज़माना, नई सभ्यता, नवयुग.

इन्द्रजीत शर्मा

जीवन-राग

किसने यह मीठी बीन बजाकर तान ने तान उड़ाई
अन्धकार में किरनें फूटीं कैसी जोत जगाई
जाग उठे ब्रह्मांड के कन-कन ले लेकर अंगड़ाई
हर दिल में आग लगाई
किसने ये मीठी बीन बजाकर तान पे तान उड़ाई.

धरती घूमी अंबर घूमा घूम गए सब तारे
चांद और सूरज अपने पथों पर घूमे न्यारे न्यारे
एक चक्कर में फँस कर रह गए लोक लोकान्तर सारे
हर लोक पे माया छाई
किसने ये मीठी बीन बजाकर तान पे तान उड़ाई.

रंग रूप की माया फैली प्रेम का मन्दिर साजा
सिंहासन पर क्यूपिड देवता मन्दिर बीच बिराजा
सुख का सागर उमँड पड़ा आनन्द का बाजा बाजा
जीवन की कली मुस्काई
किसने ये मीठी बीन बजाकर तान पे तान सुनाई.

क्यूपिड देवता = कामदेव.

'वज्द' हैदराबाद दकन

अजन्ता

जहां ख़ूने जिगर पीते रहे अहले हुनर बरसों
जहां घुलता रहा रंगों में आहों का असर बरसों
जहां खिंचता रहा पत्थर पे अक्से खैर-ओ-शर बरसों
जहां क़ायम रहेगी जन्नते क़ल्ब-ओ-नज़र बरसों

जहां नग़मे जनम लेते हैं, रंगीनी बरसती है
दकन की गोद में आबाद वो ख़्वाबों की बसती है

शराबे-कुहना की तासीर है ठंडी हवाओं में
बहारे-ज़िन्दगी ग़ल्तां है सब्ज़े की अदाओं में
नवाये-सरमदी आती है झरनों की सदाओं में
बयां मुमकिन नहीं वो लुत्फ़ आता है दुआओं में

यहां सदियों से रायज पुर सुकूं शीरीं मक़ाली है
यहां का ज़र्रा ज़र्रा मज़हरे-शाने जमाली है

तजल्लीज़ार-इरफ़ां, शाहकारे - इब्ने - आदम है
सरे फ़ितरत अमल की बारगाहे-हुस्न में ख़म है

खैरो शर = भलाई-बुराई, सुख-दुख. कुहना = पुराना, पुरानी. ग़ल्तां है = लुढ़क रही है. नवाये सरमदी = स्वर्गीय संगीत. पुर सुकूं शीरी मक़ाली = शांति पूर्ण मधुर बचन. मज़हरे शाने जमाली = सौन्दर्य को प्रकट करने वाला. तजल्ली• ज़ारे इरफ़ां = सत्य के साक्षात दर्शन का प्रकाश स्थल. शाहकारे इब्ने आदम = मनुष्य की सर्वोत्तम कृति. सरे फ़ितरत अमल की बारगाहे हुस्न में ख़म है प्रकृति का सिर कर्म के सुन्दर स्थल में झुका हुआ है.

तमद्दुन मुनअकस हो जिसमें ऐसा सागरे-जम है
जमाले-ज़िन्दगी रेहने-जलाले-अज़्मे. गौतम है

उमीदे-जाने-ताज़ा फिर दिले-बिस्मिल में आई थी
तलाशे-अम्न में तहज़ीब इस मंज़िल में आई थी

हरीमे-काबये फ़न मोबदे- नाज़ुक ख़यालां है
जहाने-नूर-ओ—नकहत मसकने-आशुफ़्ता हालां है
जुनूं अफ़्शां फ़ज़ा में मस्तिये-चश्मे-ग़ज़ालां है
लबे-जूए—कुहिस्तां जलवा - गाहे-ख़ुश जमालां है

मिली है बांकपन की दाद जिनको कजकुलाहों से
नज़र वालों पे शमशीरें बरसती हैं निगाहों से

कहीं पैदा है सारी कैफ़ियत सहने-गुलिस्तां की
कहीं रौनक़ नज़र आती है बाज़ार-ओ-शबिस्तां की
कहीं हैरत ज़बाने-हाल है हाले-परीशां की
लकीरें हैं कि शिरियानें दिले इन्सान-ओ-हैवां की

तमद्दुन = सभ्यता. मुनअकस = प्रतिबिम्बित. सागरे जम = जमशेद बादशाह का वह प्याला जिसमें त्रिभुवन प्रतिबिम्बित होता था. रेहने जलाले अज़्मे गौतम = महात्मा बुद्ध के उच्च आदर्शों के तेज के हाथों बिका हुआ. हरीमे काबए फ़न = कला के पूजा-स्थल का अन्तःकरण. माबदे नाज़ुक ख़यालां = सूक्ष्म कल्पना वालों का आराधना स्थल. नकहत = सुगंध. मसकन = शान्ति देने वाली जगह. आशुफ़्ता हालां = परीशान लोगों. जुनूं अफ़्शां = जुनून बरसाने वाला. ग़ज़ालां = हिरन. लबे जूये कुहिस्ताँ = पहाड़ों की घाटी में बहने वाली नदी का किनारा. ख़ुश जमालां = रूपवानों. दाद = प्रशंसा. कज कुलाहों = टेढ़ी बांकी टोपी देने वाले हसीन. शिरियानें = रगें, नसें.

कहीं ज़ुल्मत के पीछे रोशनी महसूस होती है
कहीं तो मौत में भी ज़िन्दगी महसूस होती है

जिगर के खून के खींचे गए हैं नक़्शे-लासानी
तसद्दुक़ जिनके हर खत पर तहैयुर खानए-मानी
मुशक्कल हैं शबाब-ओ-हुस्न में तखईले-इन्सानी
तक़द्दुस के सहारे जी रहा है ज़ौक़े-उरियानी

गुलिस्ताने-अजन्ता पर जुनूं का राज है गोया
यहां जज़बात के इज़हार की मेराज है गोया

बहाना मिल गया अहले-जुनूं को हुस्नकारी का
असासा लूट डाला शौक़ में फस्ले-बहारी का
चटानों पर बनाया नक़्श दिल की बेक़रारी का
सिखाया गुर उसे जज़बात को आईनादारी का

दिले-कोहसार में महफ़ूज़ अपनी दास्तां रख दी
जिगरदारों ने बुनियादे-जहाने-जाविदां रख दी

हुनरमन्दों ने तस्वीरों में गोया जान भर दी है
तारजू दिल में हो जाती है वह काफ़िर नज़र दी है
अदाओं से अयां है, लज़्ज़ते-दर्दे-जिगर दी है
खुलेंगे राज़ इस डर से दहन पर मोह्र कर दी है

• ये तसवीरें बज़ाहिर साकित-ओ-खामोश रहती हैं
मगर अहले-नज़र पूछें तो दिल की बात कहती हैं

तसद्दुक़ - निछावर. खत = रेखा. तहैयुर खानए-मानी = प्रसिद्ध ईरानी चित्रकार और महात्मा मानी की चित्रशाला. मुशक्कल = साकार. तखईल = कल्पना. तक़द्दुस = पवित्रता, सतीत्व. ज़ौक़े-उरियानी = नग्न अवस्था की मस्ती. मेराज = चरम सीमा. असासा = सर्वस्व. जहाने जमविदां = अमर सृष्टि. दहन मुख. साकित = चुप.

करिश्मा है ये अरबाबे-हमम की सइय पैहम का
जिन्हें अहसास तक बाक़ी न था कुछ शादी-ओ-ग़म का
दिलों पर अक्स खिंच आया था जिनके हुस्ने-अलाम का
क़लम का नक़्श अज़बर हो गया था इस्मे आज़म का

चटानों पर शबाब-ओ-हुस्न की मौजें रवां कर दीं
फ़ुसूं कारों ने रंगों में मुक़य्यद बिजलियां कर दीं

जहां छोड़ा ख़ुशी से जाविदां पैग़ाम की ख़ातिर
ख़ुशामद अहले-दौलत की नहीं की नाम की ख़ातिर
न छानी ख़ाक दर दर की किसी इनआम की ख़ातिर
जिये भी काम की ख़ातिर मरे भी काम की ख़ातिर

ज़माने की जबीं पर अक्स छोड़े हैं निगाहों के
रहेंगे नक़्श इनके, नाम मिट जाएँगे शाहों के

अरबाबे हमम = ग़म वालों. सइ = कोशिश. अज़बर = ज़बानी याद. इस्मे आज़म = परमात्मा का नाम. मुक़य्यद = बन्द. इनआम = इनाम.

सलाम मछलीशहरी

"सड़क बन रही है—!"

मई के महीने का मानूस मन्ज़र
ग़रीबों के साथी ये कंकड़, ये पत्थर
वहां शह्र से एक ही मील हट कर
सड़क बन रही है !

ज़मीं पर कुदालों को बरसा रहे हैं
पसीने पसीने हुए जा रहे हैं
मगर इस मशक़्क़त में भी गा रहे हैं
सड़क बन रही है !

मुसीबत है, कोई मुसर्रत नहीं है
उन्हें सोचने की भी फ़ुर्सत नहीं है !
"जमादार" को कुछ शिकायत नहीं है
सड़क बन रही है !

जवां, नौजवां और ख़मीदा कमर भी
फ़सुर्दा जबीं भी बहिश्ते नज़र भी
वहीं शामे ग़म भी, जमाले सहर भी
सड़क बन रही है !

मानूस = परिचित. ख़मीदा = झुकी हुई. ख़मीदा कमर = बूढ़े लोग. फ़सुर्दा जबीं = जिनके ललाट उदास हैं, निढाल. बहिश्ते नज़र = सुन्दर. वहीं शामे ग़म भी जमाले सहर भी = दुख सुख, अंधेरा उजाला, बुढ़ापा जवानी एक ही स्थान में.

"जमादार" साये में बैठा हुआ है
किसी पर उसे कुछ अताब आ गया है
किसी की तरफ़ देख कर हँस रहा है
सड़क बन रही है!

ये बेबाक उल्फ़त ये अल्हड़ इशारा,
'बसन्ती' से 'रामू' तो 'रामू' से 'राधा'
"जमादार" भी है 'बसन्ती' का शैदा
सड़क बन रही है!

जो सर पर है पगड़ी तो हाथों में हंटर
चला है 'जमादार' किस शान से घर
'बसन्ती' भी जाती है नज़रें बचाकर
सड़क बन रही है!

समझते हैं लेकिन हैं मसरूर अब भी
इसी तरह गाते हैं 'मज़दूर' अब भी
बहर हाल वां हस्बेदस्तूर अब भी
सड़क बन रही है!

अताब = क्रोध. मसरूर = खुश. हस्बेदस्तूर = नियमानुसार.

असरारुलहक़ 'मजाज़'

आवारा

शह्र की रात और मैं नाशाद-ओ-नाकारा फिरूँ
जगमगाती जागती सड़कों पे आवारा फिरूँ
ग़ैर की बस्ती है कबतक दर बदर मारा फिरूँ
ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

ये रुपहली छाँव, ये आकाश पर तारों का जाल
जैसे सूफ़ी का तसौवुर, जैसे आशिक़ का ख़याल
आह ! लेकिन कौन जाने कौन समझे दिल का हाल
ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

झिलमिलाते क़ुमक़ुमों की राह में ज़ंजीर सी
रात के हाथों में दिन की मोहिनी तसवीर सी
मेरी छाती पर मगर चलती हुई शमशीर सी
ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

तसौवुर = कल्पना. क़ुमक़ुमों = बिजली के लट्टुओं.

रात हँस हँस कर यह कहती है कि मैख़ाने में चल
फिर किसी शहनाज़ लाला रुख़ के काशाने में चल
यह नहीं मुमकिन तो फिर ए दोस्त वीराने में चल

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

हर तरफ़ बिखरी हुई रंगीनियाँ रानाइयाँ
हर क़दम पर इशरतें लेती हुई अंगड़ाइयाँ
बढ़ रही हैं गोद फैलाए हुए रुसवाइयाँ

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

फिर वो टूटा एक सितारा फिर वो छूटी फुलझड़ी
जाने किसकी गोद में आई ये मोती की लड़ी
हूक सी सीने में उट्ठी, चोट सी दिल पर पड़ी

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

एक महल की आड़ से निकला वो पीला माहताब
जैसे मुल्ला का अमामा, जैसे बनिये की किताब
जैसे मुफ़लिस की जवानी, जैसे बेवा का शबाब

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

मैख़ाने = शराबख़ाने. काशाने = रंग भवन. रानाइयाँ = सुन्दरताएँ इशरतें = भोग विलास. माहताब = चाँद. अमामा = पगड़ी. बेवा का शबाब = विधवा की जवानी.

रास्ते में रुक के दम लेलूँ, मेरी आदत नहीं
लौट कर वापस चला जाऊँ, मेरी फ़ितरत नहीं
और कोई हम नवा मिल जाय यह क़िस्मत नहीं

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

मुंतज़िर है एक तूफ़ाने-बला मेरे लिये
अब भी जाने कितने दरवाज़े हैं वा मेरे लिये
एक मुसीबत है मेरा अहदे-वफ़ा मेरे लिये

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

जी में ठानी है कि अब अहदे-वफ़ा भी तोड़ दूं
उनको पा सकता हूँ मैं ये आसरा भी छोड़ दूं
हाँ मुनासिब है ये ज़ंजीरे-हवा भी तोड़ दूं

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

दिल में एक शोला भड़क उट्ठा है आख़िर क्या करूँ
मेरा पैमाना छलक उट्ठा है आख़िर क्या करूँ
ज़ख़्म सीने का महक उट्ठा है आख़िर क्या करूँ

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

फ़ितरत = स्वभाव, प्रकृति. हम नवा = संगी साथी, सुर में सुर मिलाने वाला. मुतज़िर = प्रतीक्षा कर रहा. वा = खुले. अहदे-वफ़ा = वफ़ा करने का वचन.

जी में आता है ये मुर्दा चांद तारे नोच लूं
इस किनारे नोच लूं और उस किनारे नोच लूं
एक दो का ज़िक्र क्या सारे के सारे नोच लूं
ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

ऐश-ओ-दौलत के मज़ाहिर हैं नज़र के सामने
सैकड़ों सुलताने-जाबिर हैं नज़र के सामने
सैकड़ों चंगेज़-ओ-नादिर हैं नज़र के सामने
ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

लेके एक चंगेज़ के हाथों से ख़ंजर तोड़ दूं
ताज पर उसके दमकता है जो पत्थर तोड़ दूं
कोई तोड़े या न तोड़े, मैं ही बढ़कर तोड़ दूं
ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

बढ़के इस इन्दर-सभा का साज़-ओ-सामाँ फूंक दूं
इसका गुलशन फूँक दूं, उसका गुलिस्ताँ फूँक दूं
तख़्ते-सुलताँ क्या है सारा क़स्रे सुलताँ फूँक दूं
ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

मज़ाहिर = प्रदर्शन. जाबिर = ज़बरदस्ती करने वाला, ज़ालिम.

मुहम्मद सफ़दर

मे डे

[सन १८८६ ई० में शिकागो (अमरीका) के मज़दूरों ने सरमायादारों से मांग की कि काम का वक़्त चौदह घंटे से आठ घंटे कर दिया जाय. हुक्मरान तबक़े ने इसका जवाब गोलियों से दिया. बेशुमार मज़दूर ख़ाक-ओ-ख़ून में तड़प कर रह गये और उनका सफ़ेद झंडा उन्हीं के लहू से सुर्ख़ हो गया. मे डे उन्हीं मेहनतकश शहीदों की याद में दुनिया के हर उस हिस्से में मनाया जाता है जहां मज़दूर बेदार हो रहे हैं. पहली मई सन् १९४९ ई० को अन्जुमन तरक़्क़ी पसन्द मुसन्नफ़ीन पच्छिमी पंजाब ने भी यौमे मई (मे डे) मनाया. यह नज़्म उसी जलसे में पढ़ी गई थी.]

मिटे हुए, ख़ाक में मिले, धूल बनके उड़ते हुए
नज़ारों को भूल भी जाओ शायरो हुस्न के ख़ुदाओ
नई बहारों के गीत गाओ
जो हर तरफ़, हर उफ़क़ पे लहराते सुर्ख़ झंडों
के फूल बिखराती आ रही हैं
लहू से भीगे हुए नज़ारों के गीत गाओ
कि आज यौमे मई है-तिरसठ बरस से जलती हुई सदा है
लहू की

मज़दूर के लहू की
जिसे शिकागो के अहले सरमाया की रऊनत की रहगुज़र पर
गुलाब की पत्तियों सा बिखरा दिया गया था

वही तो है जिसकी याद इक मशअले तमन्ना बनी
चमकती रही हमारे दिलों की तारीक वादियों में
वही तो है जिसने सबसे पहले हमें बताया
कि हम अलग एक आलमे नौ हैं, इक नई रागिनी हैं
हम वक़्त के तलातुम की इक नई मौज हैं
वही तो है जिसने सबसे पहले हमें बताया
कि आलमे नौ कोई फ़साना नहीं
हक़ीक़त है और हक़ीक़त है
इसलिये दर्द है, लहू है
वही तो है जिससे आज चिल्ली से चीन तक
एक सैले ख़ूंरंग है कि हरसू उमंड रहा है

मेरे रफ़ीक़ो, अज़ीम फ़नकारो, शायरो, हुस्न के ख़ुदाओ
लहू से भीगे हुए नज़ारे पुकारते हैं
बताओ कब तक
निज़ामे सरमाया की लबे मर्ग फ़ाहशा को

रऊनत = घमंड, अहंकार. आलमे नौ = नया संसार. लबे-मर्ग फ़ाहशा = मरने वाली व्यभिचारिणी.

तुम अपने दिल के चिराग़ से, अश्के ख़ूं से, आहे सहरगही से
हरारत और नूर और रंग के ख़ज़ीने दिया करोगे ?
बताओ कब तक
इसी तरह अपनी अपनी शख़्सीयतों के महबस में बन्द रहकर
फ़लक पे खिलती हुई सहर को तका करोगे
बताओ कब तक ?

आहे सहरगही = वह आह जो सुबह को खींची जाय.
महबस = क़ैदख़ाना.

'साहिर' लुधियानवी

मेरे गीत तुम्हारे हैं

अब तक मेरे गीतों में उम्मीद भी थी पसपाई भी
मौत के क़दमों की आहट भी, जीवन की अंगड़ाई भी
मुस्तक़बिल की किरनें भी थीं, हाल की बोझिल ज़ुलमत भी
तूफ़ानों का शोर भी था, और ख़्वाबों की शहनाई भी

आज से मैं अपने गीतों में आतिशपारे भर दूँगा
मद्धिम लचकीली तानों में जीवट धारे भर दूँगा
जीवन के अँधियारे पथ पर मिशअल लेकर निकलूँगा
धरती के फैले आँचल में सुर्ख़ सितारे भर दूँगा

आज से ए मज़दूर किसानो ! मेरे राग तुम्हारे हैं
फ़ाक़ा कश बेबस इनसानो ! मेरे भाग तुम्हारे हैं
जब तक तुम भूके नंगे हो, ये शोले ख़ामोश न होंगे
जब तक बे आराम हो तुम, ये नग़मे राहत कोश न होंगे

पसपाई = हार की भावना. मुस्तक़बिल = भविष्य. हाल = वर्त्तमान. ज़ुलमत = अंधेरा. आतिशपारे = आग के टुकड़े. मिशअल = मशाल. राहत कोश = सुखी, आराम से रहना.

मुझको इसका रंज नहीं है, लोग मुझे फ़नकार न मानें
फ़िक्र-ओ-सुख़न के ताजिर, मेरे शेरों को अशआर न मानें
मेरा फ़न, मेरी उम्मीदें, आज से तुम को अरपन हैं
आज से मेरे गीत तुम्हारे दुख और सुख का दरपन हैं

तुम से क़ूवत लेकर अब मैं तुमको राह दिखाऊंगा।
तुम परचम लहराना साथी, मैं बरबत पर गाऊँगा।
आज से मेरे फ़न का मक़सद ज़ंजीरें पिघलाना है
आज से मैं शबनम के बदले अंगारे बरसाऊँगा।

फ़नकार = कलाकार. अशआर = शेर का बहुवचन. परचम = झंडा.
बरबत = सितार की तरह का एक साज़.

'हफ़ीज़' होशियार पुरी (पाकिस्तान)

देश के बँटवारे पर ग़ज़लें

(इन ग़ज़लों के लेखकों के घर हिन्दुस्तान में थे. मार काट के ज़माने में इन्हें अपनी जान बचाकर पाकिस्तान भागना पड़ा. इनका भारत प्रेम इन ग़ज़लों में देखिये)

(१)

जुनूं में शेख़-ओ-बरहमन हैं किस क़दर कामिल
हज़ार क़ाफ़लए बेनिशान ओ बेमंज़िल
कुछ इस तरह से बहार आई है कि बुझने लगे
हवाए-लाला-ओ-गुल से चिराग़े दीदा-ओ-दिल
रवां है क़ाफ़लये बेदरा-ओ-बेमक़सूद
जो दिल गिरफ़्ता हैं राही, तो रहनुमा ग़ाफ़िल
ये इज़्तराब, ये शौक़े-उरूसे-आज़ादी
उठा के देख तो लेना था परदए-महमिल
हदीसे दर्द बजुज़ क़त्ल महज़ कुछ भी नहीं
न छेड़ क़िस्सए 'मक़तूल'-ओ-'मक़तल'-ओ-'क़ातिल'

चिराग़े-दीदा-ओ-दिल = आंख और दिल के चिराग़. दरा = बिगुल. शौक़े-उरूसे-आज़ादी = आज़ादी की दुलहन के लिये शौक़. महमिल = वह स्थान जिसमें दुलहन या सुन्दरी पर्दे में छुपी हुई हो.

ये बात कहके हुआ नाखुदा अलग मुझसे
ये है सफ़ीना, ये गिर्दाब है, वो है साहिल
मैं अपने हाल को माज़ी से क्यों कहूँ बेहतर
अगर वो हासिले ग़म था तो ये ग़मे हासिल
सुना रहा हूँ बरंगे ग़ज़ल ज़माने को
हिकायते ग़मे दौरां, फ़सानये-ग़मे-दिल
चले गये जो हरीफ़ाने दिलनवाज़ 'हर्फ़ीज़'
अब उन का ज़िक्र है और यादे-गर्मिये-महफ़िल

कई चिराग़ जलाए उमीदे-फ़रदा ने
उजड़ के बस न सके फिर दिलों के वीराने
सदा ये आती है मानूस रहगुज़ारों से
कभी तो गुज़रेंगे फिर इस तरफ़ से दीवाने

(२)

'नासिर' काज़िमी

शहर दर शहर खूं बहाए गए यों भी जश्ने तरब मनाए गए
क्या कहूं किस तरह सरे बाज़ार अस्मतों के दिये बुझाए गए

हरीफ़ = साथी, संगी, जानकार, प्रेमी, और लागडांट रखने वाले. याद-गर्मिये-महफ़िल = सभा की चहल-पहल की याद. उमीदे फ़रदा = आने वाले कल की आशा.

रहनुमाओं की ग़फ़लतों के तुफ़ैल क़ाफ़िले राह में लुटाए गए
आह वो ख़िल्वतों के सरमाये मजमा-ए-आम में लुटाए गए
इक तरफ़ झूम कर बहार आई इक तरफ़ आशियां जलाए गए
इक तरफ़ ख़ूने-दिल न था बाक़ी इक तरफ़ जश्ने जम मनाए गए
और भी ऐसे हादसे हैं जो परदए-राज़ में छिपाए गए
वक़्त के साथ हम भी ए 'नासिर' ख़ार-ओ-ख़स की तरह बहाए गए

वो ज़िन्दगी के सहारे नज़र नहीं आते
कहां हैं दोस्त हमारे नज़र नहीं आते
न जाने मंज़िले ग़ुरबत में उन पे क्या गुज़री
तेरे फ़िराक़ के मारे नज़र नहीं आते
हजूमे-यास है और मंज़िलों अंधेरा है
वो रात है कि सितारे नज़र नहीं आते

यहां तक बढ़ गए आलामे हस्ती कि दिल के हौसले शल हो गए हैं
कहां तक ताब लाए नातवां दिल कि सदमे अब मुसलसल हो गए हैं
उन्हें सदियों न भूलेगा ज़माना यहां जो हादसे कल हो गए हैं
जिन्हें हम देखकर जीते थे 'नासिर' वो लोग आंखों से ओझल हो गए हैं

तुफ़ैल = कारन. मंज़िले ग़ुरबत = परदेस की मंज़िल. शल = चूर, थकित.

न आँखें ही बरसीं न तुम ही मिले
न जाने कहां ले गए क़ाफ़ले
जहां कोई बस्ती नज़र आ गई
हमें भी करें याद अहले चमन

बहारों में अबके अजब गुल खिले
मुसाफ़िर बड़ी दूर जाकर मिले
वहीं रुक गए अजनबी क़ाफ़िले
चमन में अगर कोई ग़ुंचा खिले

आंखों में छुपाए फिर रहा हूं
देते हैं सुराग़ फ़स्ले-गुल का
मंज़िल न मिली तो क़ाफ़लों ने
जंगल में हुई है शाम हम को
रुदादे सफ़र न छेड़ 'नासिर'

यादों के बुझे हुए सवेरे
शाख़ों पे जले हुए बसेरे
रस्ते में जमा लिये हैं डेरे
बस्ती से चले थे मुंह अंधेरे
फिर अश्क न थम सकेंगे मेरे

किसे देखें कहां, देखा न जाए
दर-ओ-दीवार वीरां, शमअ मद्धिम
पुरानी सोहबतें याद आ रही हैं
कहीं ख़ूं और कहीं लाशों के अंबार
सफ़र है और ग़ुरबत का सफ़र है
कहीं तुम और कहीं हम क्या ग़ज़ब है

वो देखा है जहां देखा न जाए
शबे ग़म का समां देखा न जाए
चिराग़ों का धुआं देखा न जाए
बस ऐ दौरे-ज़मां देखा न जाए
ग़मे हर कारवां देखा न जाए
फ़िराक़े जिस्म-ओ-जां देखा न जाए

फ़िराक़े जिस्म-ओ-जां = प्राण और शरीर का वियोग.

(३)

'मुख़तार' सिद्दीक़ी

जो जो सदमे हम पे गुज़रे कैसे उनका बयान करें
कौन सा दाग़ निकाल के दिल से सब्त सरे-दीवान करें
आठ पहर आशुफ़्ता ख़याली, किसको भला ख़ुश आती है
जी माने तो हम भी कुछ दिलजमई का सामान करें
जब से क़फ़स का गोशा छूटा, एक ही दुविधा रहती है
जीना मुश्किल, मरना मुश्किल, क्या मुश्किल आसान करें

क्यों बैठ गए ग़ुबार से हम　　कुछ कह न सके बहार से हम
तूफ़ां था, हजूम था, ये क्या था　　गुज़रे हैं ये किस दयार से हम
हँसते हैं कि हँस सके ज़माना　　ख़ुश हैं तो इस एतबार से हम

कैसे कैसे लोग थे जिनसे बस्ती बस्ती गुलशन थी
गुलशन गुलशन वीराने हैं, देख लिया इन्सानों को
बिजलियों को भी ताब न थी जिनकी वो नशेमन ख़ुद फूंके
पर मारें न परिन्दे जहां लूटा ऐसे काशानों को
शायद अब तामीर की लज़्ज़त पा न सकेंगे जीते जी
जैसे चाहें बहलाएं बरबादी के अरमानों को

सब्त करना = जड़ना या छाप लगाना. ख़ुश आना = अच्छा लगना.

(४)

'साहिर' लुधियानवी

तरबज़ारों पे क्या बीती मनमखानों पे क्या गुज़री
दिले ज़िन्दा तेरे मरहूम अरमानों पे क्या गुज़री
ज़मीं ने ख़ून उगला, आस्मां ने आग बरसाई
जब इन्सानों के दिन बदले तो इन्सानों पे क्या गुज़री
हमें ये फ़िक्र उनकी अंजुमन किस हाल में होगी
उन्हें ये ग़म कि उन से छुट के दीवानों पे क्या गुज़री
मेरा इल्हाद तो ख़ैर एक लानत था सो है अब तक
मगर इस आलमे वहशत में ईमानों पे क्या गुज़री
ये मंज़र कौन सा मंज़र है, पहचाना नहीं जाता
सियहख़ानों से कुछ पूछो, शबिस्तानों पे क्या गुज़री
चलो वो कुफ़्र के घर से सलामत आ गए लेकिन
ख़ुदा की ममलकत में सोख़्ता जानों पे क्या गुज़री

'अख़्तर' होशियारपूरी

जाने किस किस पे बार हैं हम लोग
कि ग़रीबुद्दयार हैं हम लोग
हम लहू में नहा के आए हैं
किस क़दर पुर बहार हैं हम लोग

इल्हाद = धार्मिक कट्टरपन का विरोध. ममलकत = राज. सोख़्ता = जले हुए.

थे कभी क़ाफ़ले की रूहे-रवां
अब तो गर्द-ओ-ग़ुबार हैं हम लोग
हमने देखी है ज़िन्दगी की बहार
याद गारे-बहार हैं हम लोग
ग़ौर से अहले दह्र हम को सुनें
बेकसों की पुकार हैं हम लोग
किस को मालूम कब बुझें ये चिराग़
कि सरे रहगुज़ार हैं हम लोग
दिल के अजज़ाये-ग़म रसीदा के
आप ही ग़मगुसार हैं हम लोग
कोई बतलाए रोशनी है किधर
ज़ुल्मतों के शिकार हैं हम लोग
सर भी अब हम उठा नहीं सकते
कितने बे अख़्तियार हैं हम लोग
अब न छेड़ो हमें ख़ुदा के लिये
कि बहुत दिलफ़गार हैं हम लोग
क्या कहें और अपना हाल 'अख़्तर'
हसरतों के मज़ार हैं हम लोग

ग़रीबुद्दयार = परदेसी. रूहे-रवां = प्राण. अहले दह्र = दुनिया वाले. अजज़ाये ग़म रसीदा = ग़म पाये हुए हिस्से.

'साहिर' लुधियानवी

इन्क़लाब की आवाज़

मेरे जहां में समन ज़ार ढूँढने वाले
यहाँ बहार नहीं आतशीं बगूले हैं.
धनक के रंग नहीं—सुर्मई फ़िज़ाओं में
उफ़क़ से ता-ब-उफ़क़ फाँसियों के झूले हैं.
फिर एक मंज़िले ख़ूंबार की तरफ़ हैं रवाँ
वह रहनुमा जो कई बार राह भूले हैं.

बलन्द दावए-जम्हूरियत के परदे में
फ़रोगे महबस-ओ-ज़िन्दाँ हैं ताज़ियाने हैं.
बनामे अम्न हैं जंग-ओ-जदल के मन्सूबे
बशोरे-अद्ल तफ़ावुत के कारख़ाने हैं.
दिलों पे ख़ौफ़ के पहरे लबों पे क़ुफ़्ले-सकूत
सरों पे गर्म सलाख़ों के शामियाने हैं.

समन ज़ार = चंबेली के बाग़. आतशीं बगूले = आग के बवंडर, गर्म हवाएँ. उफ़क़ से ता-ब-उफ़क़ = क्षितिज से क्षितिज तक. ख़ूंबार = रक्त पूर्ण. फ़रोग़ = वृद्धि. महबस = कारागार. ताज़ियाने = कोड़े. जंग-ओ-जदल = लड़ाई, मार काट. अद्ल = न्याय. तफ़ावुत = असमानता, वर्ग भेद.

मगर मिटे हैं कभी जब्र और तशद्दुद से
वो फ़लसफ़े कि जिला दे गए दिमाग़ों को.
कोई सिपाह सितम पेशा चूर कर न सकी
बशर की जागी हुई रूह के अयाग़ों को.
क़दम क़दम पे लहू नज़्र दे रही है हयात
सियाहियों से उलझते हुए चराग़ों को.

रवाँ है काफ़लए-इरतक़ाए-इन्सानी
निज़ामे-आतिश-ओ-आहन का दिल हिलाए हुए.
बग़ावतों के दुहल बज रहे हैं चारों तरफ़
निकल रहे हैं जवाँ मिशअलें जलाए हुए.
तमाम अर्ज़-जहाँ खौलता समन्दर है
तमाम कोह-ओ-बयावाँ हैं तिलमिलाए हुए.

मेरी सदा को दबाना तो खैर, मुमकिन है
मगर हयात की ललकार कौन रोकेगा ?
फ़सीले-आतश-ओ-आहन बहुत बलन्द सही
बदलते वक़्त की रफ़्तार कौन रोकेगा ?
नए ख़्याल की परवाज़ रोकने वालो
नए अवाम की तलवार कौन रोकेगा ?

जब्र = ज़बरदस्ती. तशद्दुद = हिन्सा. जिला = चमक. अयाग़ = प्याला. इरतक़ा = विकास. निज़ाम = व्यवस्था. आहन = लोहा. दुहल = नगाड़े. अर्ज़ = धरती. कोह = पहाड़. परवाज़ = उड़ान. अवाम = जनता.

पनाह लेता है जिन महबसों की तीरा निज़ाम
वहाँ से सुबह के लशकर निकलने वाले हैं.
उभर रहे हैं फ़िज़ाओं में अहमरीं परचम
किनारे मशरिक़-ओ-मग़रिब के मिलने वाले हैं.
हज़ार बर्क़ गिरे लाख आंधियाँ उट्ठें
वो फूल खिलके रहेंगे जो खिलने वाले हैं.

तीरा निज़ाम = अंधेरी व्यवस्था. अहमरीं परचम = लाल झंडा. मशरिक़ = पूर्व. मग़रिब = पश्चिम. बर्क़ = बिजली.

अहमद रियाज़ (पाकिस्तान)

अदब की जागीर

साथियो हाथ बढ़ाओ कि हैं हम आज भी एक
कौन कर सकता है तक़सीम अदब की जागीर
कौन अफ़्कार की क़न्दील बुझा सकता है
कौन कर सकता है एहसास की शिद्दत को असीर

(२)

शह्र बाँटे गए तक़सीम हुईं गलियां भी
बुलबुल-ओ- गुल की मुहब्बत का फ़ुसूं ख़त्म हुआ
कितने चेहरे हैं जिन्हें देख न पाऊंगा कभी
कितनी आँखों की लताफ़त का फ़ुसूं ख़त्म हुआ

(३)

सुब्हे-आज़ादीये-नौ फूट चुकी है लेकिन
हाल-ओ-माज़ी के घिरौंदों में अँधेरा है वही
बर्क़े-ख़िरमन, कहीं कांटे, कहीं दस्ते-गुलचीं
फ़िक्रे-जानां, ग़मे-इन्सां, ग़मे- दुनिया है वही

अफ़्कार = विचारों, कल्पनाओं. असीर = क़ैदी. फ़ुसूं = जादू. सुब्हे-आज़ादिये-नौ = नई आज़ादी की सुबह. हाल = वर्तमान. माज़ी = भूत. बर्क़े ख़िरमन = खलियान पर गिरने वाली बिजली. दस्ते गुलचीं = फूल तोड़ने वाले का हाथ. फ़िक्रे जानां = प्रिया के लिये चिन्ता.

(४)

अब भी बदले नहीं आदाब जहांदारी के
अब भी इन्सान की परवाज़ में हायल है ग़ुबार
अब भी हैं गर्म हवादिस की हवा के झोंके
अब भी मौजों के तलातुम में छिपे हैं मंझधार

(५)

आज भी ज़ीस्त के दोराहे पे बैठे हैं उदास
मुश्तरक दर्द के मारे हुए घबराए हुए
हम न काफ़िर हैं, न मोमिन हैं, न अफ़्लाक नशीं
क़हत-ओ अफ़्लास के रौंदे हुए ठुकराए हुए

(६)

साथियो आओ अधूरे हैं अभी यह सपने
साथियो आओ अभी काम बहुत बाक़ी है
अपने बेदार तक़ाज़ों का फिर एलान करें
ज़िन्दगी अब भी हमें, सिर्फ़ हमें, तकती है

(७)

साथियो हाथ बढ़ाओ कि है हम आज भी एक
कौन कर सकता है तक़सीम अदब की जागीर
कौन अफ़कार की क़न्दील बुझा सकता है
कौन कर सकता है एहसास की शिद्दत को असीर

आदाब = नियम. जहांदारी = साम्राज्य. हवादिस = हादसों, दुर्घटनाओं. मुश्तरक दर्द = मिले हुए दर्द; वह दर्द और मुसीबतें जिन्हें हिन्दुस्तान के बँटवारे के बाद हिन्दुओं, मुसलमानों, सिक्खों को मिलकर उठाना पड़ा. मोमिन = मुसलमान. अफ़्लाक नशीं = आकाश पर रहने वाले, देवता या फ़रिश्ते. अफ़्लास = दारिद्रय.

'कैफ़ी' आज़मी

तिलंगाना *

ज़ईफ़ माएँ, जवान बहनें झुके हुए सर उठा रही हैं
मुलगती नज़रों की आँच में भीगी भीगी पलकें सुखा रही हैं
लहू भरी चोलियों, फटे आँचलों से परचम बना रही हैं
तरानए जंग गा रही हैं

सफ़ेद पलकों, खिंची हुई झुर्रियों में शोले मचल रहे हैं
जवां निगाहों, जवां दिलों से हज़ारों तूफ़ां उबल रहे हैं
भरे हुए दामनों में पत्थर घरों से बच्चे निकल रहे हैं
सब एक ही सम्त चल रहे हैं

चमक रहे हैं गठीले शानों पे फावड़े, बेल्चे, कुदालें
उड़ा रही हैं हवा में चिनगारियां तफ़ंगो की गर्म नालें
ये गोलियां बे झिझक लहू में जो बादशाहों के भी नहालें
ये गोफनें ताज जो गिरालें

ये ताजदारी ये शहयारी ज़मीन पर बार हो गई है
जफ़ा की ख़ूगर ग़रीब दुनिया जफ़ा से बेज़ार हो गई है
ज़मीं पे हर छावनी निगलने को आज तैयार हो गई है
कि भूक बेदार हो गई है

शानों = कन्धों. [तफ़ंगों = बन्दूक़ां. गोफनें = एक तरह का हथियार. ख़ूगर = अभ्यस्त.

* तिलंगाना के किसानों पर रज़ाकारों ने बड़े ज़ुल्म ढाए थे. उसी मौक़े पर यह कविता कही गई.

अवाम का इज़तराब है ये अवाम का पेच-ओ-ताब है ये
सितम से दबना है ग़ैर मुमकिन कि हर सितम का जवाब है ये
समझते हो सत्तियागरह इसको ? इरतक़ा का अताब है ये
झुका दो सर इन्क़लाब है ये

ये दोस्ती की मुहिम कहां तक ये जेहदे-क़ौल-ओ-क़रार कब तक
सुनेगा फ़रियाद अहले-ग़म की न जाने जागीरदार कब तक
रहेगी दस्ते-जमूद में यूं ही नब्ज़े-लैलो निहार कब तक
करेगा वक्त, इन्तज़ार कब तक

हयात अँगड़ाई लेके अपना निज़ाम अब खुद सँभालती है
जली हुई बस्तियों पे तामीर अक्स शहरों का डालती है
रविश रविश की शगूफ़ाकारी चमन को सांचे में ढालती है
कली कली रंग उछालती है

उभरती इन्सानियत की तौहीन है तशद्दुद की हुक्मरानी
जबीने-तारीख़ पर है इक दाग़ आज की मुतलक़ुलअनानी
तुम्हारे हमराह फ़तह-ओ-नुसरत तुम्हारे क़दमों में कामरानी
मुजाहिदो वह है राजधानी

इज़तराब = बेचैनी, तड़प. इरतक़ा = विकास, उन्नति. अताब = कोप. मुहिम = संघर्ष जेहद = कोशिश, खींचा-तानी. दस्ते जमूद = जड़ता के हाथ. लैलो निहार = दिन और रात. शगूफ़ाकारी = कलियों का खिलना. तशद्दुद = हिन्सा. मुतलक़ुलअनानी = निरंकुशता. नुसरत = विजय. मुजाहिदो = धर्म, अधिकार और सत्य के लिये लड़ने वालो.

'बिस्मित' शेखूपुरी

साजन रूप पुजारी निकले

भौंरे ने भी कहा था ऐसा
पी को जान न अपने जैसा
लोग जिन्हें कहते थे योगी
अक्सर वह संसारी निकले
साजन रूप पुजारी निकले

मैंने समझा प्यार करेंगे
औरों का न ध्यान धरेंगे
जितने नैन थे भोले भाले
उतने अत्याचारी निकले
साजन रूप पुजारी निकले

प्रेम पुजारी कहने वाले
प्रेम नगर में रहने वाले
दो दिन इस दुनिया में आकर
जोबन के ब्योपारी निकले
साजन रूप पुजारी निकले

अब्बास अहमद 'अब्बास'

ग़ज़ल

क्या जानिये क्या कुछ दिखलाए सीने की दुखन आँखों की जलन
रुसवा भी हुए शहरों शहरों कम हो न सकी पर दिल की लगन
ख़्वाबों की हसीं दुनिया पे भी है बीते हुए लमहों का साया
तड़पाती है दिल को रह रह कर नाकाम तमन्नाओं की चुभन
हम यों तो गवारा कर लेते ए जाने-तमन्ना दूरी भी
बेचैन मगर कर देती है रह रह के तेरी ख़ुशबूए-बदन
अब इसकी शिकायत क्या और क्यों तुमको ही तो था तज़ईं का जुनूं
ए अहले-चमन इस कोशिश में ख़ुद तुमने उजाड़ा अपना चमन
अब दिल में कोई ख़्वाहिश ही नहीं अब हमको किसी का ग़म भी नहीं
दुनिया से हुए हैं बेगाने बस देख चुके दुनिया का चलन
यों कहने को लाखों बातें हैं अशआर में जो ढल सकती हैं
जिस बात का दिल से रब्त नहीं वह मेरा नहीं मौज़ूए-सुख़न
वह आम के बाग़ और ठंडी हवाएं साँवले चेहरे गोरे बदन
उस देस की यादें डसती हैं जो देस नहीं अब अपना वतन

तज़ईं = सँवारने. मौज़ू = विषय. रब्त = सम्पर्क.

जमीलुद्दीन 'आली'

बिखरी पंखड़ियां

धरती से आकाश पहुँचते धनक ने क्या बल खाए
कोई देखे कोई सोचे मन सब का लहराए

तह में भी है हाल वही जो तह के ऊपर हाल
मछली बच कर जाय कहाँ जब जल ही सारा जाल

'आली' अब के कठिन पड़ा दीवाली का त्योहार
हम तो गए बड़े छैला बनकर भैय्या कह गई नार

घनी घनी ये पलकें तेरी ये गरमाता रूप
तू ही बता ओ नारि मैं तुमको छांव कहूं या धूप

मैंने कहा कभी सपनों में भी शक्ल न मुझको दिखाई
उसने कहा भला मुझ बिन तुझको नींद ही कैसे आई

नार = नारी.

'शमीम' किरहानी

रसमसाहट

दिल के गोशों में एक तमन्ना रंगीं शमएँ जला रही है
दिल की रग रग में खून की रौ मीठे सरगम बजा रही है
जो बर्ग है ताल दे रहा है जो मौज है गुनगुना रही है
सूरज बरसा रहा है सोना शबनम मोती लुटा रही है
चलते चलते ठिठक रहा हूँ कोई आवाज़ आ रही है
धुँदले धुँदले से आँसुओं में तसवीर सी मुस्करा रही है
मुँह बन्द कली खिली नहीं है खिलने ही को रसमसा रही है
रह रह के हवाए-सैरे-सहरा दर शौक़ का खटखटा रही है
भौंरा रस पी रहा है छिप कर तितली खुशबू चुरा रही है
मस्ती ज़ुल्मत की वादियों में सीमीं तारे लुटा रही है
फ़र्शे उम्मीद पर तमन्ना कच्ची कलियां बिछा रही है

सुनसान गली में खिलखिला कर
हँसने की सदा सी आ रही है

हवाए-सैरे-सहरा = जंगल की सैर करने की इच्छा. दर = द्वार. ज़ुलमत = अंधकार. सीमीं = रुपहले.

परोपकार 'पयाम'

छोटी साइकिल वाली

लहराती कतराती जाती
उम्र कोई बारह चौदह की
बालों को खोले लहराए
लाल फ़राक सुनहरे मोज़े
घंटी देती चौंकाती है
गुज़र गई तेज़ी से ऐसे
बंगलों में होकर जाती है
उजली उजली चौड़ी सड़कें
सड़कों पर तेज़ी से रवां है
मुड़ी तो लचकी क़ौस क़ज़ह सी
डूब गई बंगले में जाकर
फूलों के तख़्तों पर पहुँची
घूम के तेज़ी से मुड़ती है
मुड़ी साइकिल कलब में पहुँची
वो देखो अब कितनी हसीं है

सन सन साइकिल वाली जाती
भोली भाली बहकी-बहकी
शाम घटा का रंग चुराए
दूर सड़क पर कौंधा लपके
उड़ती हुई कहां जाती है
चमक गई चपला-सी जैसे
बंगलों से होकर आती है
नीची ऊंची तिरछी सड़कें
कभी यहां है कभी वहां है
बढ़ी तो झूमी मस्त घटा-सी
निकल पड़ी फिर लान पे आकर
फ़ौवारे के गिर्द भी घूमी
वो देखो तितली उड़ती है
कलब से निकली सड़क पे चमकी
हाथों में हैंडिल भी नहीं है

क़ौस क़ज़ह = इन्द्र धनुष.

हैंडिल अगर निकल जाए तो पहिया कहीं फिसल जाए तो
ये जाती है वो जाती है हवा में नागिन लहराती है
लम्बे पेंगों झूल रही है ज़ालिम खुदको भूल रही है
जीवन इतना हसीं नहीं है इसको इसका यक़ीं नहीं है
बचपन और जवानी बाहम देते हैं आलम पर आलम

काश ! कोई ये राज़ बतादे
इसको मेरी नज़्म सुनादे

बाहम = साथ, परस्पर.

'मजरूह' सुल्तानपुरी

क़ाफ़िले

है चार सम्त ख़ल्क़ का हजूमे-बेकरां रवां
मिलों से वह उठा धुआं
यह सहमे सहमे क़ाफ़िले यह खोए खोए कारवां
मैं क्यों खड़ा हूं राह में

फ़ज़ाए बाम-ओ-दर पे आतशीं ग़ुबार छा गया
नज़र को ग़श-सा आ गया
कोई निज़ार-ओ-नातवां सड़क पे लड़ खड़ा गया
मैं क्यों खड़ा हूँ राह में

जलीं वह शमएं, मुनइमों की अंजुमन सँवर गई
सियाही और निखर गई
यह कौन थी जो यों मेरे क़रीब से गुज़र गई
मैं क्यों खड़ा हूं राह में

सिमट के हर मकां में रूहे-इज़्तराब सो गई
फ़ज़ा ख़मोश हो गई
अभी जो शमअ जल रही थी तीरगी में खो गई
मैं क्यों खड़ा हूं राह में

हजूमे बेकरां = अनगिनत भीड़. मुनइमों = अमीरों. तीरगी = अंधकार.

अहमद नदीम क़ासिमी

चली मशीन चली

एक बटन कुछ कह कर तड़पा, सारा ढांचा जागा
चक्कर की रफ़्तार चुराकर पुर्ज़ा पुर्ज़ा भागा
रेशे रेशे रस दौड़ा कर चटकी एक कली
चली मशीन चली

लोहा जब लोहे को काटे ठना ठना ठन बोले
उचक उचक कर चोटें मारे शोलों के पर तोले
"मिल" के चारों खूंट बिखेरे तानें भली भली
चली मशीन चली

हम तपते फ़ौलाद के टुकड़े इक रौ में दौड़ाएं
जैसे एक क़तार में सजकर दिये दमकते जाएं
जैसे चांद बहे झरने में बन कर डली डली
चली मशीन चली

धात के इक तूदे को हमने गाला और उछाला
अपनी जवानी देकर हमने उसका रंग उजाला
एक किया जब खून पसीना तब यह कील ढली
चली मशीन चली

रौ = लहर. तूदा = ढेर. गाला (पंजाबी शब्द) = गलाया.

कील ढली तो सोना बनकर मिल-मालिक तक पहुँची
अपनी उजरत बढ़ते बढ़ते आखिर दिक़ तक पहुँची
जल को जगाने वाली मछली तेल में आन तली
चली मशीन चली

हम मज़दूर, किसान, क़ुली, शायर, मुन्शी, हरकारे
जग की रौनक़ हम से, हम ही जग में फिरें बिचारे
बिकती है सौ रूप बना कर मेहनत गली गली
चली मशीन चली

इक धुएँ से उड़ा शरारा, इक चक्कर में घूमा
इस चक्कर ने धन-दौलत के अंबारों को तूमा
अंगारों से फूल झड़े-कुछ ऐसी आग जली
चली मशीन चली

माज़ी की "तारीख़" का सारा धोका आँखें झपके
दुनिया भर के मेहनत कश इक लश्कर बन कर लपके
कोइ पुकारे "हैया हैया"—कोई "अली अली"
चली मशीन चली

एक बटन कुछ कह कर तड़पा, सारा ढांचा जागा
चक्कर की रफ़्तार चुरा कर पुर्ज़ा पुर्ज़ा भागा
रेशे रेशे रस दौड़ा कर चटकी कली कली
चली मशीन चली

उजरत = मज़दूरी. शरारा = चिनगारी. तूमा = किया.

तख्त सिंह

लाल सवेरा

वह देखो ! गुलरंग उफ़क़ से
झांका लाल सवेरा
छूट चली हैं रात की नब्ज़ें
कांपा घोर अँधेरा
मन-मन में है जीवन भर के
सुख-सपनों का डेरा
लहराएगा पल दो पल में
हर जा सुर्ख़ फरेरा
वह देखो ! गुलरंग उफ़क़ से
झांका लाल सवेरा

(२)

एकाएकी फूट पड़ेंगे
नूर के सीमीं धारे
शोले बन कर नाच उठेंगे
चर्ख़ के ठंडे तारे
हो जाएंगे राख झुलस कर
सदियों के अंधियारे
उठने को है जीवन पथ से
दुख का टांडा-डेरा
वह देखो ! गुलरंग उफ़क़ से
झांका लाल सवेरा

(३)

वह कांटों की शमशीरों को
देख के गुल गुर्राए
वह नाच उट्ठे ख़ाक के ज़र्रे
वह गुन्चे मुस्काए
वह भागे किरनों के आगे
ढलती रात के साए
वह आज़ादी के सूरज ने
हर सू नूर बिखेरा
वह देखो ! गुल रंग उफ़क़ से
झांका लाल सवेरा

गुलरंग उफ़क़ = लाल क्षितिज. फरेरा = झंडा. सीमीं = रुपहले. हर सू = हर तरफ़.

(४)

एका एकी करवट लेकर
वह मेहनत कश जागे
वह सैलाब-सा उमडा हर सू
वह ज़ालिम उठ भागे
काँप रहे हैं धनियों के दिल
मज़दूरों के आगे
वह लाखों भूकों ने मिलकर
महलों को जा घेरा
वह देखो ! गुलरंग उफ़क़ में
झांका लाल सवेरा

(५)

धरती पर सबका हक़ होगा
सुख के दिन आएंगे
मेहनत कश अपनी मेहनत का
ख़ुद ही फल खाएँगे
आज़ादी के मधुर तराने
सब मिल कर गाएंगे
रहगीरों को छू न सकेगा
कोई चोर लुटेरा।
वह देखो ! गुलरंग उफ़क़ से
झांका लाल सवेरा

मुहम्मद सफ़्दर

किश्तियां और रेत

(१)

यहां सैकड़ों साल से कहकशां के
सितारों की मानिन्द, मौजों
पे बिखरी हुई किश्तियां, पाल खोले
गुज़रती रही हैं
जहां धान की खेतियों के किनारे
मधुर मस्त दरिया बहे जा रहा है
कभी उस की तारीक चादर पे चलते हुए
किसी नाव के चप्पुओं पर
धनुष खेलती है
कभी चाँदनी नाचती है
दरख़्तों के घेरे
में खोए हुए गाँव तक इस की मद्धिम तरंगों
की आवाज़ जाती नहीं है
मगर सैकड़ों साल से किश्तीबानों
का गीत इस फ़िज़ा की घनी ख़ामुशी में
छलकता रहा
गूंजता ही रहा
गूंजता ही रहेगा।

कहकशां = आकाश गंगा. किश्तीबानों = मल्लाहों.

(२)

सितारों की शमएं
खमोशी के साए, लिये शाम आई
सियह पानियों पर
हवा की जगाई हुई सिलवटें काँपती हैं
अभी धान के सरसराते हुए खेत कुहरे में खो जायंगे
किनारों पे जंगल में दुबके हुए गाँव सो जायंगे
हर एक चीज़ सो जायगी
मगर किश्ती बानों का गीत इस घनी खामुशी में
गगन के तले गूंजता ही रहेगा.

(३)

सरकते धारे
मचलते धारे के उस किनारे
बसे हुए शहर की पुरानी
इमारतों की क़दीम आँखों
ने सैकड़ों साल किश्तियों को गुज़रते देखा है
और उनके कानों ने सैकड़ों साल से सुनी हैं
यही सदाएं, बुलन्द तानें
ये किश्ती बानों का गीत स्टीमरों के तारीक शोर में भी
छलक रहा है.
उमंड रहा है

(४)

गरजते धारे को चीरती किश्तियों के कड़ियल चलाने वालों
के बाजुओं में वही थकन से भरा सुकूं है
जो तेज़ दरिया की मस्त गम्भीर चाल में है
सियाह जिस्मों के गर्म उमँडते हुए लहू में
वही झटक है जो तुन्द मौजों के वहशियाना निरित्य में हैं
यह नाव वाले
उन्हीं समुन्दर के शहसवारों के पूत हैं
जिनको, सदियां गुज़रीं, कि तम्रलिप्ती की गोदियों से
सफ़ेद पालों की राजहंस ऐसी किश्तियों पर
निकल के नीले उफ़क़ को छूने चले गए थे
उन्हीं के शंखों की गूंज से सैकड़ों बरस की
ख़मोशियां थरथरा रही हैं
उन्हीं के जयकारों से अभी तक
सियह घने जंगलों में खोए
तबाह कम्बोज के शिकस्ता खंडहर लरज़रहे हैं

(५)

सत्हे दरिया पे हैं मौजों के नक़ूश
नहीं दरिया नहीं—यह सिलसिलए मौज नहीं
रेत पर बन के बिगड़ती है हवा की तहरीर

सुकूं = शांति, आराम. निरित्य = नृत्य, नाच. तम्रलिप्ती = ताम्रलिप्ति, में एक स्थान. नुक़ूश = रेखाएं, चिन्ह.

अरक़ आलूदा जबीनों पे शफ़क़ की बारिश
और कोहसार में बल खाती हुई राहगुज़र
यहां पानी नहीं और राहगुज़र—
इब्तदा ? इन्तहा ? इक मौजे ख़यालात का गुमगश्ता राग

रेत उड़ती है कभी तेज़ हवा चलती है
ख़ारज़ारों में हवा—ख़ुश्क दरख़्तों में हवा
सूने माबद में हवा
मौत के राग धुंदलके में बिखर जाते हैं
दूर से माओं के नौहे की सदा आती है
यहां पानी नहीं यह सिलसिलए मौज नहीं
रेत पर बन के बिगड़ती है हवा की तहरीर

ख़ुश्क बादल कभी कोहसारों में
ख़ुश्क चेहरे सुए गरदूं निगरां
ख़ुश्क बादल भी गरजते तो हैं— बरसेंगे कभी ?
गूँज की लर्ज़िशें, बेआब चटानों में रवां
गूँज की लर्ज़िशें हैं, पानी की आवाज़ नहीं
यहां पानी नहीं, यह सिलसिलए मौज नहीं
रेत पर बन के बिगड़ती है हवा की तहरीर

अरक़ आलूदा जबीनों = पसीने से भीगे हुए ललाटों. शफ़क़ = लालिमा. गुमगश्ता = खोया हुआ. ख़ारज़ारों = कांटों की झाड़ियों. माबद = पूजा या इबादत करने का स्थान. सुए गरदूं निगरां = आकाश की ओर देखते हुए. लर्ज़िशें = लरज़ना, कंपन.

कभी आएगी यहां दश्त में पानी की सदा ?
कभी आएगी यहां दश्त में पानी की सदा ?
ए खुदा ! ए मेरे अजदाद के रब
ए मेरे अजदाद के रब !

(६)

तने हुए-चरचराते रस्से
लरज़ते आसाब
तुन्द सांसें
झुके हुए जिस्म, कांपते थरथराते बाज़ू.

यही ख़मोशी-यही मशक़्क़त
सदा ख़मोशी-सदा मशक़्क़त
सदा सुहागिन ज़मीं के बेटों की आज तक है यही कहानी
यही है क़िस्मत.

यही रहेगी, सदा रहेगी
नहीं, दहकता लहू शफ़क़ है
जो शाम के नीले आसमानों पे खिल रही है
यही पसीने के सर्द क़तरे सिजिल सितारे हैं
सुबह की मांग के सितारे.

दश्त = जंगल. अजदाद के रब = पूर्वजों के पालन हार. आसाब = रग-पट्ठे. सिजिल = सजे हुए.

'वामिक़' जौनपुरी

"सूखे हुए बेले"

तुमने सूखे हुए बेले भी कभी सूंघे हैं ?
उनको मसला न करो
कितनी आज़ुर्दा मगर भीनी महक देते हैं
उनको फेंका न करो
ख़ाक में लुथड़े हुए चेहरों को समझा भी करो
सिर्फ़ देखा न करो
हाथ और पैर के ज़ख्मों का मदावा भी करो
सिर्फ़ छेड़ा न करो
तुमने सूखे हुए बेले भी कभी सूंघे हैं ?

आज़ुर्दा = दुखी हुई, उदास. मदावा = दवा, इलाज.

'मख़मूर' जालन्धरी

मेट्रो होटल

खुश तरतीबी—————लूट खसोट

फूलों-पत्तों का दरवाज़ा और मेज़ों पर हैं गुलदस्ते
दरियों पर क़ालीन रँगीले सोफ़ों पर कमख़्वाब के गद्दे
दूर नशिस्तों तक जाने के टेढ़े मेढ़े हैं कुछ रस्ते
दो पल इस माहौल के अन्दर महँगे दामों भी हैं सस्ते

गहमा गहमी—————रस्मी भीड़

दो सौ मेज़ें, छै सौ सोफ़े बाहर सौ मेहमां आए हैं
सब्ज़ी मंडी में वीरानी हर सब्ज़ी का भाव है तेज़
जनता भूकी रह के भी खुश है आज उस के परधान आए हैं
चिकनी-चुपड़ी तक़रीरों के उसके लिये पकवान आए हैं

लफ़्फ़ाज़ी का—————भाषन नाम

अपने अनदाता जगदाता देस में है ख़ूराक का तोड़ा
दूध और फल, मछली और अंडों को आटे का बदल बना लो
सच्चे सेवक का नारा हो—करो ज़ियादा, खाओ थोड़ा
और भाषन में बोल रहा है भुने हुए चूज़ों का जोड़ा।

नशिस्तों = बैठकों. माहौल = वातावरण. लफ़्फ़ाज़ी = शब्दाडंबर.

बैरे —————— बावर्दी तज़लील

जो कुछ उनसे माँगा जाए भाग दौड़ कर ले आते हैं
पानी तक लाते हैं सजाकर ऐसी नफ़ासत दिखलाते हैं
नज़र बचाकर रख सकते हैं जेबों में जो चीज़ भी चाहें
लेकिन घर में प्याज़ की गाँठें रोटी पर रख कर खाते हैं

संगीं पहरा—————— रोब-ओ-जलाल

सूखे मुंह और मैले कपड़े झांक रहे हैं दीवारों से
उनकी तरफ़ सोंटों, संगीनों और बन्दूक़ों का रुख़ कर दो
रक्खो हंगामे का ख़दशा ऐसे वहशी ख़ूँख़्वारों से
हर्गिज़ ग़ाफ़िल होके न बैठो टूटे, हारों, दुखियारों से

बेदारी —————— बेबाक जलूस

नारे लगाते पागल लड़के जुलूस हरे मीने नहीं देते
जाने इनको क्या मिलता है डाल के यों ही रंग में भंग
अपने नेताओं को सुख से चाय तलक पीने नहीं देते
जाओ जहां भी आजाते हैं यह लड़के जीने नहीं देते

लड़के —————— हैं भी तो नादान

इतना भी इदराक नहीं आख़िर सरकार मचल सकती है
नीचों के क्यों दोस्त हैं बनते भूकों का क्यों साथ हैं देते
सर पर लाठी पड़ सकती है दिल पर गोली चल सकती है
ताक़तवर सरकार कहीं अपनी नीयत से टल सकती है

ख़दशा = आशंका, डर. बेबाक = निडर. इदराक = समझ. बावर्दी तज़लील = वर्दी पहने हुए अपमान.

अब्दुल मजीद भट्टी

गीत

बेटी गांव भर की बेटी
बेटी सब की लाज
नगर-नगर में कौड़ी-कौड़ी बेटी बिक गई आज
आया अपना राज

अब तक मेरे रिश्ते क्या थे
बेटी बहन और मां
रिश्ते गिनवाते-गिनवाते लुट गई मेरी लाज
आया अपना राज

खेती बाड़ी महल दो महले
सब कुछ हो गया राख
खाती-पीती दुनिया हो गई मुफ़्लिस-और मोहताज
आया अपना राज

वो सतजुग था ये कलजुग है
सब से कहते-कहते
हम किस जुग में आ पहुंचे हैं ? कहते आए लाज
आया अपना राज

बलराज कोमल

अकेली

अजनबी ! अपने क़दमों को रोको ज़रा
जानती हूँ तुम्हारे लिये ग़ैर हूं
फिर भी ठहरो ज़रा
सुनते जाओ ये अश्कों भरी दास्तां
साथ लेते चलो ये मुजस्सिम फ़ुग़ां
आज दुनिया में मेरा कोई भी नहीं

मेरी अम्मी नहीं
मेरे अब्बा नहीं
मेरी आपा नहीं
मेरे नन्हे से मासूम भैय्या नहीं
मेरी असमत की मग़रूर किरनें नहीं
वह घरौंदा नहीं जिसके साए तले
लोरियों के तरन्नुम को सुनती रही
फूल चुनती रही
गीत गाती रही
मुस्कराती रही
आज कुछ भी नहीं

मुजस्सिम फ़ुग़ां = साकार कराह. असमत = सतीत्व. मग़रूर किरनें = अपने ऊपर घमंड करने वाली चमक. तरन्नुम = तराने, संगीत.

आज कुछ भी नहीं.
मेरी नज़रों के सहमे हुए आइने
मेरी अम्मी के, अब्बा के, आपा के, और मेरे नन्हे से मासूम भय्या
के ख़ूं से हैं दहशत ज़दा
आज मेरी निगाहों की वीरानियां चन्द मजरूह यादों से आबाद हैं
आज मेरी उमंगों के सूखे कँवल मेरे अश्कों के पानी से शादाब हैं
आज मेरी तड़पती हुई सिसकियां एक साज़े शकस्ता की फ़रियाद हैं
और कुछ भी नहीं
भूक मिटती नहीं
तन पे कपड़ा नहीं
आस मादूम है
आज दुनिया में मेरा कोई भी नहीं
आज दुनिया में मेरा कोई भी नहीं

अजनबी ! अपने क़दमों को रोको ज़रा
सुनते जाओ ये अश्कों भरी दास्तां
साथ लेते चलो ये मुजस्सिम फ़ुग़ां
मेरी अम्मी बनो,
मेरे अब्बा बनो,
मेरी आपा बनो,
मेरे नन्हे से मासूम भैया बनो
मेरी अस्मत की मग़रूर किरनें बनो
मेरे कुछ तो बनो !
मेरे कुछ तो बनो !!
मेरे कुछ तो बनो !!!

मजरूह = घायल. साज़े शकस्ता = टूटे हुए साज़. मादूम = ग़ायब.

मसऊद अख़्तर 'जमाल'

किसानों का इन्क़लाबी गीत

यह धरती, यह जीवन-सागर, यह संसार हमारा है

अमृत बादल बन के उठे हैं परबत से टकराएंगे
खेतों की हरियाली बनकर छवि अपनी दिखलाएंगे
दुनिया का दुख सुख अपना कर दुनिया पर छा जाएंगे

हम ख़ुद ही तक़दीर हैं अपनी अब अपना ही सहारा है
यह धरती, यह जीवन-सागर, यह संसार हमारा है

दुनिया अब चोला बदलेगी जीवन रंग दिखाएगा
मिट्टी अब सोना उगलेगी बादल हुन बरसाएगा
मेहनत पर है जिसका भरोसा मेहनत का फल पाएगा

अपने ही कस बल का समुंदर वक़्त का बहता धारा है
यह धरती, यह जीवन-सागर, यह संसार हमारा है

सुंदर सपनों के घूँघट से आशा रूप दिखाती है
अपनी ही आवाज़ की लय पर सारी दुनिया गाती है
तलवारों की तेज़ चमक में बिजली-सी लहराती है

एक ही वार में अब ए साथी दुश्मन से छुटकारा है
यह धरती, यह जीवन-सागर, यह संसार हमारा है

इमरान अन्सारी

ये कैसे कहूं

ये कैसे कहूं ए जाने चमन
आज़ाद नहीं है अपना वतन
भूके तो अभी तक भूके हैं नंगे हैं अभी तक लाखों बदन

मैख़ाना वही, पैमाने वही
ऐवान वही, काशाने वही
आसार वही, वीराने वही
अफ़लास के ताने बाने वही
पिन्दार वही, दीवाने वही
जमशेद वही, जमख़ाने वही
कुछ साक़ी ने चोला बदला है कुछ रिन्दों ने बदले पैराहन !

एहसास वही, जज़बात वही
आकाश वही, दिन रात वही
है ऊंची नीची ज़ात वही
आलाम वही आफ़ात वही

पिन्दार = घमंड. जमशेद = ईरान का बहुत बड़ा बादशाह. जमख़ाना = जमशेद का महल और दरबार. रिन्दों = शराब पीने वालों. पैराहन = कपड़ा लत्ता, भेष. आलाम = ग़म, दुख. महकूमी = ग़ुलामी, परतंत्रता.

महकूमी के सदमात वही
है पर्दे के पीछे हात वही
जो होली थी वो होली है, हैं खून में डूबे गंग-ओ-जमन !

ज़रदार वही, ख़ूंख़्वार वही !
हैं चोरों के बाज़ार वही
सदियों के इजारादार वही
ऐयार वही, मक्कार वही
बेकार मगर पुरकार वही
हों जिन पे खुदा की मार वही
जीने को नहीं इक नाने-जवीं, मरने को नहीं दो गज़ भी कफ़न !

है तख़्त नया, पर ताज वही
राजे तो नए हैं, राज वही
जो कल तक था, है आज वही
जमहूर के काम-ओ-काज वही
ताख़्त वही, ताराज वही
मफ़्लूक वही मोहताज वही
रोना है यही फिर रोते हैं, क्यों आज नहीं हम खन्दा दहन !

जब वो भी वही हैं हम भी वही
फिर क्यों न रहे दम ख़म भी वही
बाग़ी भी वही बरहम भी वही
हम में है अभी तक दम भी वही

गंग-ओ-जमन = गंगा-जमुना. नाने जवीं = जौ की रोटी. ताख़्त और ताराज = लूटमार, बरबादी. खन्दा दहन = हँसते हुए.

सुरदरपन के सरगम भी वही
मन मंदिर में चमचम भी वही
ये ज़ुल्मत भी छँट जाएगी, है दिल में हमारे चंद्र किरन !
बदलेगा ज़माना बदलेगा उम्मीद का क्यों छोड़ें दामन !!

जमील मलिक, पकिस्तान

गज़ल

छोड़ो भी नफ़रत की बातें आओ कोई काम करें
मुल्कों मुल्कों अम्न-ओ-मुहब्बत के अफ़्साने आम करें

वक़्त की ज़िन्दा क़द्रें हमसे क़ुरबानी की तालिब हैं
आज ये अपना काम नहीं है ज़िक्रे-मए-गुलफ़ाम करें

हम अपने आदर्श की ख़ातिर जान भी अपनी दे देंगे
आपको इसकी फ़िक्र ही क्यों हो आप हमें बदनाम करें

आकाशों पर रहने वाला धरती पर कब आता है
कब तक ढूंढें उसका सहारा आप ही अपना काम करें

हमको तो मैदान में आकर तूफ़ानों से लड़ना है
ज़ुल्फ़ों की ठंडी छाँवों में आप अभी आराम करें

क़द्रें = मान. ज़िक्रे-मए-गुलफ़ाम = गुलाबी शराब का ज़िक्र.

'अफ़सर' आज़री, पाकिस्तान

ग़ज़ल

ज़ुल्मत से सवेरा फूटेगा, पस्ती से उभारे उभरेंगे
कुछ और उमीदें टूटेंगी, कुछ और सहारे उभरेंगे
रूहों के सरकश नग़्मों से जब सुर्ख़ सवेरा फूटेगा
नींदों के माते जागेंगे, फ़ाक़ों के मारे उभरेंगे
किश्ती की तलब कैसी साथी मल्लाह से क्या लेना है हमें
मौजों के भरोसे डूबे हैं, तूफ़ां के सहारे उभरेंगे
वो दिन भी कोई अब दूर नहीं, वो वक़्त भी आने वाला है
आकाश से शोले बरसेंगे, धरती से शरारे उभरेंगे
कुछ और निगाहें सँवरेंगी, कुछ और इरादे सुलझेंगे
कुछ और शुआएँ निखरेंगी, कुछ और सितारे उभरेंगे
औक़ात की अंधी मौजों ने, शिकनों में लपेटा है जिनको
गिर्दाब के ख़ूनी आँचल पर इक दिन वो किनारे उभरेंगे
इन मुर्दा मुर्दा रूहों पर सदियों से ग़ुलामी छाई है
ए दोस्त ! झिंझोड़ ज़रा इनको, ये लोग उभारे उभरेंगे

शरारे = चिनगारियां. गिर्दाब = भँवर.

हबीब तनवीर

मां

मां !
मैं तेरी हालते ज़ार से बेख़बर तो नहीं हूँ
तेरा नूरे नज़र हूँ
तेरा ज़ख़्मे जिगर तो नहीं हूँ
सैदे-अफ़्लास हूं
मायले कर्र-ओ-फ़र तो नहीं हूँ
मैं, कि लड़ता हूँ ज़रदारियों के ख़िलाफ़
मैं गदाए-दरे-अहले ज़र तो नहीं हूं
आज बेबस हूँ और सख़्त मजबूर हूँ
बे हुनर तो नहीं हूँ
तेरी नज़रों से मैं दूर हूं
पर तेरे हाल से बेख़बर तो नहीं हूं.

साज़िशें हो रही हैं
सारी दुनिया के ताजिर
डाकुओं के गिरोह
सर से सर जोड़ कर देख सरगोशियां कर रहे हैं

सैदे अफ़्लास = ग़रीबी का शिकार. कर्र-ओ-फ़र = शान और घमंड और दिखावा पसन्द करने वाला. गदाए-दरे-अहले-ज़र = अमीरों के दरवाज़े का भिखमंगा.

फेंक कर चन्द डालर के दाने
और फैलाके इक जंग का दाम

मज़दूरों की बोटियों से

झोलियां भर रहे हैं
आज ये सब क़दम जोड़ कर
अपने हाथों में रेशम के फन्दे लिये
क़ातिलाना इरादों से मेरी तरफ़ बढ़ रहे हैं
और तेरी तरफ़ बढ़ रहे हैं
तू, कि मां जिसको कहती है दुनिया
कोख से जिसकी शायर, कलाकार
दीदावर, अहले-दानिश, जरी दिल, सिपाही जनम लेते हैं
तेरे आग़ोश, अम्न-ओ-मसर्रत का गुलशन
ज़िन्दगी की बहारों का मस्कन, तेरी गोद है.

× × × ×

और ये दो चार ज़र के ग़ुलाम
सिर्फ़ दो चार सिक्कों की ख़ातिर
नग़म-ओ-शेर के मस्कनों को
राहत-ओ-अम्न के गुलशनों को
फूंक देने पे आमादा हैं
नन्हे मासूम बच्चों
जवां साल माओं की नन्ही बहारों

हसीं ख़िरमनों को

जंग की आग में

दाम = माया जाल. जरी दिल = बहादुर दिल वाले. आग़ोश = गोद.

झोंक देने को बेताब हैं
फिर मैं ख़ामोश क्योंकर रहूँ ?

× × × ×

मां !
मैं तेरी हालते ज़ार से बेख़बर तो नहीं हूँ
मैं तो क्या इक जहां अब तेरे हाल से बाख़बर है
सामराज और जागीरदारी के सर पर
आज जनता की तलवार है
देख तेरा लहू चूसने वाली सरमायादारी की गर्दन
आज जनता के हाथों में है
मां ! तेरा ख़्वाब
ख़्वाब ज़ूया की मां का
ख़्वाब हिन्दोस्तां का
ख़्वाब सारे जहां का
आज पूरा हुआ चाहता है

× × × ×

हर तरफ़ से किसान उठ रहे हैं
और मज़दूर के लश्करों को
मां ! तेरी बेटियां, तेरे बेटे
ईस्तालीन और माओज़े के
अब मेरी राह सूनी नहीं है
दम ब दम सुर्ख़-ओ-रंगीं उफ़क़ से

हर तरफ़ से अवाम आ रहे हैं
हर तरफ़ से सलाम आ रहे हैं
आज इन्सां के काम आ रहे हैं
सबके होंटों पे नाम आ रहे हैं
कारवां सुब्ह-ओ-शाम आ रहे हैं
सुब्हे नौ के पयाम आ रहे हैं

रात मैदान से लड़खड़ाती हुई भाग उठी है.

ज़ूया = रूस की एक बहादुर लड़की जिसे नाज़ियों ने क़त्ल कर दिया.
ईस्तालीन, माओज़े = रूस और चीन के जनतंत्र के नेता.

मसऊद अली 'जौक़ी'

झील के किनारे

कल सुब्ह को ए दोस्त दबे पाँव यहाँ से
चुपके से निकल जाएं किसी को न ख़बर हो

बस्ती से निकल कर किसी रस्ते को सिधारें
चलती हुई थम थम के जहाँ बादे-सहर हो

महके हुए जंगल पे अभी नींद हो तारी
हर चीज़ पे कुछ ख़्वाब के जादू का असर हो

आसूदा हनोज़ अपने नशेमन में हों तायर
जाती हुई कुछ रात हो, कुछ नूरे सहर हो

आँखें भी न खोली हों अभी "नींद परी" ने
सोया हुआ सब्ज़ा भी अभी ओस में तर हो

नम घास पे हम दोनों के क़दमों के निशाँ से
लहराई हुई दूर तक इक राह-गुज़र हो

जिस कुंज में ये राह-गुज़र ख़त्म हो जाकर
फ़िरदौस की इक झील वहां पेशे नज़र हो

आसूदा = निश्चिन्त. हनोज़ = अभी. तायर = चिड़ियां.

हँसती हों मचलती हुई, गाती हुई लहरें
लहरों में तरहदार कँवल झूम रहे हों

पानी पे हों सुर्ख़ाब के उड़ते हुए जोड़े
लड़ती हुई नर्कुल में ख़ुश अन्दाम चहे हों

गूँजे कभी उस पार कलंगों की सदाएं
झाड़ी में इधर मोर कहीं नाच रहे हों

और दूर, बहुत दूर, फ़सूं-रंग उफ़क़ पर
परवाज़ में भटकी हुई क़ाज़ों के परे हों

पैरों तले नौख़ेज़, हरी दूब बिछी हो
और दूब में तारों की तरह फूल खिले हों

जब चाहें जहाँ जाएं कभी दूब पे लोटें
चुपचाप कभी फूलों के झुरमुट में पड़े हों

संसार के दुख दर्द से आज़ाद हों दोनों
इन्सां के तख़ैयुल की पहुंच से भी परे हों

फ़सूँ-रंग = जादू से भरा हुआ. तख़ैयुल = कल्पना.

विश्वमित्र 'आदिल'

नये भिकारी का गीत

कितने आने जाने वाले
साए बनकर रूठ गए हैं
कितने दुख के काले दरिया
सूने रस्तों पर बहते हैं
कितने ही अनजाने नग़मे
बे गाए ख़ामोश हुए हैं
कितने सपने कितनी आहें
रौंदने वाले रौंद गए हैं

मुझ को इस से मतलब बाबा?
दे जा बाबा, कुछ तो दे जा!

मोहन, रूपा, हामिद, सुग़रा
कैसे सुन्दर फूल खिले हैं!
उनकी ख़ुशबूओं के बादल
पल पल छन छन घिर आते हैं
कितनी आँखें जाग उठती हैं
कितने ही लब मिल जाते हैं

मुझ को इससे मतलब बाबा?
दे जा बाबा, कुछ तो दे जा!

चांद सितारों की ये ज्योती
कहते हैं ऐसी बन्सी है
जिसकी डोर से बेबस होकर
जीवन की मछली लटकी है
डोर खिंचे तो आँसू ढलकें
ढील मिले तो नर्म हंसी है
सच है या है झूट ये सारा
मन में क्यों ये सोच पड़ी है

मुझको इससे मतलब बाबा ?
दे जा बाबा, कुछ तो दे जा !

तेरा जीवन मेरा जीवन
तू भूका तो मैं भी भूका
तू भिकमंगा मैं भिकमंगा
ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा
तेरा जब कुछ हो जाएगा
मेरा प्याला खो जाएगा

तब तक मेरी सुनले बाबा !
दे जा बाबा ! कुछ तो दे जा !!

'राही' मासूम रज़ा

अम्न किस के लिये ?

अम्न किसके लिये ?
क्या ट्रूमैन के वास्ते ?
एटली के लिये ?
फ़ारमूसा की छाती पे पाले हुए नाग के वास्ते ?
अम्न किस के लिये ?
साथियो !
अम्न तो उनके थक थक के मर जाने का दूसरा नाम है
अम्न मेरे लिये
कृश्न के वास्ते
जाफ़री के लिये
रोब्सन के लिये
आरागाँ और नरूदा की ख़ातिर हमें अम्न दरकार है
अम्न घर के लिये
बालकों के लिये
माओं के वास्ते
ताकि छाती का ख़ूँ
बे झिझक दूध बनता रहे

ताकि फिर ज़ेरे-तरतीब नस्ल
इन्तशार और ग़ारतगरी के ख़बीसों से, नफ़रत के आसेब से
सहम कर चीख़ने से परे
नन्हे हाथों से माओं की छाती दबाती रहे
गोया कहती रहे
"मां! हमें प्यार ही प्यार दरकार है"
जंग होगी तो ये नन्हे मुन्ने से हाथ
चिकनी मिट्टी के नन्हे खिलौने
काँप कर गिर भी सकते हैं और टूट भी सकते हैं
और जो ये गिर पड़े
तो हिमालय की ऊँचाइयों की क़सम
मां की छाती की रफ़अत को फिर कौन बतला सकेगा भला?
मन्नतें और माथे पे काजल के टीके उन्हें आज महफ़ूज़ रखने से
मजबूर हैं
उनको महफ़ूज़ रखने की ख़ातिर हमें अम्न दरकार है

अम्न राखी के ज़िन्दा दियों के लिये
जंग होगी तो ये रेशमी नर्म-ओ-नाज़ुक दिये कैसे जल पाएँगे?
काँपते हाथों में राखियों को संभाले हुए कितनी बहनें उफ़क़ की
तरफ़ बस तके जाएँगी
रहगुज़र पर निगाहें बिछाती चली जाएंगी

इन्तशार = अस्त व्यस्त. ख़बीसों = राक्षसों. आसेब = प्रेत. रफ़अत = ऊँचाई. उफ़क़ = क्षितिज रहगुज़र = रास्ते.

और भाई किसी ग़ार में होंगे या फिर किसी खोह में
अपने ज़ख़्मों को खाती हुइ चिंवटियों और अपने तअफ़्फ़ुन से
भी बेख़बर
और राखी के गुलरंग त्योहार से बेख़बर
अपनी बहनों के इस प्यार से बेख़बर
और राखी के नाज़ुक दिये
प्यारी बहनों की आँखों में तहलील हो जाएँगे
अश्क बन जाएँगे
आँसुओं और ज़ख़्मों को फूलों में तब्दील करने की ख़ातिर हमें
अम्न दरकार है

अम्न दरकार है
बूढ़ियों के लिये
शफ़क़तआमेज़ चेहरों की शिकनों में आबाद परियों के क़िस्सों की
ख़ातिर हमें अम्न दरकार है
बचपने और मासूम किलकारियों के लिये अम्न दरकार है
और आँगन के या एक कमरे के मा'नूस सन्नाटे और लालटेनों की
मोहतात सी
रोशनी और घरेलू फ़िज़ा के लिये अम्न दरकार है

अम्न दरकार है
क्वाँरियों के लिये
जँग होगी तो आँखो में जलते हुए क्वांर पन के मुक़द्दस दिये

तअफ़्फ़ुन = दुर्गन्ध. तहलील = घुल मिल जाना. शफ़क़त आमेज़ = ममता मय. मानूस = परिचित. मोहतात = मद्धिम. मुक़द्दस = पवित्र.

रहगुज़ारों में भटके हुए राहियों की तरह
थक के गिर जायँगे
लाँबी पलकों के बालू में छिप जायँगे
इन कुंवारे दिलों के लिये अम्न दरकार है

अम्न दरकार है
उस दुल्हन के लिये
जिसकी चादर की सुर्ख़ी में उसकी हया का हसीं रंग है
जिसकी पायल में हैं एक नई नस्ल की आहटें
जिसके नथ में नई ज़िन्दगी का जवाँ चाँद है
जिसके मलबूस में है शफ़क़
जिसके चेहरे में हुस्ने-सहर या ग़रूरे-सरे-शाम है
अम्न दरकार है उस दुल्हन के लिये

अम्न दरकार है
गाँव के वास्ते
ताकि बरसात की बूँदियाँ
खेतों में अपने पाऊँ के गहरे निशाँ और सोंधी महक को जगाती रहें
ताकि बैलों के खुर के निशाँ
खेतों को
एक दुल्हन की तरह चेत्ते ही रहें
और हवाओं की मचली हुई उंगलियाँ
ख़ोशों को गुदगुदाती रहें

मलबूस = लिबास. हुस्ने सहर = प्रभात-सौंदर्य

खेतों के इस मुक़द्दस तबस्सुम की ख़ातिर हमें अम्न दरकार है

अम्न दरकार है
शहर के वास्ते
ताकि सड़कों पे चलती हुई ज़िन्दगी
ताकि शामे-अवध
आग और ख़ून से मैली होने न पाए कभी

अम्न दरकार है
मन्दिरों के लिये
मसजिदों के लिये
वेद-ओ-क़ुरआन के वास्ते
सारनाथ और काशी की ख़ातिर हमें अम्न दरकार है
आज अजमेर के वास्ते अम्न दरकार है

अम्न दरकार है
चाँदनी रात के 'ताज' के वास्ते
आज अजन्ता की ख़तिर हमें अम्न दरकार है

अम्न दरकार है
कालिदास
सूरदास
मीर-ओ-ग़ालिब और एक़बाल-ओ-टैगोर के वास्ते
गोर्की के लिये
और ख़ैयाम के वास्ते

अम्न दरकार है
ज़िन्दगी के लिये
खेत मज़दूर के वास्ते
तालिबे-इल्म के वास्ते
मास्टर के लिये
शायरों के लिये
मुतरिबों के लिये

अम्न दरकार है
कोरिया के लिये
अपने प्यारे तिलंगाना के वास्ते अम्न दरकार है
ग़ाज़ीपूर और बलिया की ख़ातिर हमें अम्न दरकार है
कुर्रए-अर्ज़ के वास्ते अम्न दरकार है

और ए दोस्तो !
भीक की तरह मांगा गया अम्न अगर
तो हमें तीसरी जंग मिल सकती है
दायमी अम्न के वास्ते
हमको संग्राम करना पड़ेगा—सुनो !
चेहरए-अर्ज़ के कोढ़ इन ट्रूमैनों को अपनी नफ़रत के शोलों से
    झुलसाना है
इन दरिन्दों के मर जाने का नाम ही अम्न है

मुतरिबों = गायकों, कुर्रए-अर्ज़ = पृथ्वी.

नरेश कुमार 'शाद'

जंग न होने पाए

शीतल धरती के हृदय में अग्नी बान चलाए
निर्दोषों के ख़ून से समशानों में दिये जलाए
नगर नगर में लाशें बोकर जिसने काल उगाए
आज वो अपने सुख की बैरन फिर सर पर मँडलाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

जिसने हीरो शीमा जैसे बसते शहर उजाड़े
परबत परबत वादी वादी मौत के झंडे गाड़े
नोचलीं हँसती गाती आँखें कोमल सीने फाड़े
अब वह बदली फिर न हमारे जीवन मुख पर छाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

डूब न जाएँ दुख-सागर में बच्चों की आशाएँ
टूट न जाएँ बजते चूड़े माँगें उजड़ न जाएँ
रोएँ न अपने भागों को मम्ता की मारी माएँ
गली गली में दया धर्म की लाज न फिर लुट जाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

हम क्यों मानवता से साथी ख़ून की होली खेलें
धनवानों के लाभ की ख़ातिर हम क्यों बिपता झेलें
मौत के काँटों से क्यों उलझें हम जीवन की बेलें
देकर अपनी जान ख़रीदें हम क्यों रोग पराए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

अपनी अग्नी में जल जाएँ ऐटम के अंगारे
पाप की रग रग से बह निकलें सुर्ख़ लहू के धारे
आओ अपने शत्रु को ललकारें मिलकर सारे
डगर डगर पर अम्न के नीले झंडे को लहराए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

अपने साथी चीन के मज़दूरों ने जिसे उभारा
माओ और सन-यात ने जिसका सुन्दर रूप निखारा
हम भी लेलें उस सूरज से जीवन का उजियारा
उजियारा जो क्रोध कपट की आँधी को खा जाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

सोच रहे हैं जग की चालें जो पापी अभिमानी
कौन कहे उनसे किस बिरते पर यह तित्ता पानी
कौन से खलमंडल से होगी अब जनता की हानी
किस में इतना कस कल है जो हम से आँख मिलाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

ये हत्यारे अपनी अंधी ताक़त पर मत फूलें
गल जाएँ डालर के ढाँचे हम जो उनको छूलें
फोड़ दें उसका पुरज़ा पुरज़ा मोड़ दें उसकी चूलें
अब जो टैंक हथौड़ों और कुदालों से टकराए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

फेर दें मुंह उन दुष्टों का सुख चैन जो अपना लूटें
फूँक दें वह सब शस्त्र जो हम पर बिजली बन कर टूटें
काट दें ऐसी जीभें जिनसे युद्ध की तानें फूटें
तोड़ दें ऐसा हाथ जो अब के जंगी जाल बिछाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

हरे भरे खेतों के खोशे झूमें और लहराएँ
सर्द हवा के मस्त हिलोरे अमरित रस छलकाएँ
कलियाँ चटकें चश्मे उबलें पंछी नाचें गाएँ
जुग जुग जिये हमारी धरती सदा यूँही मस्काए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए!

'मुज़फ़्फ़र' शाहजहाँपुरी

जंग न होने पाए

जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

जंग के कारन बिक गईं कितनी मरियम और सीताएँ
खो बैठीं अपने नयनों के तारे कितनी माएँ
लाख बलाएँ लाई एक दो हों तो उन्हें गिनाएँ

अब की जंग छिड़ी तो कम है जो न क़ियामत ढाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

मांग का सेंदूर उजड़ा और कितनों की चूड़ी टूटी
कितनी बाँहों से जौशन उतरे माथों की बेंदी छूटी
जंग के ख़ूनी देव ने घर घर शान्ति सब की लूटी

हम पर, तुम पर, सब पर बीती कौन किसे समझाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

अब न हों बेवा जवान सुहागिन अब न यतीमी बरसे
घूँघट में घुट घुट के न कोई पिया मिलन को तरसे
भरती होने पेट की ख़ातिर जाय न कोई घर से

जंग किसी साजन को अपनी सजनी से न छुड़ाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

यतीमी = अनाथपन.

इल्म-ओ-अदब, आज़ादी और बच्चों के गालों की लाली
जंग ने फैला रक्खी है हर शोबे पर बदहाली
मुस्तक़बिल पर अब न बरसने देंगे हम पामाली
जो बम जहाँ पे रक्खा हो वह पड़े पड़े सड़ जाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

अब धरती की कोख पे कोई ऐटम बम न गिराए
कहीं न कोई हीरोशीमा नागासाकी बनाए
ज़हरीली गैसों का बादल मौत न अब बरसाए
काल न कोई बोने पाए भूक न कोई उगाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

वही लड़ाई जो फैलाए काल, बिपत, महँगाई
क्यों न बनें धनवान फिर इसके रसिया और सौदाई
लोहे के बदले में करादे जो सोने की कमाई
अब न फँसेंगे लाख कोई डालर का जाल बिछाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

दोस्त हमारा अब तो वही है जंग का हो जो दुशमन
ऐटम की ताक़त से चलाए ट्रैक्ट्रों के इंजन
रेगिस्तानों को जो सींचे और बनादे गुलशन
खेती हँसिया काटे, हथौड़ा कारीगरी फैलाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

शोबे = विभाग. मुस्तक़बिल = भविष्य.

वेतनाम, मलाया, बरमा, अरब हो या अफ़रीक़ा
यूनान, इटली, जरमन, फ्रान्स, इंगलैंड हो या अमरीका
दुनिया भर में जंगपसन्दों का है रंग अब फीका
भूके भारत वाले भी दानों से नहीं ललचाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

भूकी जनता से थर्राकर यह सरमायादारी
आड़ में मज़हब की करवादेती है मारा मारी
ख़ुद तो छिप जाती है मरती है जनता बेचारी
आपस की यह जंग न बढ़कर और तबाही लाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

श्रीमती सैयदा फ़रहत

पुकार

धन के लोभी लोभ में धन के चलते हैं फिर चाल
बैठे हैं मक्कार शिकारी फिर फैलाए जाल
पड़ने को है बिपता भारी आएगा भौंचाल
धरती पर फिर लग जाएँगे लाशों के अंबार
होगी फिर आकाश से साथी, गोलों की बौछार

धन के पुजारी भेंट में देंगे इन्सानों की जानें
धन की देवी धन से भरेगी फिर उनकी दूकानें
उबल पड़ेंगी सोने से फिर उनकी सारी कानें
काल मगर दुनिया में पड़ेगा तड़पेंगे सब भूके
झुलसेंगे फिर तन मन सारा पेट से उठके लूके

सर पर फिर मंडलाने लगे हैं जंग के काले बादल
गूंज गरज से ऐटम बम की धरती होगी बेकल
भर जाएँगे ख़ून से साथी, सारे जग में जल थल
सारे जग में छा जाएगा साथी घोर अंधेरा
कोने कोने में दुनिया के होगा मौत का डेरा

खोएँगी अपने हाथों से फिर लाल हज़ारों माएँ
होंगे फिर अनाथ हज़ारों और लाखों बेवाएँ
ख़ून के सागर में डूबेंगी फिर लाखों आशाएँ
भूक और भीक का होगा साथी, सारे जग में राज
मौजें ख़ूब उड़ाएँगे फिर धन वाले महराज

आ साथी ! हम जान लड़ाकर आई बलाएँ टालें
आ साथी ! मिल जुल के उलट दें सब शैतानी चालें
चलते फिरते फ़ितनों के हम पाँव में बेड़ी डालें
डगमग करती नैया को, आ साथी ! पार लगाएँ
जीवन को जो रोग लगे हैं उनको खोज मिटाएँ

अफ़रंगी या अमरीकी हों जर्मन या जापानी
मिस्र-ओ-अरब के वासी हों वो तुर्क हों या ईरानी
भारत के हों बसने वाले या हों पाकिस्तानी
जो भी जीवन में बिस घोले इन्साँ को कलपाए
पापी ऐसा सारे जग में कोई न रहने पाए

'ताजवर' सामरी

सौभाग्य !

"बस अब रुक जा ए रिक्शा वाले मेरी मंज़िल आ पहुँची
यह ले अपनी मज़दूरी—बस, काफ़ी है ना !"

"बावू जी !!
दिन भर ख़ून पसीना करके पाऊँ छै आने ही ?"
"क्यों बे ! छै आने क्या कम हैं ? और क्या हाथी खुलवा दूं"
"पर दाता ! कुछ न्याय करो, ये मज़दूरी मैं क्यों कर लूं ??
पाँच चवन्नी मालिक चाहे पेट मुझे भी भरना है...."
"क्या बकता है ! लम्बा हो—मुझको कुछ और भी करना है"
"बावू जी !...."
"ए जा भी चुक ! वरना मैं चालान करा दूंगा
दारोग़ा, डिप्टी सब अपने हैं, साले ! फँसवा दूंगा
मुझसे तो जो कुछ मिलता है बस तू जान ! ग़नीमत है
मैं तेरे रिक्शा पर था, नादान ! बड़ा ख़ुश क़िस्मत है
मैं !! जो कौंसिल का मेम्बर हूँ, ताजिर भी, मिलओनर भी
धर्म का सच्चा सेवक भी हूँ ! और जनता का लीडर भी"

'क़तील' शिफ़ाई

जय जयकार

रात का गहरा सन्नाटा हो या दिन का कोहराम
रोटी रोटी चिल्लाते हैं ख़ाली पेट अवाम

फ़ाक़े देकर जंग में झोंके ये तेरा ब्योहार
कोलम्बस के देस के राजा ! तेरी जय जयकार

लन्दन से वाशिंगटन तक हर मूज़ी तेरे साथ
टाम को साम मिले इस जग में कर कर लम्बे हाथ

भूकी नंगी धरती को पहनाए बमों के हार
कोलम्बस के देस के राजा ! तेरी जय जयकार

तेरे हाथ में हिटलर और मुसोलीनी की लाज
पालन हार यतीमों के बेवाओं के सरताज

चारों खूँट मची है तेरे दम से हा हा कार
कोलम्बस के देस के राजा ! तेरी जय जयकार

क़हत, वबाएँ, भूक, नंग फैलाए देस बिदेस
दूर दूर तक पहुँचे तेरी ! चाल बदलकर भेस

डालर तेरी ढाल बना है, जंग तेरी तलवार
कोलम्बस के देस के राजा तेरी जय जयकार

तेरा दिया सब खाते हैं पर उनमें नहीं हम लोग
अम्न की लाल गुलाबी चिड़िना और सोने का योग

जंग का ईंधन बनने से हम करते हैं इनकार
कोलम्बस के देस के राजा! तेरी जय जयकार

स्वामी मारहरवी

कृषक-बिन्ती

करके मेड़ मेरी बाखर तुमने ऊँचे महल बनाए
जगमग मेरे दिये बुझाकर अपने घरके दीप जलाए
मेरे सुनहरे खलिहानों पर आड़े तिरछे दाँव लगाए
लूट लई निर्बल की आशा ऐसे तुमने जाल बिछाए

सूखे खाँखड़ हार हैं मेरे, लाल फुलरवा गाल तुम्हारे
देह के डंगर बालक मेरे लालों के हैं लाल तुम्हारे
भूक में हम एक कौर को तरसें घर में हों तर माल तुम्हारे
अपनी कमाई आह लुटा कर हो गए हम कंगाल तुम्हारे

जीवन के इस भौसागर में बनके तुम्हारा खेवन हारा
अपना बेड़ा आप डुबोया तुम को मैंने पार उतारा
अंधियारे के लम्बे पथ पर मैंने तुमको दिया सहारा
जग के तुम अन दाता बाजे मुझी को तुमने भूका मारा

ईश्वर अल्ला राम तुम्हारे—धन के बल भगवान तुम्हारे
धरती मेरी राज तुम्हारा साँचे हैं अभिमान तुम्हारे
निर्बल को ठग मूस के खुश हो, कैसे हैं ईमान तुम्हारे
दुनिया कोई और बतादो जाय बसें ये किसान तुम्हारे

मेरे धन से मिलें बनाएँ, भांत भांत की कलें लगाएँ
आप मनेजर, अप डिरेक्टर, आप ही जग दाता कहलाएँ
मेरी पैदावार से हिर-फिर आप ही सारा लाभ उठाएँ
कड़ुआ कड़ुआ थू थू करके, मीठा मीठा हप कर जाएं

मेरे दम से राज सिंहासन, मेरे बल से सोभा उसकी
मैं भारत का, भारत मेरा, मैंने की है सेवा उसकी
तुम क्या जानो राम और ईश्वर, तुम क्या जानो पूजा उसकी
कौड़ी कौड़ी तुमने जोड़ी, खागई आस निराशा उसकी

जो सुख की नैया खेवत हो, वह नाव डुबोकर छोड़ूँगा
जिस लोहू तुम परवान चढ़े, वह लोहू आज निचोड़ूँगा
तुम चूर हो जिन अभिमानों में, वो मान तुम्हारे तोड़ूँगा
सब कस बल त्यारे देख लिये अब हर बल लेकर छोड़ूँगा

यूसुफ़ ज़फ़र

खिलौने

चुने मैंने मौजों से मोती, जवाहर से ज्योती, बहारों से राग
लिये मैंने ख़ोशों से ख़ुशबू के तोशे
उलट कर निगाहों से राहों के गोशे
बढ़ा मैं, चला मैं, लिये साथ सावन की पुरवा, चनारों की आग
बहारों के राग

न काम आए मौजों के मोती, जवाहर की ज्योती, न ख़ुशबू न राग
मुक़द्दर में पैहम नजूमे - शबे - ग़म
मसर्रत का मातम, मुसीबत का आलम
वो सारे ख़ज़ीने, ख़िज़ाओं ने छीने कि सीने में है अब चनारों की
न ख़ुशबू न राग

मिलीं ग़म की मौजें, मसायब की फ़ौजें, रग-ओ-पै के अन्दर समन्दर के राग
हक़ायक़ के ज़िन्दाँ में हैराँ परीशाँ
तसौवुर, तख़ैयुल, तनफ़्फ़ुस से नालाँ
मुझी को लगाने बुझाने को पाई जहाँ ने सुहाने चनारों की आग
समन्दर के राग

ख़ोशा = गुच्छा, बाल. गोशा = कोना. पैहम = बराबर, लगातार. नजूम = तारे. शब = रात. मसायब = मुसीबतें. रग-ओ-पै = रग रग, नस नस. हक़ायक़ = हक़ीक़तों, वास्तविकताओं. तसौवुर = कल्पना में किसी को देखना. तख़ैयुल - कल्पना, विचार करना. तनफ़्फ़ुस = सांस

मगर तेरे दामन में, फूलों के मसकन में, सुनता हूं अकसर बहारों के राग
तेरे नर्म ख़ोशे, मुहब्बत के तोशे
मेरे भोले भाले हसीं दिल के गोशे
मेरे रंज-ओ-ग़म मेरे फ़िक्र-ओ-अलम को दिखाते हैं आकर चनारों की आग
सितारों की आग

मसकन = रहने की जगह.

'स्वामी' मारहरवी

पंचों हाथों पिटा दिवाला

ठौर न पूछो, गाम न पूछो मुझ से मेरा नाम न पूछो
कहां किया बिसराम न पूछो तुम होगे बदनाम न पूछो

घाव पुराने छुए रिसेंगे
मत छेड़ो यह फूट बहेंगे

राज महल में हँसी ख़ुशी थी आज़ादी की धूम मची थी
देश की आशा हरी भरी थी घर में मेरे आग लगी थी

मारे कष्ट सहार गई मैं
जीती बाज़ी हार गई मैं

दुष्टों के स्थान जहां थे निर्लज के सामान जहां थे
लाखों ही शैतान वहां थे क्या जाने भगवान कहां थे

मात पिता कोई काम न आए
समय पड़ा तो राम न पाए

पंचों हाथों पिटा दिवाला अपने वर मुँह हो गया काला
दुष्ट ने कुछ ना देखा भाला खुले धड़े कुकर्म कर डाला

नंगों संग में नंगी घूमी
फट गई ना भारत भूमी

घर फूंका अड़वाड़ न छोड़े बाक़ी काठ कबाड़ न
मात पिता के हाड़ न छोड़े कोई नहीं जो पछाड़ न छोड़े

देह के टुकड़े आग में भूने
हो गए कैसे धर्म के दूने

भारत के ओ पूत सपूतो बगुला भक्तो ! जंगली भूतो
देश के ओ कमबख़्त कपूतो अपने तुम करतूत तो देखो

करके नंग धड़ंगी बेटी
देश नरेशों कर गए हेटी

मेरा कलंक अब कौन भरेगा ? दूर यह धब्बा कौन करेगा ?
जीवन स्वारथ कौन करेगा ? स्वागत मेरा कौन करेगा ?

टूटा बासन बजे फटेरा
लेगा मुझ को कौन ठठेरा

'स्वामी' जी तुम भूल न जाना अपने कर्मों फूल न जाना
तुमने मेरा मूल न जाना अंग लगा तिरसूल न जाना

भाड़ में जाओ नर्क जलो तुम
चुल्लू जल में डूब मरो तुम

कँवल प्रसाद 'कँवल'

महामारी

यह कौन महामारी आई ?

इसके छूते ही दम भर में इन्साँ हो जाता है पागल
और घर वालों के हाथों ही हर घर बन जाता है मक़तल
ले संग काल की परछाईं यह कैसी बीमारी आई ?
यह कौन महामारी आई ?

कुछ ख़ून भूक ने छोड़ा था, इसने हर बूंद निचोड़ लिया
उड़ने से पहले ही बन्दी पंछी का पंख मरोड़ दिया
आज़ादी का स्वागत करने यह कैसी हत्यारी आई ?
यह कौन महामारी आई ?

सदियों पर सपना देखा था, कुछ फूल खिले हैं आँगन में
जब आँख खुली, देखीं हर सू लपटें ही लपटें गुलशन में
फूलों के रंगों से उड़ कर यह कैसी चिंगारी आई ?
यह कौन महामारी आई ?

लोहू की मौजें चढ़ते ही पंजाब का पानी उतर गया
बंगाल, बिहार, नोआखली, सब का शीराज़ा बिखर गया
बेहोशी बढ़ती जाती है, हम समझे बेदारी आई
यह कौन महामारी आई ?

यह आग जो फैली और तो घर सारा मिट जायेगा छन में
मिल जुल कर साथी उठ बैठो मज़बूत इरादे ले मन में
कंधों पे तुम्हारे ही अब यह भारी ज़िम्मेदारी आई
यह कौन महामारी आई ?

प्रेम धवन

बापू की क़ुरबानी

धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी क़ुरबानी
भूल नहीं सकती है दुनिया तेरी अमर कहानी

हम सब तेरे क़ातिल हैं, हम ख़ूनी तेरे बापू
दाग़ कभी यह धो न सकेंगे सारी क़ौम के आँसू
पाप कभी यह धो न सकेगा गंगा का भी पानी
धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी क़ुरबानी

यह तेरा ही ख़ून नहीं, यह ख़ून है मानवता का
ख़ून अमन का, आज़ादी का, दुखियारी जनता का
सब की आँख में आँसू हैं सबके मुख पर वीरानी
धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी क़ुरबानी

तू अंधियारे भारत में उजियाला लेकर आया
घर घर जाकर तूने आज़ादी का दीप जलाया
तुझसे ही हमने अपनी यह क़ीमत पहिचानी
धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी क़ुरबानी

तूने सीना तान के शाही ताक़त को ललकारा
'छोड़ो भारत' 'छोड़ो भारत' गूँजा तेरा नारा

जेलों में बन गई बुढ़ापा तेरी वीर जवानी
धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी क़ुरबानी

तेरी क़ीमत पूछे कोई आज नोआखाली से
कैसा फूल है टूटा अपने गुलशन की डाली से
तूने सबका दुख सुख बाँटा, सबकी पीड़ा जानी
धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी क़ुरबानी

जलती आग में कूद के तूने फूट की आग बुझाई
अपनी जान गँवा के लाखों की है जान बचाई
आख़िर सच की जीत हुई, और हार झूठ ने मानी
धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी क़ुरबानी

अमर रहेगा अमर रहेगा, मौत से जो लड़ता है
आज़ादी के नाम पे मरने वाला कब मरता है
जब तक दुनिया है गूंजेगी तेरी अमृत बानी
धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी क़ुरबानी

ताजवर सामरी

रात मर रही है

मैं कब तक अपने ही दुख के गीत अपने खोल में रह के गुनगुनाऊँ ?
जमूद है इक जहां पे तारी, मैं क्यों न ऐसे में बाहर आऊं
ग़रज़ के बन्दों ने ज़िन्दगानी को एक मरघट बना दिया है
असंख लोगों को केचुओं का ज़लील जीवन अता किया है
मैं अपना फ़र्ज़ आज भी न जानूं ?
खड़ी है सच्चाई मेरे आगे, मैं अब इसे किस तरह न मानूं ?
कि सारी इन्सानियत के सुख ही में मेरा सुख है
ये ज़िन्दगी का असीम दुख मेरा अपना दुख है
यहां ज़रूरत है रोशनी की
वफ़ा की ईसार-ओ-हमदमी की
मैं इस जगह तो ज़रूर गाऊंगा दायमी सरखुशी का नग़मा
उमीद का ज़िंन्दगी का नग़मा
मैं गाऊंगा ऐसे गीत लौ दे उठेंगे साये
मैं गाऊंगा वह तराना जिसको तमाम संसार गुनगुनाए
बड़े ज़माने से आदमी एक ऐसा दीपक है जिस पे लौ मुस्कुरा न पाई

ईसार-ओ-हमदमी = बलिदान और सहानुभूति. दायमी = अमर.

कराहों, आहों ने मस्ख़ कर दी है उसके जीवन की ख़ुशनुमाई
सुनाए जाते हैं हर घड़ी उस को ग़म के, मायूसियों के क़िस्से
बजाए जाते हैं उसके हरसू अलम के बाजे दुखों के नग़मे
यह आदमीयत का नुक़्ता गहना गया ! तो परलय मचेगी हरसू
उजाड़ धरती, उदास वीरानियों को देखा करेगी हरसू
नहीं, नहीं, यह न हो सकेगा—मैं गाऊंगा रोशनी के नग़मे
उमीद के, ज़िन्दगी के नग़मे
ग़रज़ ज़दा लोग मिशअलें क्यों बुझा रहे हैं ?
यह कैसा ऊधम मचा रहे हैं ??
"कि ज़िन्दगी मर चुकी, अँधेरा जवां हुआ है
दबे रहो ऐ ज़लील कीड़ो, यही तुम्हारे लिये सज़ा है"
नहीं नहीं, ए असंख दुखियो ! ये शोर तो खोखला है यकसर
हवा के झोंकों से सच का सूरज बुझेगा क्यों कर
हक़ीक़तन रात मर रही है
उफ़क़ पे हंगामे-ज़िन्दगी है कि सुब्हे सादिक़ उभर रही है

मस्ख़ कर दी है = बिगाड़ दी है. सादिक़ = सच्ची.

ज़हूर नज़र, पाकिस्तान

ग़ज़ल

पतवारों को यों लहराओ जग-सागर की लहर न छलके
प्रीत की नैया खेने वालो धीरे धीरे हलके हलके
पेशानी पर ज़ुल्फ़ें बिखरीं रुख़सारों पर आंसू ढलके
जिसको जीवन-साथी समझा वह तारा दो गाम ही चलके
तर्के-मुहब्बत सहल नहीं है दिल छिनता है जां जाती है
जब पलकें बिखरा देती हैं गालों पर डोरे काजल के
रूह तो उनकी भी काँपी है पाँव तो उनके भी डोले हैं
वह राही जो प्यार की घाटी से गुज़रे हैं सँभल सँभल के
प्यार में जलना हो कि जलाना दोनों की बुनियाद लगन है
वही मिला है परवाने को जो पाया है शमअ ने जल के
हाथ थकी आँखों पर धर के रोज़ पुराने अरमां सोए
रोज़ नई आशाएं जागीं हँसते रोते नैना मल के
बज़्मे सहर के उजियारों में नाच रही है आधी दुनिया
मेरी नज़र पर फैलाएँगे आख़िर कब तक आप धुँदलके

अब्दुल मजीद भट्टी. पाकिस्तान

राजमहल

मैं अलबेली नई नवेली जीवन जोबन रस में
चंचल चितवन, नैन कटीले, राजा का मन बस में
राजपाट है मेरा, हां, हां, राजपाट है मेरा
नैनन जोत बुझी नहीं अब तक फिर से बान चलाऊँ
राजा के चंचल मन में फिर अपनी प्रीत जगाऊँ
राजपाट है मेरा, हां, हां, राजपाट है मेरा
कुल-नारी गुलवन्ती हूं मैं राजमहल की लाज
कुल का सूरज कुल का राजा है मेरा युवराज
राजपाट है मेरा, हां, हां, राजपाट है मेरा
ये कैसे पायल के छनाके भागीं सब घबरा के
नाच नाच कर एक नर्तकी कहती थी लहरा के
राजपाट है मेरा, हां, हां, राजपाट है मेरा

'क़तील' शिफ़ाई, पाकिस्तान

दुल्हन

वाज रही शहनाई, आई दुलहन नई नवेली
दुलहन नई नवेली

स्वामी समझे घूँघट पीछे होगा चांद का टुकड़ा
घूंघट के पट खुले तो निकला मुरझाया सा मुखड़ा
ढाँप के रोए मुरझाए से मुखड़े को अलबेली
दुलहन नई नवेली

नई नवेली का ये स्वागत ? नन्द न सास न देवर
मैके से भी क्या लाई है खोटे पीले ज़ेवर
अब क्या किसी से आँख मिलाए ? सोचे पड़ी अकेली
दुलहन नई नवेली

बैन करे या चैन से सोए ? रोए या मुस्काए ?
आज तो गुज़रा कल क्या होगा ? सोच सोच घबराए
जीवन के इस उलझावे में बन गई एक पहेली
दुलहन नई नवेली

बाज रही शहनाई, आई दुलहन नई नवेली
दुलहन नई नवेली

बैन = विलाप.

एक गीत

अनजाने नगर मन माने थे, मन माने नगर अनजाने रहे
अपनी बातों की मस्ती में
सुनते रहे दिल की बस्ती में
वही गीत जो कुछ मन माने रहे, वही राग जो सुख के बहाने रहे
रातें बीतीं दिन बीत गए
रातें भी नई फिर दिन भी नए
मूरख मन ऐसा हटीला है, उसे याद वो रंग पुराने रहे
अन होनी का जिसे ध्यान रहा
होनी ने उसे चुपके से कहा
न वो बातें रहीं न ज़माने रहे, जो रहे भी तो बाक़ी फ़साने रहे
अब गीत में रस टपकाते हैं
यों दिल की आग बुझाते हैं
अब सबके लिये वही बावले हैं, जो बीते समय में सयाने रहे

नरेश कुमार 'शाद'

ग़ज़ल

कौन सुलगते आँसू रोके आग के टुकड़े कौन चबाए
ओ हमको समझाने वाले कोई तुझे क्यों कर समझाए

बरखा बरसे, नग़मे गूँजें, शीशे से शीशा टकराए
कौन इस वक़्त अन्जाम की सोचे कौन ख़िरद के फेर में आए

इस दुनिया के रहने वाले अपना अपना ग़म खाते हैं
कौन पराया रोग ख़रीदे कौन पराया दुख अपनाए

प्रेम की अँधियारी राहों में अक़्ल का दीपक जल न सकेगा
ए फ़र्ज़ानो ! ए फ़र्ज़ानो ! होश से कह दो होश में आए

सब्र भी कब तक हो सकता है ज़ब्त की भी इक हद होती है
पल भर चैन न पाने वाला कब तक अपना रोग छुपाए

जीवन के अँधियारे पथ पर जिसने तेरा साथ दिया था
देख कहीं वह कोमल आशा आँसू बन कर टूट न जाए

हाय ! मेरी मायूस उमीदें वाय ! मेरे नाकाम इरादे
मरने की तदबीर न सूझी जीने के अन्दाज़ न आए

ख़िरद = अक़्ल, बुद्धि. फ़र्ज़ानों = होशियारों. वाय = हाय, आह, अफ़सोस.

इस दुनिया के ग़मख़ाने में ग़म से इतनी फ़ुरसत कब है
कौन सितारों का मुँह चूमे कौन बहारों में लहराए
'शाद' वही आवारा शायर जिसने तुझ से प्यार किया था
नगर नगर में घूम रहा है अरमानों की लाश उठाए

विलियम फ्रान्सिस बर्नर्ड

देवता

सो गए सब देवता
देवताओं के तबस्सुम सो गए
उनके जन्नत और जहन्नुम सो गए
सो गए सब देवता
सो गए सब अपनी हैबतनाक बातों को लिये
और इशरत की हसीं बेबाक रातों को लिये
सो गए सब देवता
अ ज़ेहन इन्सान का जिसने उन्हें पैदा किया
आहनी हाथों से अब हर एक बुत है तोड़ता
उनकी हस्ती कर रहा है बे नक़ाब
अब नहीं है उनकी पहली आब-ओ-ताब
सो गए सब देवता
हर सनम, हर बुत शिकस्ता है पड़ा
औज पर है आज ज़ेहन इन्सान का
है शिकोहे-बरतरी जलवानुमा,
है अख़ूवत हमदमे इन्सान आज

शिकोहे बरतरी = श्रेष्ठता की शान. अख़ूवत = भाई चारा.

दे के लेकिन फिर किसी को तख़्तो ताज
तोड़ना हर्गिज़ न अब जामे मसावाते जहां
जाग उठेंगे नए यों देवता
अज़ सरे नौ होंगे मजनूं देवता
अम्नो आसाइश की फिर हस्ती कहां

मसावात = बराबरी, समता

कुमारी ज़ाहिदा

नई दुनिया

दरीचों से छनकर
झरोकों से छनकर
लरज़ती लरज़ती
छनकती छनकती
हवा आ रही है
सदा आ रही है
कि जैसे पलक में फ़लक घूम लेगी
कि जैसे सितारों का मुंह चूम लेगी
कि जैसे शफ़क़ ज़ार पर झूम लेगी
ये छुन छुन-सी क्या है?
ये कैसी सदा है?
ये धुन अन सुनी है?
ये किसने चुनी है?
ये क्या बज रहा है?
ये क्या सज रहा है?

शफ़क़ ज़ार = लालिमा-स्थल.

प्रोफ़ेसर 'शोर'

मल्लाह

पस मंज़र—उठता हुआ तूफ़ान, डूबती हुई किश्तियां, गाते हुए मल्लाह.

ये गाते ज़लज़ले, ये नाचते तूफ़ान के धारे
हवा की नीयतों से बेख़बर मल्लाह बेचारे !

वो तूफ़ानों के हल चलने लगे सैय्याल खेती में
वो किश्ती आके डूबी गौहरीं क़तरों की रेती में !!

वो टूटीं मौज की शफ़्फ़ाफ़ दीवारें सफ़ीनों पर
वो फिर लहरें उभर आईं इरादों की जबीनों पर !

वो टकराने लगी आवाज़ नीले आस्मानों से
वो ख़त्ते-रह गुज़र पर जल उठीं शमएं तरानों से

हवाएं थम नहीं सकतीं तलातुम रुक नहीं सकते
मगर "मौज-ओ-हवा" के सामने सर झुक नहीं सकते

सफ़ीने हैं कि तूफ़ां के थपेड़े खाए जाते हैं
मगर मल्लाह गीत अपने बराबर गाए जाते हैं

पस मंज़र = पृष्ठभूमि. सय्याल = पिघली हुई, तरल. गौहरीं क़तरों = मोती की तरह चमकने वाले. शफ़्फ़ाफ़ = झलाझल. सफ़ीनों = किश्तियों. ख़त्ते-रहगुज़र = मार्ग की लकीर. तलातुम = झंझा. मय = शराब.

हैं कितने ग़म कि जिन की मय सरूर अंगेज़ होती है
हैं कितने गीत जिनकी लय हवा से तेज़ होती है !!
खिंचा हो जिनका ख़त्ते-रहगुज़र तूफ़ां के धारों पर
बड़ी मुश्किल से उसको नींद आती है किनारों पर

सरूर अंगेज़ = मस्ती लानेवाली, मादक,

असरारुल्हक़ 'मजाज़'

बोल ! अरी ओ धरती बोल !

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डाँवा डोल !!

बादल बिजली रैन अँधियारी   दुख की मारी परजा सारी
बच्चे बूढ़े सब दुखिया हैं   दुखिया नर हैं दुखिया नारी
बस्ती बस्ती लूट मची है   सब बनिये हैं सब व्योपारी

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डाँवा डोल !!

कलजुग में जग के रखवाले   चाँदी वाले सोने वाले !
देसी हों या परदेसी हों   नीले, पीले, गोरे, काले !
मक्खी, भुनगे, भन भन करते   ढूंढते हैं मकड़ी के जाले

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डाँवा डोल !!

अमरीका के ये व्योपारी   आँख बची और बरछी मारी
कब तक जनता की बेचैनी   कब तक जनता की बेज़ारी
कब तक सरमाये के धन्दे   कब तक ये सरमायादारी

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डाँवा डोल !!

नामी और मशहूर नहीं हम लेकिन क्या मज़दूर नहीं हम
धोका और मज़दूरों को दें ऐसे तो मजबूर नहीं हम
मंज़िल अपने पाँव के नीचे मंज़िल से अब दूर नहीं हम

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डांवा डोल !!

बोल ! कि तेरी ख़िदमत की है बोल ! कि तेरा काम किया है
बोल ! कि तेरे फल खाए हैं बोल ! कि तेरा दूध पिया है
बोल कि हमने हश्र उठाया बोल ! कि हम से हश्र उठा है

बोल ! कि हमसे जागी दुनिया
बोल ! कि हमसे जागी धरती
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहसन डाँवा डोल

हश्र = प्रलय.

स्वर्गीय 'अशअर' मलीहाबादी

वीरान गली

शाहराहों से बहुत दूर कहीं
जगमगाती हुई सड़कों से अलग
चांद तारों के तबस्सुम की किरन से महरूम
ग़म में डूबे हुए पेड़ों के घने साये तले
ऊंघती, रेंगती वीरान गली जाती है

बादए-नूर से लबरेज़ तो है जामे फ़लक
शाहराहों के किनारों पे दमकती है अभी
लालाज़ारों के दिल आवेज़ नज़ारों की बहार
आह लेकिन उसे मतलब ही नहीं
उसके नज़दीक फ़क़त गिरियए-शबनम है बहुत
जिसकी बूँदें उसे अफ़लाक के हँसते तारे

साल हा साल से बेनूर है इसका सीना
दाहने बाएँ गली के ये शिकस्ता से मकां
जिन मकानों के मकीनों ने कभी

तबस्सुम = मुस्कुराहट. बादए नूर = प्रकाश की मदिरा. दिल आवेज़ मनोहर. गिरियए-शबनम = शबनम का रोना.

नग़मए-ऐश का धुंदला-सा तसव्वुर न किया
नौहए-ग़म के सिवा
ख़ार ज़ारे-ग़मे-हस्ती है शबिस्तां उनका

ऊंघती रेंगती वीरान गली जाती है
इसकी मग़मूम फ़ज़ा में कभी गूंजी न हँसी
हसरत-ओ-यास से लबरेज़ किनारों पे कभी
क़ुमक़ुमे तक न हुए हैं रोशन
इससे गुज़रे ही नहीं माह रुख़-ओ-बर्क़ जमाल
इन्तज़ार इसके किनारों पे किसी का न हुआ
इस पे चलते हैं फ़क़त भूक के मारे मज़दूर
या कोई रात की अंधियारी में भटका राही
या फटे हाल में रहते हुए बेचारे किसान
खुश्क होंटों पे लिये रंज-ओ-अलम के बादल
धुंदली आँखें तरब-ओ-ऐश से यकसर महरूम
ज़ुल्म के तंग भंवर में है सफ़ीना जिनका
ज़िन्दगी जिनकी फ़क़त एक सराब
दोनों आलम का अज़ाब !
आह बेचारे ये इस पर भी जिये जाते हैं

ख़ारज़ारे ग़मे हस्ती = जीवन के दुख के कांटों की झाड़ी. मग़मूम = शोक प्रद. यास = निराशा. क़ुमक़ुमे = बिजली के बल्ब. माह-रुख़-ओ-बर्क़ जमाल = चन्द्रमा और बिजली की तरह रूपवान. तरब = सुख, आराम, ख़ुशी. यकसर = सिरे से, नितान्त. सफ़ीना = किश्ती. सराब = मरीचिका.

ज़हर का घूँट समझ कर भी पिये जाते हैं

वक़्त आयेगा कि दुनिया की बदल जायगी
ज़िंदगी इक नए अंदाज़ में ढल जायेगी
और ये वीरान-ओ-सियहपोश गली
होगी ताबिन्दा सड़क में तबदील
शाहराहों से बहुत दूर कहीं
जगमगाती हुई सड़कों से अलग
ऊंघती रेंगती वीरान गली जाती है.

ताबिन्दा = चमकती हुई.

'कैफ़ी' आज़मी

इन्क़लाबे चीन

साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

आज सदियों की जमी बर्फ़ पे जलता है अलाव
सीनये शर्क़ की ये आग फ़लक तक पहुँचाओ
हर जगह चीन की जुरअत का फ़साना दोहराओ
कहीं बिजली, कहीं आँधी, कहीं तूफ़ां बन जाओ
साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

वीतनाम और मलाया की ज़मीं जाग उठी
दफ़अतन चौंक के बर्मा की ज़मीं जाग उठी
विन्धिया चल की हिमालय की ज़मीं जाग उठी
एशिया जाग उठा ज़िन्दा दिलो जश्न मनाओ
साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

शर्क़ = पूरब. दफ़अतन = यकायक.

खींच कर दह की पहनाई में चांदी की लकीर
मंडियां ढूंडते फिरते हैं इजारे के सफ़ीर
अपनी ही कड़ियों में उलझी है सुनहरी ज़ंजीर
अपने मरकज़ ही से टकराना है ज़र का फैलाव
साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

कारख़ानों का ये भौंचाल ये खेतों का जलाल
ख़ूने-जमहूर में ये जोश ये गर्मी ये उबाल
ये तफ़ंगें, ये दरांती, ये हथौड़े, ये कुदाल
बढ़ के सोने के हर ऐवान पे लोहा बरसाओ
साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

कशमकश चेहरए-हस्ती की बढ़ा देती है आब
ज़िन्दगी जेहृद के मैदां में उलटती है नक़ाब
यहीं निखरेगी मुहब्बत यहीं उमडेगा शबाब
आज जिस राह पे होता है लहू का छिड़काव
साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

दह = दुनिया. पहनाई = विस्तार, चौड़ाई. तफ़ंगें = बन्दूकें. ऐवान = बड़े मकान, महल. जेहृद = संघर्ष, कोशिश.

नानकिन जिनकी जुदाई में था कल शोला बजां
आज किस शान से पलटे हैं सफ़र से वो जवां
आहनी हाथ में तारीख़ के मरकब की अनां
सैले रफ़्तार में गुम वक़्त के धारे का बहाव

साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

कुहना दीवार से रुकता है कोई सैले-हयात
अहदे-नौ आ ही गया ले के नए दिन नई रात
झिलमिलाता हुआ पलकों पे ये ख़्वाबे सन-यात
मुस्कराती हुई आंखों में यह चालाकिये-माओ

साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

ये सर अफ़राज़ मशीनें ये लहकता हुआ धान
कामगारों से गले मिलते हैं हँस-हँस के किसान
ढह गए क़स्र कभी लगता था जिनमें खलियान
आज हर मोड़ पे हर गाम पे खलियान लगाओ

साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

नानकिन = च्यांग काई शेक की राजधानी. शोला बजां = आग में अपने प्राणों की आहुति देने वाला. आहनी = फ़ौलादी. मरकब = घोड़ा. अनां = लगाम. सैल = बाढ़. कुहना = पुराना. ख़्वाबे सन-यात = चीनी जनतंत्र के नेता स्व० डा० सन-यात सेन के स्वप्न माओ = कामरेड माओ-ज़े-तुँग. सर अफ़राज़ = सर उठाये हुए. क़स्र = महल.

तोड़ देता है रवायात, जेहादे-पैहम
सरनुगूं आज है इबलीस हज़ूरे-आदम
रख दिये ज़ुल्म के मरकज़ पे दिलेरों ने क़दम
भर गए सीनए गेती के सुलगते हुए घाव
साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

मुस्कराती हुई बढ़ती है जिधर सुर्ख़ सिपाह
फ़तह, डालर के पहाड़ों में बना देती है राह
साज़िशें चीन के सैलाब की पाती नहीं थाह
च्यांग को लेके उलटती है ट्रूमैन की नाव
साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

चीन, उसरत का महल, राहज़नी का मस्कन
ख़ानाजंगी की कमींगाह, ग़ुलामी का वतन
ज़र्द माथे पे मचलने ही लगी सुर्ख़ शिकन
खून खाने ही लगा सीनए अफ़लास में ताव
साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

रवायात = परंपराएं. सरनुगूं = नत मस्तक. इबलीस = शैतान. हज़ूरे आदम = आदमी के सामने. गेती = सृष्टि. उसरत = दरिद्रता. मस्कन = घर. राहज़नी = डाका. कमींगाह = छापामारों के छिपने की जगह.

बूँद टपकी है शहीदों के लहू की जिन पर
आज उन ख़ाक के ज़र्रों से उबलते हैं शरार
नद्दियाँ भागने वालों की पकड़ती हैं कमर
वादियां करती हैं दुश्मन की सफ़ों पर पथराव
साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

ढल के शोलों में ज़मीं तंग हुई जाती है
सांस ऐटम के सपूतों की घुटी जाती है
तीसरी जंग की इक शक्ल मिटी जाती है
तीसरी जंग की हर शक्ल हर एक नक़्श मिटाओ
साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

गुलाम रब्बानी 'ताबां'

कोरिया के जांबाज़ों से

कोरिया के सरफ़रोशो हो क़ुबूल
एक दूर उफ़्तादा साथी का सलाम
राहे आज़ादी में तुम तनहा नहीं
हम सफ़र हैं चीन-ओ-बरमा वीत नाम
जाँ बलब मज़लूम महकूमों को आज
दे रहे हो ज़िन्दगी का तुम पयाम
टूट जाता है गुलामी का फ़ुसूं
ख़्वाब से जब चौंक उठते हैं अवाम

एशिया की लाज रख ली साथियो
सामराजी खा रहे हैं पेच-ओ-ताब
ज़ुल्मतों की बन्दिशों को तोड़ता
वो उभरता आ रहा है आफ़ताब
सागरे मशरिक़ में फिर ढलने लगी
जज़्बए मिल्ली की कैफ़ आवर शराब
टूटी महकूमी की ज़ंजीरे गरां
हो मुबारक खुल गया ज़िन्दां का बाब

उफ़्तादा = दूर पड़ा हुआ. जाँ बलब = जिनकी जान होठों पर आ चुकी है. फ़ुसूँ = जादू-टोना. अवाम = आम लोग, जन साधारण. ज़ुल्मतों = अंधकारों. जज़्बए-मिल्ली की कैफ़ आवर शराब = सामुहिक जीवन के उद्‌गार की मस्त कर देने वाली शराब. गरां = भारी. बाब = दरवाज़ा.

जंग कैसी ? आज तो तलवार से
अम्न की तुम डालते हो दाग़ बेल
नातवां मुल्कों की बेदारी के साथ
ख़त्म होगी सामराजी रेल-पेल
जंग के असबाब जब बाक़ी न हों
कोई क्यों खेलेगा यह मज़मूम खेल

मशरिक़-ओ-मग़रिब का मिट जाएगा फ़र्क़
रास आए तुम को क़ौमी इत्तेहाद
इन्क़लाबे कोरिया पाइंदा बाद !

दाग़ बेल = कशीदाकारी में जो प्रारम्भिक चिह्न बनाए जाते हैं. नातवां निर्बल. असबाब = कारण. मज़मूम = निन्दित, निकृष्ट. रास आए = मुबारक हो. पाइंदाबाद - चिरंजीवि.

जांनिसार 'अख़्तर'

मैक आर्थर का सच्चा ख़्वाब

मैं कौन हूँ ? मैक आर्थर हूँ जानते हो तुम ?
बहुत बड़ा कमांडर हूं जानते हो तुम ?
मैं डालरों के मुल्क का अज़ल के रोज़ से ग़ुलाम हूँ
इसीलिये तो जंग का इमाम हूं
बस आज से तमाम कोरिया पे मेरा इक़्तदार है
मैं ईंट ईंट से बजा भी दूं, तो क्या है, मुझको अख़्तियार है
इसी में ख़ैर है कि मुझ को मौत की तरह से मान लो
मैं आ गया हूँ जान लो

हुज़ूर को तो मुद्दतों से जानते हैं हम
इमाम तो इमाम जंग का ख़ुदा ही मानते हैं हम
हुज़ूर तो लड़े हुए हैं हिटलरी सिपाह से
मिला सकेगा अहमन भी क्या निगाह आप की निगाह से
हुज़ूर के क़दम के टोकियो के क़ल्ब पर निशान हैं
वहां की सरज़मीन के तो आज आप आस्मान हैं
बस एक बम में हीरोशिमा को तबाह-ओ-पायमाल कर दिया
हक़ीक़तन हुज़ूर ने कमाल कर दिया
हमारी जान-ओ-माल के हुज़ूर ही तो पासबान हैं

अज़ल = आदिकाल. इक़्तदार = आधिपत्य. अहमन = शैतान.
क़ल्ब = दिल.

ख़ुदा का फ़ज़्ल है कि आप हम पे बेसबब ही मेहरबान हैं
ये कोरिया के लोग तो हुज़ूर के ग़ुलाम हैं
ये ख़्वाहमख़्वाह का फ़साद करने वाले कुछ अवाम हैं

मैं आ गया हूँ, जानते हो मैक आर्थर हूं मैं
बहुत बड़ा कमांडर हूँ मैं
बढ़ो, बढ़ो सिपाहियो ! डरो नहीं हमारा नाम लो
अवाम दुश्मनी से काम लो
अरे ! ये पुश्त की तरफ़ से कैसे तीर आ रहे हैं, कैसे वार हैं ?
हुज़ूर ! ये तो छापामार हैं
ये कौन हैं ? अवाम हैं ?
हुज़ूर ही के सब ग़ुलाम हैं
बस अब मैं जाऊंगा, सियोल जाऊंगा
मैं किम पे जाके मोर्चा जमाऊंगा
न जाइये न जाइये
हमारे हाल पर न रहम खा सके तो अपनी जान पर तो रहम खाइये
यह अर्ज़ भी अजीब है
तो क्या हुज़ूर, मौत आपकी बहुत क़रीब है ?

मगर ये क्या ? मगर ये क्या ??
ज़मीन से ये ज़ल्ज़ले से आज क्यों उबल पड़े ?

अवाम-दुश्मनी = जनता की दुश्मनी. छापामार = गोरिल्ला. सियोल, किम = कोरिया के शहर.

पहाड़ टैंक बन के कैसे चल पड़े ?
ये दश्त-ओ-दर, शजर हजर, ये संग-ओ-ख़िश्त सब बदल पड़े
कहाँ से सुर्ख़ सुर्ख़ वर्दियां पहन के ये जवां निकल पड़े
बढ़े ही आ रहे हैं, मानते नहीं, ये सुर्ख़ नौजवां बड़े दिलेर हैं
मगर हुज़ूर क्यों डरें, ये आदमी हैं, आप शेर हैं,
ये क्या ! हमारे पांव के तले से ये ज़मीं खिसक रही है क्यों ?
अरे ये क्या हुआ ! ये चारों ओर आग-सी भड़क रही है क्यों ?
हमारी फौज क्या हुई
वो ऐटलांटिक की मौज क्या हुई
ये फ़त्ह का बिगुल बजा रहा है कौन ?
हमारी फ़त्ह दूर है, कहो ! अभी से फ़त्ह का तराना गा रहा है कौन ?

"हमारा अज़्म कामरां है आज
हमारी सरज़मीं पे ख़ुद अलम हमारा ज़रफ़शां है आज
तमाम कोरिया का लाल बाउटा निशां है आज
कहां हैं मैक आर्थर कहां है आज ?"

ये मेरा नाम भी तो जानते हैं, हाय क्या करूं ?
कहां छिपूँ ?
अरे मैं घिर गया मैं घिर गया
ये कोरिया तो साफ़ मुझ से फिर गया

दश्त-ओ-दर = जंगल और मैदान. शजर हजर = बनस्पति और पहाड़. संग व ख़िश्त पत्थर-मिट्टी. अज़्म = इरादा, निश्चय. कामरां = सफल. अलम = झंडा. जरफशां = चमकदार. लाल बाउटा = लाल झंडा.

बचाइयो बचाइयो
कोई नहीं तो चांभ काई शेक तू ही आइयो

तुम्हीं हो दुश्मनों की फौज के कमांडर जवाब दो ?
तुम्हीं हो मैक आर्थर जवाब दो ?
नहीं नहीं मैं कोई भी कमांडर नहीं
मैं मैक आर्थर नहीं !
मैं मैक आर्थर नहीं !!

अली सरदार जाफ़री

एशिया जाग उठा

(१)

यह एशिया की ज़मीं, तमद्दुन की कोख, तहज़ीब का वतन है
यहीं पे सूरज ने आँख खोली
यहीं पे इन्सानियत की पहली सहर ने रुख़ से नक़ाब उलटी
यहीं से अगले युगों की शमओं ने इल्म-ओ-हिकमत का नूर पाया
इसी बुलन्दी से वेद ने ज़मज़मे सुनाए
यहीं से गौतम ने आदमी की समानता का सबक़ पढ़ाया
यहीं से मज़दक ने अद्ल-इन्साफ़ और मुहब्बत के राग छेड़े
हमारी तारीख़ की हवाएँ मसीह के बोल सुन चुकी हैं
हमारा सूरज मुहम्मदे मुस्तफ़ा के सर पर चमक चुका है
और अब हमारे क़दीम आकाश के सितारे
क़दीम आँखों से माउ की सुर्ख़ फ़ौज की शान देखते हैं

यह ख़ाक वह ख़ाक है कि जिसने
सुनहरे गेहूँ के मोतियों को जनम दिया है

तमद्दुन = संस्कृति. सहर = सुबह. हिकमत = विद्या. क़दीम = प्राचीन.

यह ख़ाक इतनी क़दीम जितनी क़दीम इन्साँ की दास्तानें
अज़ीम इतनी अज़ीम जितनी हिमालिया की बुलन्दियाँ हैं
हसीन इतनी हसीन जितनी हसीं अजन्ता की अप्सराएँ,
यह अपनी फ़ैयाज़ियों में दरियाए-नील-ओ-गंगा से कम नहीं है
यह गोद बच्चों से और फूलों से और फलों से भरी हुई है

हक़ीर केप्लिंग मर चुका है
ज़लील चर्चिल को शायद अब तक ख़बर नहीं है
हमारे खंडरों के नाम भी उनकी सारी बकवास से गराँ हैं
हमारा विर्सा मोहंजोदाड़ो से लेके दीवारे-चीन तक है
हमारी तारीख़ ताज और सीकरी से अहरामे-मिस्त्र तक है
हमें रवायात के ख़ज़ाने से बाबुल-ओ-नैनवा मिले हैं
फ़साहतों ने हमारे बचपन के होंठ चूमे
बलाग़तों ने बड़ी हसीं लोरियाँ सुनाईं
ज़बान खोली तो वेद, इंजील और क़ुरआन बनके बोले
हमारी तख़ईल आसमानों की उस बुलन्दी को छू चुकी है
जहाँ से 'फ़िरदौसी' और 'सादी'
'निज़ामी,' 'ख़ैयाम' और 'हाफ़िज़' के चाँद सूरज चमक रहे हैं
बुलंदियाँ, जिन पे 'वाल्मीक और पाक 'तुलसी'

अज़ीम = महान. फ़ैयाज़ियों = उदारताओं. हक़ीर = नीच. गराँ = भारी. विर्सा = उत्तराधिकार. अहराम मिस्त्र = मिस्त्र के परामिड. रवायात = परम्पराओं. फ़साहतों = सुन्दर बोली. बलाग़तों = सुन्दर वर्णन, वर्णन कौशल. तख़ईल = कल्पना.

'कबीर' और 'सूर' हुकमराँ हैं
उन्हीं फ़िज़ाओं की बिजलियाँ हैं
जो साज़े-'एक़बाल' और 'टैगोर' के तरानों में गूँजती हैं
जो आज 'नाज़िम' की शायरी में तड़प उठी हैं
जो खोह-मों की कहानी बनकर चमक रही हैं

(२)

गुज़र चुके हैं हमारे सर से
हज़ारों सालों के तुन्द तूफ़ाँ
मुसीबतों की हवाएँ ज़ुल्म-ओ-सितम की आँधी
न जाने कितने सिकन्दरों की वबाएँ आईं
हज़ारों चंगेज़ और तैमूर, अनगिनत मान्चू लुटेरे
कहीं से रावन कहीं से ज़ोहाक अपने बालों में सांप गूंथे
कहीं से हेस्टिंग्ज़ और क्लाइव
कहीं से डायर कहीं से वेवल
कोई सियह फ़ाम, कोई भूरा, कोई सफ़ेद और कोई पीला
ग़रज़ हरेक रंग के भेड़ियों के हमले
मगर ये अनमोल ख़ाक फिर भी हसीन फिर भी जवाँ रही है
हमारे रुस्तम हमारे अर्जुन मरे नहीं हैं
वो जंगलों और पहाड़ियों में ज़मीन पर काश्त कर रहे हैं

फ़िज़ाओं = वायुमंडलों. वबाएँ = महामारियाँ. ज़ोहाक = ईरान का एक ज़ालिम बादशाह. सियहफ़ाम = कालाभुजंग.

हमारे फ़रहाद अब भी तेशे चला रहे हैं
जवान लैला, हसीन शीरीं, कुँआरी हीर अब भी गा रही है
शकुन्तलाएँ घनेरे पेड़ों के सब्ज़ सायों में नाचती हैं
हम एशिया के अवाम सूरज की तरह डूबे हैं और उभरे
दुखों की अग्नी में तप के निखरे
हमारी आँखों के आगे कितनी सियाह सदियों की साँस टूटी
न जाने कितने बलन्द परचम
हमारी नज़रों के सामने सर नुगूं हुए हैं
उलटते देखे हैं तख़्त हमने
उजड़ते देखे हैं ताज हमने
हमारे सीने से जाने कितने रथों के पहिये गुज़र चुके हैं
मगर हम इस भूक, क़त्ल, इफ़्लास के अंधेरे
हवादिसे-रोज़गार के तुन्द-ओ-तेज़ शोलों में अनगिनत जन्म ले चुके हैं
हम अपनी धरती की कोख में बीज की तरह दफ़्न हो गए थे
मगर नई सुबह की हवा में
बहार की कोंपलों में तब्दील होके बाहर निकल पड़े हैं

(३)

हमारी नज़रों में अगले वक़्तों के सूरमाओं के कारनामे
गए युगों के उफ़क़ धुंधलकों में छिप चुके हैं

काश्त = खेती. परचम = झंडे. सरनुगूं = नत मस्तक. इफ़्लास = दरिद्रता. उफ़क़ = क्षितिज.

मगर पुराने दिलावरों के पुराने चेहरे
पुराने गर्दे-ओ-गुबार में जगमगा रहे हैं
ये बेदिली क्यों
झिझक यह कैसी
चल ए बगावत के अज़्म ए इन्क़लाब के आहनी इरादे
उठादे ए ज़ौक़-ओ-शौक़ तारीख़ के रुख़े-आतशीं से बढ़कर
हमारे बीते हुए मह-ओ-साल की नक़ाबें
पड़ी वो डंकों पे चोट गूंजीं वो ढोल की दिल नशीं सदाएँ
हज़ारों तलवारें बिजलियों की तरह से चमकीं
हवा में झन्कारें नाच उट्ठीं
ज़मीन की काँपती हथेली पे ज़लज़ले, ज़लज़लों की लहरें
वो देखो अलमूत की पहाड़ी उभर रही है
बलन्द चोटी पे एक धोबी
वो अलमुक़न्ना कि जिसकी नज़रों की आग के सुर्ख़ सुर्ख़ बादल
फ़िज़ा में फैले ज़मीं पे बरसे
और अपनी बेताब बिजलियों से
दयारे बग़दाद में ख़िलाफ़त की शान-ओ-शौकत को फूँक डाला
अरब के जागीरदारो भागो
तुम्हारी फ़ौजों की छावनी पर किसान लश्कर झपट पड़े हैं
ज़मीन और आसमान शोलों के पैरहन में लरज़ रहे हैं

अज़्म = संकल्प. आतशीं = अग्निमय. मह-ओ-साल = महीना व बरस.
ज़लज़ले = भूकंप.

दयारे-खैबर

जहाँ पठानों के गोल हलकों में नाचते हैं
और उनकी ढोलक की थाप औरंगज़ेब का दिल हिला रही है
ये आफ़रीदी हैं और वो मेहमन्द और वो शनवारियों का जिर्गा
दफ़ों पे "ग़ैरत" का लफ़्ज़ दोशीज़ा उंगलियों से लिखा हुआ है
रबाब के तार "जग और जंग" कह रहे हैं
ग़ुरूर कर ए ज़मीने खैबर
कि तुझको खुशहाल ख़ाँ खतक सा अज़ीम शायर अता हुआ है
वो जिसका हर लफ़्ज़ एक रजज़ है
ज़माना औरंगज़ेब को भूलता चला जा रहा है लेकिन
वो बाग़ी शायर, वो रहनुमा, सूरमा सिपाही
हरेक सदी में उठेगा खैबर की वादियों से
नई जवानी, नई बहारों, नई तमन्ना का साज़ लेकर
जहाँ कहीं दिल का दर्द होगा
जहाँ कहीं ग़म का सोज़ होगा
जहाँ कहीं हक़ की बात होगी
किसी भी गोशे में एशिया के
जहाँ कहीं आदमी बग़ावत का नाम लेगा
वहीं से खुशहाल ख़ाँ की ललकार गूंज उट्ठेगी उसके नग़मे बरस पड़ेंगे
सुहादरी के पहाड़ अंगड़ाई लेके जागे

दोशीज़ा = कुंआरी. ग़ुरूर = अभिमान. रजज़ = वीरता के लिये उभारने वाले गीत.

ज़मीं का नक़्क़ारा तेज़ घोड़ों की तेज़ टापों से बज रहा है
पहाड़ की चोटियों ने तोपों का रूप धारा
चटानें क़िलों की शक्ल लेकर उभर रही हैं
किसान सैलाब बन के उबले
पलट गईं वक़्त की हवाएँ
उलट गईं सल्तनत की चालें
मुग़ल शहंशाहियत को महराष्टर के शेरों ने नोच डाला
किसान, सैलाब, ज़लज़ले, शोर, गीत, तूफ़ाँ
बग़ावतें, इन्क़लाब, नारे
ग़दर का हैजान, टाइपिंग का उबाल और बक्सर का तूफ़ाँ
ये सब दिलेरों के मोरचे हैं
जो तीस सदियों से लड़ रहे हैं
ये सर हमेशा कटा किये हैं
ये दिल हमेशा लुटा किये हैं
ये हाथ गलते रहे हैं लोहे की हथकड़ी में
ये पैर सड़ते रहे हैं ज़िन्दाँ की बेड़ियों में
ज़मीं अमर है
हवा अमर है
अमर है पानी
अमर अवामी दिलों की धड़कन
जो आसमाँ की खुली फ़िज़ाओं को ढूँढती है

अवाम मरते नहीं हैं सो जाते हैं ज़मीं की सुनहरी मिट्टी में मुंह
छिपाकर
वो अपनी मां की सुनहरी छाती से सर लगाकर बहार के ख़्वाब
देखते हैं
ज़मीन से कोंपलें निकलती हैं और आकाश से मिता
हवा से बादल-गरज से बिजली
अवाम की राख से बग़ावत की आग, शोलों से ज़िन्दगानी

सलाम लो एशिया के नौखेज़ सरफ़रोशों की हिम्मतों का
पुराने वक़्तों के सूरमाओ
गए युगों के उफ़क़ से क्यों देखते हो हमको
हम आख़िरी जंग लड़ रहे हैं
तुम्हारे हाथों में इब्तदा थी
हमारे हाथों में इन्तहा है
तुम्हारे हाथों में सिर्फ़ तलवार थी, हमा
जवान हाथों में वक़्त-ओ-तारीख़ की अनाँ है
हमें तुम अपने जवान शानों का ज़ोर अपनी
ओक़ाबी आँखों का नूर देदो
बलन्द माथे की रोशनी लेके आओ—आओ
कि हमको मालूम है तुम अब तक मरे नहीं हो
कि तुम कभी भी नहीं मरोगे

अनाँ = लगाम. शानों = कन्धों. ओक़ाबी आँखों = ओक़ाब पक्षी की सी आँखों.

किसान फ़ौजों को अपनी अलमृत की पहाड़ी से लेके उतरो
हिजाज़ और नज्द के ख़ुश आवाज़ सारबानों को साथ लाओ
हमारे लशकर में आओ तुम अपने ज़र्द दरिया के साहिलों से
हमारे लशकर में आओ कोहाट और ख़ैबर की वादियों से
हमारे लशकर में आओ मेरठ के और देहली के मोरचों से
मुहादरी की चटानें एक बार फिर तरानों से गूंज उट्ठें
और एशिया के पठार यों कसमसा के जागें
कि सामराजी दिलों के पत्थर
लरज़ उठें उनकी राजधानी के सारे ऐवान काँप जाएँ

(४)

ये एशिया की ज़मीं तमद्दुन की कोख, तहज़ीब का वतन है
बढ़ाएँ अपनी दुकान पच्छिम के सारे सौदागरों से कहदो
हमारे बाज़ार में लहू का ज़लील ब्योपार बन्द कर दें
कि उनकी तोपों के और मशीनों के वास्ते अब
यहाँ से ईंधन नहीं मिलेगा
वह दिन गए, जब
यहाँ तुम आए थे अपनी हस्ती का कोढ़ लेकर
ज़बान पर बाइबिल थी, हाथों में राइफ़ल थी
लबों पे मीठी हँसी, निगाहों में ज़हर, दिल में हवस परस्ती
शिकारी कुत्तों की तरह तुम एशिया की बस्ती में फिर रहे
तुम्हारी रफ़्तार जिस तरह तोप के धमाके

सारबानों = ऊँट चलाने वालों.

तुम्हारी हर साँस जैसे बारूद उड़ रही हो
तुम्हारी परछाइयां वबाओं का पैरहन थीं
हमारी आँखों ने फिर यह देखा
कि बादलों से हमारे आँसू बरस रहे थे
ज़मीन से क़हत, खेत से भूक उग रही थी
ज़बान गूंगी थी, उंगलियाँ सुन थीं, सांस बेकैफ़-ओ-बे तरन्नुम
सितार के तार उंगलियों में उलझ गए थे

वह दिन गए जब
तुम्हारे हाथों में राइफ़ल थी हमारे हाथों में कुछ नहीं था
हथेलियों पर फ़क़त लकीरों को गिन रहे थे
शुमार करते थे आँसुओं का
मगर गुलामी ने, सैकड़ों साल की गुलामी ने हमको लड़ना सिखा दिया है
हमारे अश्कों की बूंदें अब गोलियों में तब्दील हो गई हैं
तुम इस पे फूले हुए हो शायद
कि च्यांग की तरह चन्द भाड़े के बूढ़े टट्टू
तुम्हारे रथ में जुते हुए हैं
कुछ अंधी आँखों के बैल अब भी तुम्हारा कोल्हू चला रहे हैं
तुम्हारी जंगी मशीन में कुछ
घिसे हुए टूटे फूटे पुरज़े लगे हुए हैं
मगर यह गद्दार कब तलक काम आसकेंगे

पैरहन = लिबास. क़हत = अकाल. बेकैफ़ = बेमज़ा, नीरस. तरन्नुम – लय, धुन.

कि एशिया अपनी नींद की कैफ़ियत से बेदार हो चुका है
हमारी आँखों में आग—तेवर में बिजलियाँ हैं
हमारे सीने में दर्द, होंठों पे गीत, हाथों में राइफ़ल है

(५)

यह क्या कहा ? तुमने हमको तहज़ीब और तमद्दुन का नूर बख़्शा ?
बजा है, सच है,
जो तुम न होते तो हम न होते
नहीं, कोई शक नहीं कि तुमने ज़मीन पर पटरियाँ बिछाईं
यह दूसरी बात है कि उन पटरियों के नीचे
हमारी लाशें बिछी हुई थीं
हमारे साहिल पे तुम दुख़ानी जहाज़ लाए
और उन में तोपें खड़ी हुई थीं
हमारे साहिल के ज़ख़्म अब भी
लहू के होंठों से दर्द और टीस की ज़बाँ से
तुम्हारी "तहज़ीब" के क़सीदे सुना रहे हैं
जहाज़ जो तीन सौ बरस से
समन्दरों पर रवाँ दवाँ हैं
हमारे आँसू करोड़ों आँखों से उन जहाज़ों को देखते हैं
जो सुबह के नूर से निकल कर अंधेरी रातों में छिप रहे हैं
वह जिन में हिन्दोस्तान, बर्मा,

साहिल = किनारा. दुख़ानी जहाज़ = भाप के जहाज़, समुन्दरी जहाज़
क़सीदे = तारीफ़-गीत.

मलाया, ईरान, शाम, लबनान, मिस्र, तुर्की, यमन की मेहनत लदी
     हुई है
इलायची, ज़ाफ़रान, अंगूर, कोयला, टीन, तेल, चावल
रबर, सितारे, कपास और चाँदनी भरी है
हमें मशीनों से और मिलों से गिला नहीं है
कि जिन पे इन्सानियत की अज़मत की सुर्ख़ मुहरें लगी हुई हैं
गिला है तुम से
जिन्होंने इन्सान की बनाई हुई मशीनों को डायनों में बदल दिया है
गिला है उनसे

[illegible] पार्सी

और उनसे चाँदी के ढेर, सोने के ऊँचे ऊँचे पहाड़ उठाए
गिला है उन बूढ़े सूद ख़ोरों से, नफ़ा बाज़ों की साज़िशों से
जो सूत के तार और रेशम की ढेरियों को
निगल के अपने बदन की चर्बी बढ़ा रहे हैं
मगर यहाँ हम
किसान, मज़दूर, मोची, धोबी,
कुम्हार, लोहार अपने जिस्मों पे खाल पहने हुए खड़े हैं
हमारी आँखें, जले हुए ख़्वाब—और चेहरे
उड़े हुए रंग हैं—दिलों में
सुनहरी आशाओं की चिताएँ भड़क रही हैं

तुम्हारी "तहज़ीब" सड़ चुकी है
तुम्हारा झूटा "तमद्दुन" अपने फ़रेब में दफ़्न हो गया है

तुम्हारी "तहज़ीब" क़त्ल-ओ ग़ारत का नाच कोड़ों की रागिनी है
तुम्हारी "तहज़ीब" भूके बच्चों की मौत मांओं की खुदकुशी है
तुम्हारी "तहज़ीब" दस्तकारों के ख़ून आलूद हाथ टूटे हुए अंगूठे
तुम्हारी "तहज़ीब" धूप में सूखती हुई हड्डियों के पर्बत
तुम्हारी "तहज़ीब" क़स्र पेकिंग की जली राख का है ग़ाज़ा
तुम्हारी "तहज़ीब" ज़हर-ओ-अफ़्यून की तिजारत
तुम्हारी "तहज़ीब" एशिया की ज़मीं पे नंगी पड़ी हुई है

(६)

यह एशिया की ज़मीं तमद्दुन की कोख, तहज़ीब का वतन है
जबीं पे तारों का ताज, पैरों में झाग की झाँझनों का नग़मा
ज़मीन—सदियों पुराना चेहरा
किसान—सदियों पुराने हाथों में अपने लकड़ी के हल संभाले
ग़रीब मज़दूर, जलती आंखें
उचाट नींदों की तल्ख़ रातें
थके हुए हाथ, भाप का ज़ोर, गर्म फ़ौलाद की रवानी
जहाज़, मल्लाह, गीत, तूफ़ाँ
कुम्हार, लोहार, चाक, बरतन
ग्वालिनें दूध में नहाई
अलाव के गिर्द बूढ़े अफ़सानागो, कहानी,
जवान मांओं की गोद में नन्हे नन्हे बच्चों के भोले चेहरे

क़स्र = महल. जबीं = माथा. तल्ख़ = कटु. अफ़सानागो = कहानी कहने वाले.

लहकते मैदान, गाएँ भैंसें
फ़िज़ाओं में बांसुरी का लहरा
हरी भरी खेतियों में शीशे की चूड़ियाँ खनखना रही हैं
उदास सहरा पयम्बरों की तरह से ख़ामोश और गम्भीर
खजूर के पेड़ बाल खोले
दफ़ों की आवाज़ ढोलकों की सदा समन्दर के क़हक़हे, नारियल के
पेड़ों की सर्द आहें
सितार के तार से बरसते हुए सितारे
अनार का फूल, आम का बौर, सेब-ओ-बादाम के शगूफ़े
कोठार, खलिहान, खाद के ढेर, कवांरी पगडंडियों की गर्दिश
बलन्द बाँसों के झुंड हंसती धनक के नीचे
घनेरे जंगल
पठार, मैदान, रेगज़ारों के गर्म सीने
गुफाएं जन्नत की तरह ठंडी
समन्दरों में कंवल के फूलों की तरह रक्खे हुए जज़ीरे
चमकते मूंगों की मुस्कराहट
वो सीपियों की हंसी, वह संथाल लड़कियों के चमकते दांतों की
तरह मोती
वो मछलियाँ गोश्त से भरी कश्तियाँ जो पिघली
सफ़ेद चाँदी में तैरती हैं
वो लम्बी लम्बी हसीन नदियाँ

पयम्बर = अवतार.

जो अपनी मौजों से साहिलों के लरज़ते होंटों को चूमती हैं
दुल्हन बनी वादियों की नाज़ुक कमर में झरनों के नर्म हल्के
पहाड़ियों की हथेलियों पर धरे हुए नीलगूं कटोरे
सितारे मुंह देखते हैं झीलों के आइने में
हिमालिया के गले में गंगा की और जमना की शोख़ बाँहें
पहाड़ की आँधियों के माथों पे बर्फ़ के नीलगूं डुपट्टे
बलन्दियों पर ख़फ़ीफ़ सा इरतआश हलकी सी रागिनी क.
हवा के पैरों में जैसे घुंघरू बँधे हुए हों
कहीं फ़िज़ाओं में बर्फ़ के फूल उड़ रहे हैं
कहीं ज्वाला मुखी के शोले
जो अपनी ज़ुल्फ़ों को पिघले लावे की कंघियों से सँवारते हैं
हवाओं की उंगलियाँ चनारों के सुर्ख़ बालों में रेंगती हैं

ये एशिया है, जवान, शादाब और धनवान एशिया है
कि जिस के निर्धन ग़रीब बच्चों को भूक के नाग डस रहे हैं
वो होंठ जो मां के दूध के बाद फिर न वाक़िफ़ हुए कभी दूध के मज़े से
ज़बानें ऐसी जिन्होंने चक्खा नहीं है गेहूँ की रोटियों को
वो पीठ जिसने सफ़ेद कपड़ा छुआ नहीं है
वो उंगलियाँ जो किताब से मस नहीं हुई हैं
वो पैर जो बूट और सलीपर की शक्ल पहचानते नहीं हैं
वो सर जो तकियों की नर्म लज़्ज़त से बेख़बर हैं
वो पेट जो भूक ही को भोजन समझ रहे हैं

इरतआश = कंपन. शगूफ़े = कलियाँ. शादाब = फला फूला. मस = स्पर्श.

ये नादिरे-रोज़गार इन्साँ
तुम्हें फ़क़त एशिया की जन्नत ही में मिलेंगे
जो तीन सौ साल के "तमद्दुन" के बाद भी "जानवर" रहे हैं
कहाँ हो "तहज़ीब" और "तमद्दुन" की रोशनी लेके आने वालो
तुम्हारी "तहज़ीब" की नुमायश है एशिया में
नज़र उठाओ क़रीब आओ
ये कोढ़ियों के हुजूम देखो
ये देखो हैज़े की कै, ये ताऊन की है गिलटी
ये जिस्म के आबले हैं उस आतिशक की गर्मी
जो एशिया को मिली है, इनआम साम्राजी सिपाहियों से
ये पीठ देखो, ये पीठ कितनी हसीं है जिस पर
तुम्हारे कोड़ों की बद्धियाँ हैं
ये फाँसियों पर लटकती लाशें
ये जेल खानों में बन्द इन्साँ
ये दिल जो हैं गोलियों से छलनी
ये आँख की पुतलियाँ जो ख़ून और पीप की तरह बह रही हैं
ये चेहरे खंडरों की तरह टूटे
ये हाथ लकड़ी की तरह सूखे
ये पेट मटकों की तरह फूले
ये मुफ़लिसी और यह जहालत की रात बेचाँद और सितारा
ये भूक, ये बेबसी, ये नफ़रत
ये हँसते फोड़े

लटकते घेंघे
दहकते नासूर, चीखते ज़ख़्म, रेंगते जिस्म, जैसे कीड़े
तुम्हारी सरमायादार "तहज़ीब" की कहानी सुना रहे हैं
बुलाओ अपने मुसौविरों और बुत गरों को
कहीं ज़माने में इस क़दर दर्दनाक चेहरे नहीं मिलेंगे
तुम्हारी शाहाना यादगारों से एशिया का
हर एक कोना भरा हुआ है
कहीं पे मेहराबे- फ़तह बांधी
कहीं रऊनत की लाठ उठाई
कहीं पे कांसे के घोड़े डाले
कहीं पे पत्थर के बुत बनाए
मगर ये "तहज़ीब" और "तमद्दुन" की यादगारें कहीं नहीं हैं
बुलाओ अपने मुसौविरों और बुतगरों को
कहो कि इन दर्दनाक चेहरों से एक एक म्यूज़ियम सजादें
तुम्हारे कारे-अज़ीम को जावदां बनादें

(७)

ज़मीन सोना उगल रही है
फ़िज़ाएँ चाँदी लुटा रही हैं
हवाओं में हुन बरस रहा है
समन्दर अपनी तड़पती मौजों के जाल में मछलियाँ लिये हैं

मुसौविर = चित्रकार. बुतगर मुर्तिकार. रऊनत = घमंड
जाविदाँ = अमर.

ज़मीं के सीने पे पेड़, फल, फूल, अनाज, गहराइयों में कानें
सियाह हीरे, सियह ख़ज़ाने
हर एक पत्थर की रग में दौड़ा हुआ है लोहा
हर एक परत कोयले से पुर है
वो तेल के सरबमुह चश्मे
कि जिन में पिघले हुए सितारे भरे हुए हैं
सुनहरे शहतूत के दरख़्तों पे नर्म रेशम के नन्हे कीड़े
चमकते पैराहनों, दमकते हुए दुपट्टों पे ख़्वाब पर ख़्वाब बुन रहे हैं
हसीन पुर ज़ोर आबशारों में बिजलियों की तड़प निहां है
हर एक नदी अपने जल की शक्ती से बह रही है
मिलों के पहियों की गर्दिशें, चर्ख़ियों के नग़मे
दहकते इंजन के सीने जो आंधियों के आगे तने हुए हैं
मगर हमारे वतन की दौलत
नदी के पानी की तरह बहती
किसी भयानक सियह समन्दर में जा रही है
उदास है एशिया का चेहरा
बदन है नंगा
सड़क पे बच्चों की नन्ही नन्ही
हथेलियाँ ठीकरों की सूरत पड़ी हुई हैं
हज़ारों बेकार हाथ शानों पे झूलते हैं

पैराहन = कपड़े, लिबास. आबशार = जल प्रपात.

(८)

कहाँ हो ए एशिया के बेटो ?
तुम्हें ख़बर भी है तुम ग़ुलामों की तरह से नीचे जा चले हो
तुम्हारी क़ीमत है चन्द डालर
तुम्हें ख़बर भी नहीं मगर तुम
हज़ार पहियों के जंगी रथ में जुते हुए हो
तुम्हारा लोहा पिघल के मौत और जंग का रूप ढालता है
रूई के गालों से कारतूसों के मुँह भरे हैं
तुम्हारे घर बेचराग़, अंधी है लौ दियों की
मगर तुम्हारे शरीफ़ नेता
शरीफ़ आक़ा
तम्हारी धरती का तेल लोहे के हाथियों को पिला रहे हैं
तुम्हारे मुँह और पेट गेहूं की रोटियों को तरस रहे हैं
मगर तुम्हारे सुनहरे गेहूं का चाँदी जैसा सफ़ेद आटा
सियाह बारूद बन गया है
हवाओं के गीत बम के गोलों में दब गए हैं
समन्दरों की हसीन नीलाइयों पे जंगी जहाज़ अपनी
सियाह परछाइयों की चादर बिछा रहे हैं
नज़र उठाओ
फ़िज़ा में शोलों का जाल फैला हुआ है देखो
ज़बान खोलो
और अपने नेताओं, देसी आक़ाओं से ये पूछो

अगर तुम आज़ाद हो तो फिर क्यों बंधे हो लन्दन के अस्तबल में
अगर तुम आज़ाद हो तो न्यूयार्क और पेरिस के गन्दे घूरों पे क्यों
पड़े हो ?
हमारी धरती पे आख़िर अमरीकी और अंगरेज़ी लशकरों के पड़ाव
क्यों हैं ?
ये एशिया के अवाम पर ज़ुल्म-ओ-जब्र क्यों है ?
ये जंग किसके ख़िलाफ़ है ? कौन लड़ रहा है ?
ये साम्राजी निगाहें किस सम्त उठ रहीं हैं ?

उधर, जिधर ज़िन्दगी थिरकती है नौ बहारों के पैरहन में
जहाँ पे ज़ुल्म -ओ-सितम नहीं है
जहाँ लड़ाई की कोई तैयारियाँ नहीं हैं
जहाँ पे बमबारियाँ नहीं हैं
फ़क़त सितारे हैं चाँदनी है
सुरूर है, रक़्स है, बहारें हैं, ज़िन्दगी है
वह सोवियत यूनियन हसीन-ओ-जमील रंगों की मुस्कराहट
जो सारे मशरिक़ को अपने रंगीं धनुष की आग़ोश में लिये है

कहाँ हो ए एशिया के बेटो !
कड़क के बोलो
कहो कि हम नफ़अ ख़ोरियों के लिये रगों का लहू न देंगे
कहो कि हम ज़हर घोलने के लिये दिलों के सुबू न देंगे

जब्र = ज़्यादती, ज़बरदस्ती.

कहो लड़ाई के राक्षस को हम अपने बच्चों के सर न देंगे
कहो कि शोलों की नागिनों को हम अपने आबाद घर न देंगे
कहो कि ये एशिया की बस्ती है टैंक का रास्ता नहीं है
उड़ेंगे जिसमें तुम्हारे बमबार अब ये ऐसी हवा नहीं है
तुम्हें गुज़रना पड़ेगा हरगाम पर तिलंगाना की ज़मीं से
तुम्हारे सर पर पहाड़ बरसेंगे छापा मारों की आस्तीं से
तुम्हारी राहों को चीन और वीत नाम के शेर रोक लेंगे
तुम्हारी फ़ौजों को कोरिया के अवाम दोज़ख़ में झोंक देंगे
भँवर के हलक़े तुम्हारे पैरों में अपनी ज़ंजीर डाल देंगे
हवाओं के हाथ तुमको नीली फ़िज़ा से ऊपर उछाल देंगे
हम आज बेदार हो चुके हैं तुम्हें अभी तक ख़बर नहीं है. ?
ये बम के गोले उगे हुए हैं हमारे कांधों पे सर नहीं है
डरो हमारी दहकती आंखों से आग की जिनमें नदियाँ हैं
डरो हमारे तड़पते हाथों से जिनकी जुम्बिश में बिजलियाँ हैं
डरो कि हम एक जहाने-नौ की ज़मीं पे तामीर कर रहे हैं
डरो कि हम ख़ूने-दिल से ख़्वाबों में रंगे ताबीर भर रहे हैं

(६)

उठो उठो एशिया के बेटो !
मैं तुमको आवज़ दे रहा हूं
सफ़ेद धोती, सियाह कोट और सियाह टोपी पहनने वाले
मेरे बिरादर ख़फ़ा न होना

मैं पूछता हूँ तुम्हारी टोपी पे मैल क्यों है ?
तुम्हारा कोट और तुम्हारी धोती फटी हुई है
मुझी से शरमा रहे हो भाई !
जवाब दो, मैं तुम्हारा हमदर्द-ओ-आशना हूँ
तुम्हारी हालत छिपी नहीं है
तुम्हारी बेटी के पास स्कूल की किताबें नहीं हैं बीवी के हाथ में चूड़ियाँ नहीं हैं
पुराने जूते की कील तलुवे में चुभ रही है
मेरे जवाँ साल दोस्त हैरान क्यों हो ? मैं अजनबी नहीं हूँ
तुम्हारा साथी हूं अब से सौ साल पहले तुम से
मैं चीन-ओ-बरमा में मिल चुका हूँ
तुम्हारे हाथों में एक बन्दूक़ जिस्म पर एक ख़ाकी वर्दी
कि जिस पे गर्द-ओ ग़ुबार की तह जमी हुई थी
तुम्हारी वर्दी बदल चुकी है
मगर मेरे दोस्त अपना दुश्मन अभी वही है
वही पुराना ज़लील, ख़ुर्राट, साम्राजी
तुम एशिया के सपूत हो, नौजवाँ सिपाही
किसान मांओं के नौनिहालो
मैं सिर्फ़ यह कह रहा हूँ अपनी ज़मीन का एहतराम करना
वतन की दौलत, घरों के दरवाज़ों के मुहाफ़िज़
तुम अपनी बहनों के ख़्वाब, बच्चों की मुस्कराहट के पासबाँ हो

एहतराम = आदर. मुहाफ़िज़ = रक्षक. पासबां = संतरी.

अरे ये तुम हो !
बताओ तुम अब तलक कहाँ थे !
मैं तुमको एक एक साहिल, एक एक पोर्ट पर ढूँढता फिरा हूँ
मैं तुम से शंघाई में मिला था
ख़बर नहीं कितने साल गुज़रे
अदन के साहिल पे तुम खड़े थे
तुम्हारा बन्दर से मुंह का कप्तान तुमको अकसर
ख़लासी कह कर पुकारता था
फिर एक दिन तुम न जाने किस बात पर यकायक गरज उठे थे
तुम एशिया के तवील साहिल की आबरू हो
समन्दरों पर निगाह रखना
कि दुश्मनों के जहाज़ और डाकुओं के बेड़े
हमारे साहिल के आस पास अब भी तैरते हैं

मेरी बहन ! हाँ, मैं तुमको पहचानता हूं आओ
क़रीब आओ
तुम्हारे माथे का ख़ून अब तक थमा नहीं है !
तुम्हारे सीने पे अब भी संगीन का निशाँ है
मगर वह सीसे की गर्म गोली
तुम्हारे पहलू को चीर कर जो निकल गई थी
उसे मैं एक एक आदमी को दिखा रहा हूँ
ये देखो मैं इसको हाथ में लेके पूछता हूं
ये गोली किस मुल्क में बनी है ?

कहाँ से आई है ?

कौन लाया ?

यही है इमदाद जो हमें अपने दोस्त मग़रिब के साम्राजी हराम ख़ोरों
से मिल रही है ?

उठो मेरी मां तुम्हारी बेटी मरी नहीं है

वो ज़ख़्मी हाथों में सब से आगे

जुलूस में एक सुर्ख़ झंडा लिये खड़ी है

उठो मेरी मां

तुम अपने सर के सफ़ेद बालों की चाँदनी से

अंधेरी रातों में नूर भर दो

वतन के सीनों को जगमगा दो

तुम्हारे हाथों की झुर्रियाँ मुस्करा रही हैं

मेरी शरीफ़-ओ-ग़यूर मां अपना मर यमीहाथ अपने बच्चों के सर पे
रख दो

हम आख़िरी जंग लड़ने मैदाँ में जा रहे हैं

तुम्हारी आँखों में अश्क हाथों की झुर्रियाँ मुस्करा रही हैं

(१०)

जहाँ में तूफ़ान आरहा है

कहाँ हो अमरीकी बदमआशो, ये चीन का इन्क़लाब देखो

तुम्हारा मुंह एक ही तमाँचे में फिर गया है जवाब देखो

वो किस तरह मुस्करा रहे हैं शहीद रूहों के ख़्वाब देखो

ग़यूर = स्वाभिमानी. अश्क = आंसू .

चमकती किरनों की जोत पड़ती है एशिया जगमगा रहा है
जहाँ में तूफ़ान आ रहा है

पुकार कर चीन कह रहा है कि एशिया की निजात हूँ मैं
बज़ाहिर एक मुल्क हूँ हक़ीक़त में लेकिन एक कायनात हूँ मैं
जो एस्तालिन के दिल से निकली वो माउ के दिल की बात हूं मैं
वो बात जिसका हर्सी फ़साना तवील होता ही जा रहा है
जहाँ में तूफ़ान आ रहा है

ये वो सियासत है जिसने ख़ंजर की नोक से बेड़ियों को काटा
ये वो फ़रासत अटक गया साम्राजियों के गले में काँटा
ये वो सख़ावत है जिसने खेतों को रोटियों की तरह से बाँटा
ये है वो दाता जो दोनों हाथों से अपनी दौलत लुटा रहा है
जहाँ में तूफ़ान आ रहा है

अब आज पहले पहल हँसे हैं ग़मों के बेटे दुखों के पाले
वो उंगलियाँ कट गईं हलक़ से निकाल लेती थीं जो निवाले
फली कुछ इस तरह फ़स्ल अब की कि भर गए चावलों के प्याले
किसान खेतों में नाज बोता है और मोती उगा रहा है
जहाँ में तूफ़ान आ रहा है

(११)

ये शायरी शायरी नहीं है

निजात = मुक्ति. कायनात = सृष्टि. तवील = लम्बा. सियासत = राजनीति. फ़रासत = समझदारी, बुद्धिमानी. सख़ावत = उदारता. निवाले = कौर.

रजज़ की आवाज़, बादलों की गरज है, तूफ़ान की सदा है
कि जिसको सुनकर
पहाड़ आते हैं सब्ज़ माथों पे बर्फ़ की कलगियाँ लगाए
धुएँ के बालों में सुर्ख़ शोलों के हार गूंधे
समन्दर आते हैं झाग की झांझनें बजाते
हवाएँ आती हैं अपने झोंकों की नीलगूँ गोफने घुमाती
घटाएँ आती हैं बिजलियों पर सवार होकर
पठार आते हैं अपने कांधों पे नद्दियों की कमंद डाले
चटानें आती हैं अपने गुर्ज़-ए-गरां संभाले
वो जंगल आते हैं आंधियों के निशाँ उड़ाते
वो रेग ज़ारों के ग़ोल अपने दफ़ों पे गाते
बबूल आते हैं अपने काँटों के हाथ उठाए
दरख़्त आते हैं पत्तियों की हरी हरी तालियाँ बजाते
मनार आते हैं गुंबदों के बलन्द डंकों पे चोट देते
ज़मीन आती है अपनी ढोलक पे ताल देती
उजाले आते हैं गर्म सूरज की ढाल उठाए
अंधेरे आते हैं सर्द तारों के तीर जोड़े
वो खेत आते हैं अपने पोदों की फ़ौज लेकर
वो झाड़ झंकाड़ अपने सीने में छापा मारों के दल छिपाए
शहीद आते हैं ख़ूँ के होंठों से गीत गाते
सियासी क़ैदी शिकस्ते-ज़िन्दाँ के ख़्वाब लेकर

रजज़ = तारीफ़-गीत. गुर्ज़ = गदा. मनार = मीनार शिकस्ते-ज़िन्दाँ = कारागार के टूटने.

किसान कन्याएँ, जलती आँखों में जलती दोज़ख़ के गर्म शोले
जवानियाँ आरिज़ों की सुर्ख़ी में रंग-ओ-बुए-गुलाब घोले
धड़कते सीने शफ़क़ के आँचल में हुस्न की बिजलियाँ छिपाए
हथेलियाँ आती हैं हिना के कँवल जलाए
पियार आते हैं हँसते होंठों के फूल लेकर
हसीन माएँ बदन पे फ़स्ले-बहार की कोंपलें सजाए
हुमकते बच्चों की मुट्ठियाँ तितलियाँ दबाए
सितारे पलकों से नूर की कश्तियों को खेते
किताबें आती हैं गुनगुनाती
मकान आते हैं आह भरते
क्लर्क आते हैं अपनी बग़लों में काग़ज़ी फ़ाइलें दबाए
हथौड़े आते हैं जंगबाज़ों का दिल हिलाते
जहाज़ आते हैं राज हंसों का रूप धारे
वो सिगनल आते हैं अपने मग़रूर सर उठाए
वो इंजन आते हैं भाप के क़हक़हे लगाते
ब्वाएलर आते हैं जहन्नम पे मुस्कराते
वो पहिये आते हैं साम्राजी हरामख़ोरों का सर कुचलते
खनकती रंगीन चूड़ियाँ जैसे कृष्न के चक्र को धुमाती
चमकते टीके भवों की तिरछी कमाँ उठाए
वो आँखें आती हैं जिन में अपने ग़मों का काजल लगा हुआ है
वो होंठ आते हैं जिन में कीलें ठुकी हुई हैं

आरिज़ों = गालों. शफ़क़ = ऊषा. हिना = मेंहदी. मग़रूर = घमंडी.

वो हाथ आते हैं जिनको धोया गया है शबनम के आँसुओं से
वो हाथ आते हैं जो हलों को चला रहे हैं
वो हाथ आते हैं जो मशीनों को छू रहे हैं
वो हाथ आते हैं जिन में झंडे उगे हुए हैं
वो हाथ आते हैं जिन पे नज़्में लिखी हुई हैं
वो हाथ आते हैं जो कहानी सुना रहे हैं
वो हाथ आते हैं जो सितारे बना रहे हैं
वो हाथ जो बिजलियों की गर्दन पकड़ रहे हैं
जो संग-ओ-आहन से अपना पंजा लड़ा रहे हैं
वो हाथ जो सारियों को रंगों की नांद में डूब दे रहे हैं
वो हाथ जो अपनी उंगलियों से ज़मीं की तक़दीर लिख रहे हैं
अब एशिया की ज़मीं पे हाथों का एक जंगल उगा हुआ है
ये संगे-मर्मर की संगे-असवद की मुट्ठियाँ हैं
कँवल की कलियाँ, कपास के फूल, बम के और नारियल के गोले
कहाँ है ए नौ उरूसे-सुबहे-बहार आजा
हमारी बेताब मुट्ठियों में
शफ़क़ का सेंदूर
चाँद तारों के फूल
किरनों की सुर्ख़ अफ़शाँ भरी हुई है

संग = पत्थर. आहन = लोहा. संगे-असवद = काला पत्थर. नौ उरूस = नई दुल्हन.

जमीलुद्दीन 'आली'

सब गीत मेरे !

ख़ुद लिक्खूँ या कोई और लिखे
सब गीत मेरे

कुछ सुनते हैं, कुछ गाते हैं
संगीत मेरे

सायों की तरह बे नूर आँखें
बाग़ों की तरह मसरूर आँखें
कुछ मौत की छाँव में सोई हुई
कुछ शक्ती से भरपूर आँखें
सब गीत मेरे

कोइ फुलवारी मुर्झाई हुई
या कोंपल हो इतराई हुई
कोई टूटी नाव पुरानी हो
या मौज नई बल खाई हुई
सब गीत मेरे

महलों के क़रीने हैं इन में
ग़ारों के ख़ज़ीने हैं इन में

कुछ वह दुख जिनसे अश्क बने
कुछ दर्द कमीने हैं इन में
संगीत मेरे
हर नर्म रसीले प्यार में हैं
हर ज़हरीले हथियार में हैं
हर हँसते हुए लब पर रक़्सां
हर आँसू की झनकार में हैं
संगीत मेरे
खुद लिक्खूँ या कोई और लिखे
सब गीत मेरे
कुछ सुनते हैं कुछ गाते हैं
संगीत मेरे

रक्साँ = नाचते हुए.

सरदार जाफ़री

सोवियत यूनियन

ये सोवियत की सरज़मीं जो फ़ख्रे रोज़गार है
मुहब्बतों की अन्जुमन जो सब की दोस्तदार है

बदल दिया है मौसमों को जिसने वो हवा है ये
नये सितारे नाचते हैं जिसमें वो फ़ज़ा है ये
जो ज़िन्दगी को मोह ले वो दिलरुबा अदा है ये

ये इश्क़ की ज़मीन है, ये हुस्न का दयार है

मिलों में, खेतियों में, मेहनतों की हुक्मरानियां
टरेक्टरों के गिर्द नाचती हुई जवानियां
सुरूर, कैफ़, शेर, नग़मा, दास्तां, कहानियां

खिज़ां का नाम भी नहीं बहार ही बहार है

थिरक रही है ज़िन्दगी फ़राग़तों की छांव में
हसीन गीत तैरते हैं नीलगूं फ़ज़ाओं में
यहां ग़मों की बेड़ियां नहीं किसी के पाँव में

न कोई अश्कबार है न कोई सो गवार है

यहां कोई हराम ख़ोर माल जोड़ता नहीं
यहां कोई किसी की रग से खूँ निचोड़ता नहीं
कोई किसी के बाग़े-दिल से फूल तोड़ता नहीं

यहां न सूदख़्वार है न कारख़ानादार है

फ़राग़तों = चिन्ता रहित दशाओं, अवकाशों.

दरख़्त, फूल, फल, बहार आदमी के वास्ते
ज़मीन, खेत, कोहसार आदमी के वास्ते
शिकोह-ओ-अज़मत-ओ-वक़ार आदमी के वास्ते
यहां हर एक शै पै आदमी का अख़्तियार है

ये दुश्मनों के साथ अपना ज़ोर आज़मा चुके
ये ज़रगरी की साज़िशों को ख़ाक में मिला चुके
ये लूट और खसोट की बिसात ही उठा चुके
अब उनकी मेहनतों से उनकी ख़ाक लालाज़ार है

न कोलचक पनप सके न डेनकिन उभर सके
न सामराजवादियों के दिल के घाव भर सके
न पापियों के डूबते हुए जहाज़ तर सके
ज़माना सिर्फ़ इश्तराकियत को साज़गार है

वक़ार = इज़्ज़त, अख़्तियार, दबदबा. कोलचक, डेनकिन = रूस की क्रांति में इन सेनापतियों द्वारा साम्राजी शक्तियों ने क्रांति को कुचल देने का विफल प्रयास किया था. इश्तराकियत = साम्यवाद. साज़गार = अनुकूल, लाभदायक.

रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

धरती की करवट

तोड़ा धरती का सन्नाटा
किसने ? हम मज़दूरों ने
डंका बजा दिया आदम का
किसने ? हम मज़दूरों ने

दुनिया की अंधी नगरी में
जगमग दीप जलाया किसने ?
जग में रंगा रंग चमाचम ?
यह बाज़ार सजाया किसने

ओट में छिपी हुई तहज़ीबों
का घूँघट सरकाया किसने ?
शरमीली तक़दीर की देवी
का आँचल ढलकाया किसने ?

काम चोर सपनों की काया
में शोला भड़काया किसने ?
बदन चोर इस प्रकृति कामिनी
का सीना धड़काया किसने ?

परत परत को इस धरती के
साथी, खोल दिया है किसने ?
छिपे दफ़ीनों पर क़ुदरत के
धावा बोल दिया है किसने ?

जीवन के समुद्र मंथन में
हमने भंवर क्या डाले हैं
भव सागर से इन हाथों ने
क्या क्या रतन निकाले हैं

वन उपवन थे, हर काँटे से
हंसता फूल खिलाया किसने ?
पत्थर के पथरीले दिल को
तप तप कर पिघलाया किसने ?

इस ऊसर बंजर धरती पर
धन का ढेर लगाया किसने ?
इस भूकी प्यासी दुनिया में
हुन पर हुन बरसाया किसने ?

हर आफ़त से हर मुशकिल से
मज़दूरों की जोड़ रही है
उलटी पलटी आड़ी टेढ़ी
तक़दीरों से होड़ रही है

क्या ये वही दुनिया है साथी
कल जो फटे हाल में फिरती थी ?
क्या ये वही बेचारी है जो
बार बार उठ कर गिरती थी ?

साथी बोल, लहू खौला कर
जीवन रूप रचाया किसने ?
इस नंगी उजड़ी दुनिया को
सज कर दुल्हन बनाया किसने ?

नभचुम्बी शिखरों पर साथी
हम बेखटके चढ़ जाते थे
जहाँ मौत जाते हुए झिझके
ताल ठोंक कर बढ़ आते थे

आकाशों के पातालों के
दिल का चोर निकाला किसने ?
ख़ाली था, भर कर छलकाया
इस जीवन का प्याला किसने ?

अपनी कमर के बूते से हम
पेंग चढ़ाते हैं जीवन की
दो झटकों में हिला कर रख दें
साथी चूलें इन्द्रासन की

सरकश पंचभूत का गट्ठा
हमने झटक के तोड़ दिया है
जिस क़िस्मत की मार ग़ज़ब थी
उसका पंजा मोड़ दिया है

दह की हर तख़रीबी क़ूवत*
को साँचे में ढाल लिया है
क़ुदरत के चैलेंज का हमने
कल्ला तोड़ जवाब दिया है

ख़ून पसीने के हिलोर में
तदबीरें मुंह देख रही हैं
इस लहराते आईने में
तक़दीरें मुंह देख रही हैं

* दुनिया की हर एक विनाशकारी शक्ति.

अपने कस बल से सीनों में
तूफ़ानों को बन्द किया है
सधे हुए सौ सौ हाथों से
भूचालों को थाम लिया है

लाख जतन से जीवन खेती
मुरझाने से रोका किसने ?
सूरज की इस अग्नि गेंद को
किसने उछाला ? लोका किसने ?

कई बार रहती दुनिया की
आई को हम टाल चुके हैं
कई बार तक़दीरे-जहाँ की
आँखों में आँखें डाल चुके हैं

जब फ़ाक़ों पर फ़ाक़े थे
जब कोई उम्मीद नहीं थी
हमने जहां उंगलियां रख दीं
नबज़ें चलने लगीं दुनिया की

इस अधमरी दलित दुनिया को
अपने लहू से अमर किया
सुन लेना रन बोल उठेगा
मौत को हमने जीत लिया

जिस दम हल्ला बोल दिया है
दरिया, सहरा, काँप उठे हैं
हम से टक्कर लेकर साथी
परबत, सागर, हाँप उठे हैं

चाँद और सूरज की किरनों से
चादर बुन कर रख देते हैं
इसी हथौड़े की ज़रबों से
लोहा धुन कर रख देते हैं

करके बराबर रख देते हैं
ऊबड़ खाबड़ पेच-ओ-ख़म
कड़े कोस नरमा देते हैं
अपने धरती-तोड़ क़दम

ज़रा ठेस लगते ही साथी
नींद की दुनिया जाग उठती है
ठुकरा दें जिस पड़ी शिला को
बन के अहिल्या जाग उठती है

यूं गुदगुदा दिया है हमने
संग का पहलू फड़क रहा है
यूं उकसाया है जड़ता को
पत्थर का दिल धड़क रहा है

जान डाल दी तस्वीरों में
यूं हर ख़त चमकाया हमने
लौ दे उठते हैं वह नुक़्ते
चूम लिया है जिनको क़लम ने

नाम उभरने का न कभी ले
पेच-ओ-ख़म में निगाह जो डूबे
नक़्क़ाशी के अमर मोजज़े
मीनाकारी के वह अजूबे

ज़रबों = चोटों. संग = पत्थर. ख़त = रेखा. मोजज़े = चमत्कार.

इन हाथों की गुलकारी में
सुबहे बहार सांस लेती है
हमने दबा दी हैं वह आंचें
मिट्टी लौ पर लौ देती है

चोड़ी बुर्जों को जो देखे
शक़्क़ुल-क़मर याद आ जाए
बुतख़ानों के रूप नगर में
सेहरे-सामरी ग़श खा जाए

यूं जगमगा दिया धातों को
हो ठहराव पे चाल का धोका
साफ़ आंखों को हो जाता है
जामिद पर सय्याल का धोका

इन्हीं खुरदरे हाथों का जस है
या सन्नाई बोल उठी है
देख ज़रा बच्चों के खिलौने
साथी, मिट्टी बोल उठी है

बेल और बूटों के पर्दे में
हमने क्या क्या काम किये हैं
मुंह बन्धी कलियों की गिरहों में
हमने शोले बांध दिये हैं

शक़्क़ुल-क़मर = मुहम्मद साहब ने एक बार इशारे से चाँद के दो टुकड़े कर दिये थे. सेहरे सामरी = जादूगर का जादू. जामिद = जड़. सैयाल = तरल. सन्नाई = शिल्पि कला.

महरमे आबे-रवां—छनती है*
सात तहों से बदन की ज्योत
पर्दे पर्दे में रह रह कर
जैसे जागे मन की ज्योत

बारह अब रङ्ग सोलह सिंगार
गोकुल की राधा सजती है
इस दुनिया के बृन्दाबन में
किसकी बंसी बजती है

कोख उजड़ जाए धरती की
फूट जाय मानव का भाग
याद रहे हम उठ जाएँ तो
लुट जाए दुनिया का सुहाग

हाथ हमारा ही घर घर में
लेके चरागे-शाम आया है
बुनियादों से रहा रहा
ख़ून हमारा काम आया है

कड़ी चटानों के, तेशे से
हमने सीने फाड़ दिये हैं
चार खूँट रहती दुनिया में
हमने झंडे गाड़ दिये हैं

*शहज़ादी ज़ैबुन्निसा औरंगज़ेब के दरबार में ढाका का आबे रवां सात तह करके पहन कर आई थी तब भी औरंगज़ेब ने कहा था—"बेटी तुम नंगी हो."

इस धरती को छूकर हमने
चाँद सितारों को छेड़ा है
करके बसर काँटों पर साथी
हमने बहारों को छेड़ा है

अकसर इस धरती की छीटें
देव लोक पर पड़ जाती हैं
आज इसी दुनिया की आँखें
इन्द्रपुरी से लड़ जाती हैं

अपने इरादों की उठान में
रूहे-तमद्दुन की बरनाई*
इन्हीं हथौड़ों के सरगम में
**तारीख़ों ने ली अँगड़ाई

मुहिंनजदाड़ो और हड़प्पा
लाल क़िला और ताज महल
देख यलोरा और अजन्ता
कपिलवस्तु का राज महल

रूम, यूनान की वह फ़नकारी※
मिस्र देश के वह अहराम
क़ुस्तुनतुनिया के कंगूरे
क़स्रे कै, क़स्रे बहराम†

*सभ्यता की आत्मा का जवान होना.

**इतिहासों.

※कलाकारी.

†चक्रवर्ती राजा केकाउस और शाह बहराम के राज महल.

काशी, दिल्ली, इलियम, पीसा‡
के वह धौरहरे मीनार
उज्जैन और शीराज़ और ग़ज़नी
अल हमरा के दरो दीवार

नीले सपनों की झिलमिल में§
एटलांटिस का वह जल—सेज
जुग जुगान्तर के विर्से को
पीढ़ी पीढ़ी दिया सहेज

मारीशस, कीनिया, टंगानिका
लंका, बन्का, सिंगापूर
यह किसने लहलहा दिया है
जल थल को नज़दीक और दूर

झलक रहा है नगर मास्को
नव युग का वह जरोसलम
वह जादू निर्मान कला के
लेनिनग्राड और नीपरडैम*

भूमंडल पर जुग का जुग से
रिश्ता नाता जोड़ आए हैं
क़दम क़दम पर बस दुनिया में
अपनी निशानी छोड़ आए हैं

‡ पीसा नाम का नगर इटली में है जहाँ का तिरछा मीनार मशहूर है.

§ कहा जाता है कि अब से कई हज़ार बरस पहले इटली में रूम सागर से के तट पर एटलांटिस नामी एक बहुत बड़ा नगर बसा हुआ था, जो अचानक रूम सागर में डूब गया.

सहरा को जो चमन बना दें
ऐसे दीवाने कम होंगे
आँख उठा कर हद्दे नज़र तक
देखोगे तो हमीं हम होंगे

"पत्ता पत्ता, बूटा बूटा
हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल ही न जाने
बाग़ तो सारा जाने है"‡

घन घन घन अनगिनत मशीनों
के पहियों का चक्कर खाना
यह घड़ घड़ घड़, यह ज़ीरो बम*
सय्यारों† का मिल कर गाना

दहड़ दहड़ जलते फ़रनेस से
सूरज-मंडल झपक गया है
अन्धकार के सीने में भी
अकसर कौंदा लपक गया है

लाख करवटें लेता शोला
बज्र को भी पिघला देता है
ब्वायलर हौंक रहा है गोया
ज्वालामुखी सांसें लेता है

---

‡ यह लाइनें महा कवि 'मीर' की हैं.
* रूस में नेपर नदी के बांध पर पानी का सब से बड़ा ख़ज़ाना.
* ज़ीरो बम=ताल सम.
† सय्यारों—नक्षत्रों.

बरसाती हैं फूल अंजन के
लाल अंगारों की बौछारें
सुनो खनकते कल पुर्ज़ों में
सौते-सरमदी की झनकारें ‡

यह मशीन की गड़गड़ाहटें
धरती की छाती हिल जाय
धुंआँ चिमनियों से उठता है
गत पर जैसे नाग लहराय

जीवन की काली रातों का
धरती जहाँ पता देती है
गाती हुई मशीनों की लय
वहाँ चराग़ जला देती है

रेलों की घन गरज, जहाज़ों
का वह सागर-फाड़ बढ़ाव
साफ़ मण्डलाकार फ़ज़ा में
तैय्यारों का निडर चढ़ाव*

नदियों का मुंह मोड़ दिया है
वीराना लहराता है
रेगिस्तानों में अब पानी
गगन खेलता जाता है

मज़दूरों के करामात हैं
मज़दूरों के पस्त-ओ-बलन्द
किस करवट से चन्द्रलोक पर
फेंकी है बेलाग कमन्द

‡ सौते सरमदी = स्वर्गीय संगीत. * फ़ज़ा = वायुमण्डल. तैयारों = जहाज़ों.

कर्मयोग की महाशक्ति को
हमने अपने साथ लिया है
इस जीवन के शेष नाग को
इन हाथों ने नाथ लिया है

हम दुनिया के चलाने वाले
और हमीं पामाल, यह क्या है ?
हम दुनिया को बचाने वाले
और इतने बदहाल, यह क्या है ?

हमको भूका रख कर हमसे
धन कुबेर का काम लिया है
अपनी दशा सोच कर अकसर
हमने कलेजा थाम लिया है

साथी मरता क्या नहीं करता
किस किस पर इल्ज़ाम धरे
जम जम जिये यह प्यारी दुनिया
लेकिन हम बे मौत मरे

अपने पसीने का जम जाना*
धन, पूँजी, सरमायादरी
सब अपने ही लहू से पले हैं
सेठ, महाजन, राज-अधिकारी

सब अपनी ही घमा घमी है
आए दिन जो माल उड़ते हैं
सब अपनी ही लहर बहर है
अपने लहू से गुलाल उड़ते हैं

* "Capital is congealed labour"—Marx.

हमको निधर्न रख के इन्हों ने
पाट लिये हैं अपने ख़ज़ाने
हमें उजाड़ के इन सेठों ने
सजा लिये अपने काशाने*

बाग़ में बस इनको ज़हरीले
काँटे बोना आता है
इनके अनर्थ को देख देख कर
साथी, रोना आता है.

कैसा अपना देस, अपना घर
साथी अपना बस है उतना
फटे नाखुनों में जितना है
टुकड़ा भारत की मिट्टी का

पानी में यह आग लगा दें
सेठ, महाजन, एक काइयाँ
जंग की घातें सुलह की बातें
धमा चौकड़ी उड़ घाइयाँ

जब जब जंग छिड़ी देशों में
जो भी पड़ी हम पर ही पड़ी
भुस में चिङ्गी देकर साथी
देख जमालो दूर खड़ी.

अरबों के हैं वारे न्यारे
दांव भी हैं दोहरे दोहरे
चालें इनकी बाज़ी इनकी
हम हैं बस शतरंज के मोहरे

*काशाने = बड़े बड़े घर या महल.

यह हमसे इनसाफ़ करेंगे ?
क्या बकते हो ?—राम कहो
इनके बही खाते से हमें क्या
लेना एक न देना दो

यह और उगलें अपना मुनाफ़ा ?
कह सुन कर सब हार गए
नोटों के, सोने चाँदी के
यह तो पहाड़ डकार गए

नर्म भी पड़ के, गर्म भी पड़ के
दुनिया को देते हैं भर्रे
यह जीवन का रथ खींचेंगे ?
राह के अड़ियल, थान के टर्रे

काले रुपयों* से बेखटके
भरते गए यह अपनी तिजोरी
सब भौंचक्के रह जाते थे
करता कौन इनसे बरजोरी

यह सब मर्दुमख़ोर हैं साथी
इनके साथ मुरौवत कैसी
यह दुनिया है इनकी मिलकियत
इस दुनिया की ऐसी तैसी

निपटो अब बिफरी जनता से
करनी धरनी ले कर चाटो
मुट्ठी भर भर के दुनिया में
बोई हवा बवंडर काटो

*Black money.

सङ्गीनों से बन्दूकों से
तुमने किये हज़ारों वार
बारी है अब मज़दूरों की
"इक कचलोहिया आड़ो हमार" (आल्हा)

दबसठ से कब काम चला है
लोहा ही लोहे को काटे
साथी सुना नहीं क्या तूने
सीधे का मुँह कुत्ता चाटे

खेत्यौनों में खड्ग-खम्ब में
सब में व्यापे हम हुशियार
इन्हीं ड्योढ़ियों के खम्बों से
लेंगे हम नरसिंह औतार

बेकारी, भुकमरी, लड़ाई
रिशवत और चोर बाज़ारी
बेबस जनता की यह दुरगत
सबकी जड़ सरमायादारी

ठोकर पर ठोकर खाके भी
अपनी मंज़िल से बेगाने
आँख के अंधे नाम नयनसुख
हमको चले हैं राह बताने

आज बही खाते वालों से
सदियों का लेखा हम लेंगे
आटे दाल का भाव खुलेगा
जिस दम जमा खर्च समझेंगे

लाल, जवाहेर, सोना चाँदी
कोमिंटाँग पर किया निछावर
क्यों न हो ? डालर साम्राज का
नाच रहा था भूत जो सर पर

उस दौलत से अमरीका का
जोबन और सँवारा होता
आज अमरीका एक ज़माने की
आँखों का तारा होता

बैंकों, मिलों, कारख़ानों को
हम जो हाथों में ले लेते
हुन बरसा देते साथी हम
देश को सोने से मढ़ देते

यू. एन. ओ. में यूनेस्को में*
रूस पे दोष लगाते जाओ
करके बेहया तक़रीरें तुम
अपनी झेंप मिटाते जाओ

जापान और पच्छिमी जर्मनी
यूनान, इटली, यूगोसलाविया
कश्मीर और नेपाल और तिब्बत
साउथ कोरिया और मलाया

तोड़ फोड़ में हर्ज नहीं है
कुछ तो करें जब जी ललचाए
चोर अगर चोरी न करे तो
हेराफेरी से भी जाए

* UNESCO.

चीन को मत तसलीम करो
यारों ने ढब क्या क्या सोचे
ठीक तो है, खिसियानी बिल्ली
कुछ न बने तो खम्भा नोचे

अब फ़ारमूसा पर नज़रें हैं
गो यह जगह है निहायत छोटी
लेकिन अब इसको क्या कीजे
भागे भूत की बहुत लंगोटी

चीन से जब निकले तो तुमने
हिन्दी-चीन मे टाँग अड़ाई *
डट गए नए अखाड़े में तुम
और जो यहाँ भी मुंह की खाई ?

मार्शल एड, एटलांटिक-पेक्ट
खाने तड़ पड़ भरते जाओ
इसी तरह दुनिया भर में तुम
गड़बड़, सड़बड़ करते जाओ

वाल स्ट्रीट के सट्टे बाज़ो
कांप जाओगे इस लशकर से
हिटलर, च्यांग के उड़ा दिये सर
जिसने अपनी ठोकर से

जङ्ग से तुमको लाभ हुआ जो
उसको जोड़ो और शरमाओ
कण्ठ में अटकें जीत के दावे
गिनो अगर तुम रूस के घाव ।

* Indo-China.

तुमने हिटलर को शिकस्त दी
कहते शर्म नहीं आती ?
इतने दांत तुम्हारे मुंह में
झूट की आंखें हैं झुक जाती

ज़बरदस्त जर्मन फ़ौजों से
लड़े अकेले तुम या रूस ?
जीते हुए दुशमन को भगाते
बर्लिन पहुँचे तुम या रूस ?

निगल लिये जाने पर किसने
पेट अजगर का फाड़ दिया है ?
सब से पहिले राइचसटाग पर
किसने झंडा गाड़ दिया है ?

आज रूस फुंक जाने पर भी
पनप उठा है चमक उठा है
तुम पर आंच न आई लेकिन
बाग़ तुम्हारा सूख चला है

दुनिया भर बाज़ार है जिसका
एक मंडी हेरा फेरी की
उस अमरीका की यह हालत ?
यह बेकारी, धत तेरी की*

ठंडी लड़ाई आख़िर कब तक
एक दुनिया से रहेगी जारी
अम्न के सच्चे दिलदारों से
बात न की, तुमने झक मारी

---

* इस समय अमरीका में एक करोड़ मज़दूर बेकार हैं.

दुम में रस्सा बांध चुके हैं
ठोकर देंगे, धक्का देंगे
उसी घड़ी हम दम लेंगे जब
चोर को घर तक पहुंचा देंगे

अब क्यों देर लगायें साथी
अब तो कमर दुश्मन की ख़म है
आधी दुनिया जीत चुके हैं
अब तो मंज़िल चार क़दम है

दुनिया नई बसायेंगे हम
सुन्दर साज सजा देंगे
धन्ना सेठों के महलों की
ईंट से ईंट बजा देंगे

दुनिया हाथ नहीं आती है
दुनिया ले ली जाती है
क़िस्मत नहीं बदलती साथी
क़िस्मत बदली जाती है

मज़दूरों की दुनिया जागी
कटते कटते रात कटी
वह आकाश कलस हिलते हैं
धरती ने करवट बदली

दुनिया जिसे "आज" कहती है
संगम कई जुगों का है
बीता हुआ "कल" औरों का था
आने वाला "कल" अपना है

सर्वोदय के सुख सपने में
कौन पुकार रहा है साथी ?
जीवन सागर नई दिशा में
ठाठें मार रहा साथी

कोई दिन की बात है साथी
मज़दूर अब मजबूर नहीं है
जब हो ज़मीं पर अपनी ख़ुदाई
साथी वह दिन दूर नहीं है

[नई दुनिया]

रूस, चीन की कम्पित किरनें
नवप्रभात की आभा लाईं
नवजुग का संदेशा लाईं

उत्तर, दक्खिन, पूरब, पच्छिम
आगे, पीछे, ऊपर, नीचे
देश देश में दुनिया भर में
तोड़ रही है दम तारीकी
सुर्ख़ सवेरा होने को है

भारत के आकाश पे साथी
उदयाचल की ओट से साथी
वह रक्तिम पौ फूट रही है

अंगड़ाई तोड़ता एशिया
बंद आंखें मलता अफ़रीक़ा
दमन दलित हबशी अमरीका
गहरी नींद से चौंक उठे हैं

देश देश में महा क्रान्ति की
रनचंडी हुंकार रही है
सौ बल खाती हुई कुचल कर
या नागिन फुफकार रही है

कारीगर, मज़दूर, किसान
कड़ियल और बिगड़ैल जवान
काँधे से काँधा जोड़ेंगे
दुनिया पर धावा बोलेंगे

धरती का तख़्ता उलटेंगे
दुनिया में सर्वोदय होगा
नया समाज आंखें खोलेगा
नई सभ्यता क़ायम होगी

ज़र्रा ज़र्रा जाग उठेगा
क़तरा क़तरा जाग उठेगा
पत्ता पत्ता जाग उठेगा
बूटा बूटा जाग उठेगा

कोना कोना जाग उठेगा
चप्पा चप्पा जाग उठेगा
तप्पा तप्पा जाग उठेगा
क़स्बा क़स्बा जाग उठेगा

सूबा सूबा जाग उठेगा
दरिया दरिया जाग उठेगा
सहरा सहरा जाग उठेगा
जीवन सपना जाग उठेगा।

सैयद मुत्तलबी

२६ जनवरी

(इसी तारीख को हम आज़ादी से पहले स्वतंत्रता दिवस मनाते थे और इसी तारीख को नव विधान लागू हुआ और भारत स्वतंत्र जनराज बना. यह सब होते हुए भी देश की जो असली हालत है इस कविता में उसकी सच्ची तसवीर खींची गई है—सम्पादक]

हैं ज़ख्म वही अंगूर वही रिसता है अभी नासूर वही
बरसात की वह घंघोर घटाएँ, जाड़ों की तनहा रातें
जेल की वहशी दीवारें, मायूस अज़ीज़ों की यादें
अग़ियार के वह सब जोर-ओ-सितम, वह रंजो महन वह फ़रियादें
ए यौमे-मुक़द्दस तेरी क़सम, भूला नहीं मैं उन यादों को
हैं ज़ख्म वही, अंगूर वही, रिसता है अभी नासूर वही
और भूल सके कोई कैसे, वह दर्द भरी बिपता सारी
कितनी जानें भेंट चढ़ीं, जब मुल्क ने आज़ादी पाई
आई वो किसी की महफ़िल में पर हमको झलक कब दिखलाई
आज़ादी मिली नव्वाबों को, राजाओं को, शहज़ादों को
हैं ज़ख्म वही, अंगूर वही रिसता है अभी नासूर वही

यौमे मुक़द्दस = पवित्र दिवस.

आज़ाद हुए हैं मिल मालिक, आज़ाद हुए धनवान सभी
आज़ाद हुए सारे टोडी दुखिया हैं मगर इन्सान सभी
मज़दूर की लूट है उतनी ही, हैं उसके लिये जजमान सभी
जब जेल वही मक़तल भी वही, फिर कोसिये किन जल्लादों को

हैं ज़ख़्म वही, अंगूर वही, रिसता है अभी नासूर वही

ए रावी के जल की धारा, हो याद तुझे वो नज़्ज़ारा
वो जोश से झंडा लहराना, जनता की गरज और जयकारा
वो अहद वो पैमाँ और वो क़सम, अपना है अभी वो ही नारा
जब सैद अभी तक है जनता, तो भूलिये क्यों सैयादों को

हैं ज़ख़्म वही, अंगूर वही, रिसता है अभी नासूर वही

टोडी = ख़ुशामदी, ग़ुलाम. मक़तल = जहाँ लोग क़त्ल किये जायँ.